देशभक्ति के गीत

(ब्रिटिश राज द्वारा प्रतिबंधित साहित्य से)

राष्ट्रीय अभिलेखागार
नई दिल्ली

देशभक्ति के गीत

(ब्रिटिश राज द्वारा प्रतिबंधित साहित्य से)

राष्ट्रीय अभिलेखागार
नई दिल्ली

राज्य मंत्री
कार्मिक और प्रशिक्षण, प्रशासनिक सुधार
और लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय
और संस्कृति विभाग
भारत
नई दिल्ली–110001

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि राष्ट्रीय अभिलेखागार अपने पुस्तकालय में सुरक्षित दुर्लभ रचनाओं में से कुछ चुने हुए देशभक्ति के गीतों का एक संकलन प्रकाशित कर रहा है जिन पर ब्रिटिश सरकार ने उनके छपते ही प्रतिबन्ध लगा दिया था। वस्तुतः यह समय की मांग भी है कि देश की नई पीढ़ी को स्वतन्त्रता संग्राम के समय की देशभक्ति की रचनाओं से अवगत कराया जाय ताकि इन प्रेरणादायक देशभक्ति के गीतों से देशवासियों को एक नई चेतना मिल सके और राष्ट्र का सम्पूर्ण जन-मानस देश की एकता तथा अखण्डता बनाए रखने के लिए कृतसंकल्प हो सके। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास भी है कि इस संकलन से नई पीढ़ी को एक नया स्वर मिल सकेगा और वे देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत हो सकेंगे।

मैं राष्ट्रीय अभिलेखागार के इस सामयिक प्रयास की सफलता की कामना करता हूं और जिन रचनाकारों की कृतियां इसमें दी गई हैं उनकी भावनाओं का आदर करते हुए उन्हें साधुवाद देता हूं।

के पी सिंह देव

नई दिल्ली-1

के० पी० सिंह देव

प्रस्तावना

किसी भी युग का साहित्य तत्कालीन समाज का दर्पण होता है । इसी भावना को समक्ष रखकर, स्वतन्त्रता संग्राम के समय लिखी गई कुछ ओजस्वी कविताओं का चयन कर उन्हें इस संकलन में प्रस्तुत किया गया है । जन-मानस को आन्दोलित तथा उत्प्रेरित करने के महान उद्देश्य से लिखी गयी इन प्रेरणादायक रचनाओं के छपते ही ब्रिटिश सरकार ने इन पर प्रतिबन्ध लगा दिया और ये न केवल ब्रिटिश साम्राज्य की धरोहर बनकर रह गयीं अपितु अभिलेखागार की चारदीवारी में ही लुप्त हो गयीं । चोरी-छिपे जो जनता तक पहुंच पायीं उन्हें स्वतन्त्रता सेनानियों का अपेक्षित स्वर मिला लेकिन इनके गाने पर उन्हें कारागार की यातना सहनी पड़ी।

भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार में प्रतिबंधित साहित्य संग्रह में सुरक्षित अनेक लेख, गीत इत्यादि उपलब्ध हैं । यह सामग्री हमारे स्वतन्त्रता संग्राम की सूचक हीं नहीं वरन् आज यह हमारे राष्ट्र का गौरव बन गई है । अतः इस महत्वपूर्ण सामग्री की एक झांकी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । इस आशा से कि हमारे अतीत के इन गरिमामय गीतों से देशवासियों को एक नया स्वर मिले और जन-मानस में राष्ट्र के प्रति नया उत्साह पैदा हो, इन गीतों को इस संकलन में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

मैं विशेष रूप से श्री रणबीर किशोर, प्रति संस्कार व संरक्षण प्रधान, श्री कपिलदेव त्रिपाठी, हिन्दी अधिकारी, श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, कनिष्ठ अनुवादक और श्री नरेश चन्द्र, हिन्दी आशुलिपिक आदि का आभारी हूं जिनके अथक प्रयास तथा कठिन परिश्रम से यह संकलन तैयार हो सका है ।

मुझे पूरी आशा है कि पाठकगण इस संकलन की उपादेयता को हृदय से स्वीकार करेंगे और यह संकलन अपने अपेक्षित लक्ष्य की प्राप्ति में उपयोगी सिद्ध होगा।

डा० राजेश कुमार परती
अभिलख निदेशक
भारत सरकार

नई दिल्ली,
31 मई, 1985

विषय सूची

क्र०सं०	शीर्षक	पृष्ठ
1.	सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है	1
2.	शहीदों के खूं का असर	2
3.	आजादी की देवी	3
4.	काकोरी शहीद रामप्रसाद बिस्मिल	7
5.	हिन्दोस्तां हमारा	8
6.	वन्दना	9
7.	करो स्वदेशी से प्रेम अब तुम, जो चाहते हो स्वराज लेना	10
8.	जवानों उठो	11
9.	जब तक स्वराज हिंद में लाया न जायगा	12
10.	राष्ट्रीय झण्डा	13
11.	बलिदान आह्वान	14
12.	मिटा देंगे हुकूमत को हम ऐसा करके छोड़ेंगे	15
13.	मन तरंग	16
14.	माता की पुकार	17
15.	प्यारा हिन्दोस्तां हमारा	18
16.	सत्य वाणी	19
17.	उम्मीद की झलक	20
18.	खूं का असर देख लेना	21
19.	राष्ट्रपति जवाहरलाल	22
20.	विदा करो मां जाते हैं हम विजय ध्वजा फहराने को आज	23
21.	गांधी महिमा	24
22.	पूर्ण स्वतन्त्रता	25
23.	शहीद भगत सिंह	26
24.	भारत माता के सच्चे सुपुत्र की प्रतिज्ञा	27

क्र०सं०	शीर्षक	पृष्ठ
25.	नहीं रह सकता	28
26.	धर्म	29
27.	क्या चाहते हैं ?	30
28.	भारत वीरो उठो	31
29.	ज़ालिम से	32
30.	कैद हस्ती से कोई आजाद फिर होने को है	33
31.	इन गांधी टोपीवालों ने	34
32.	है वतन के वास्ते अक्सीर बन्देमातरम्	35
33.	प्रार्थना	36
34.	वार की	37
35.	हम करेंगे या मरेंगे	38
36.	आज़ाद करो	41
37.	भारत भक्त	42
38.	आज़ादी या मौत	43
39.	गुलामी से हमको छुड़ायेगा खद्दर	45
40.	स्वदेश प्रेम	47
41.	चर्खे से स्वराज्य	48
42.	मुबारिकबाद	49
43.	आज़ादी या मौत	50
44.	युवकों की प्रतिज्ञा	51
45.	देश के हित जान जावे, तो भी घबड़ाना नहीं	53
46.	बृटिश सरकार को भाई, जरूरत अब कफन की है	54
47.	ज़ालिम तेरी तलवार के डर से न डरेंगे	55
48.	खुदाया मेहर की नज़रों से गर इरशाद तेरा है	56
49.	वक्त बिताने को	57
50.	देश रक्षा के लिये जान का जाना अच्छा	58

क्र०सं०	शीर्षक	पृष्ठ
51.	पंचरंगी चोला	59
52.	फिर क्या चाहते हैं ?	60
53.	कट कट के मरना होगा	61
54.	रसिया	62
55.	देशभक्त का प्रलाप	63
56.	भारत का भार उतारेंगे	64
57.	भारत का कल्याण	65
58.	आह् वान	66
59.	भारत है जाँ हमारी	67
60.	ओउम् नाम का प्याला	68
61.	उठो नौजवानो	69
62.	नौजवानों की तमन्ना	70
63.	चाहिए	71
64.	पदवीवालों ने	72
65.	रणभेरी	73
66.	हुंकार	74
67.	उठो जवानो	76
68.	छोड़ दे	77
69.	लायेगा रंग यह दिन, खूने रवां हमारा	78
70.	प्रतिज्ञा	79
71.	वतन के वास्ते	80
72.	भारत के रहनेवालो	81
73.	बेकशों का ईश्वर	82
74.	भगत सिंह	83
75.	काकोरी के शहीद	84
76.	जेल यात्रा	85

क्र०सं०	शीर्षक	पृष्ठ
77.	डूबती है चन्द दिनों में आबरू बेहवार की	86
78.	बांध ले बिस्तर फ़िरंगी राज अब जाने को है	87
79.	नमक मुल्क का अदा कर दे	88
80.	भारत के लाल दोनों	89
81.	तुम राम कहो वो रहीम कहें दोनों की गरज अल्लाह से है	90
82.	इन शेरों के खूं का असर देख लेना	91
83.	स्वाधीनता की पुकार	92
84.	मेरी आरजू	93
85.	दमन का दिवाला	94
86.	जै जै प्यारी भारत माता जननी नाम तुम्हारा है	95
87.	विदेशी वस्त्रों की विदा	96
88.	बहिष्कार कर दो	97
89.	देशभक्त वीर की गर्जना	98
90.	भारत का बैज	99
91.	मर जायेंगे	100
92.	ख्याल	101
93.	निहत्थों पर	102
94.	आज़ादी का दौर	103
95.	रक्षा बन्धन	104
96.	वीर बालिकायें	105
97.	वतन पर मर मिटें शादां बशर गर हो तो ऐसा हो	106
98.	स्वराज्य लेंगे	107
99.	आजादी के दीवानों ने	108
100.	देशभक्त की आरजू	109
101.	जेल भर दो	110
102.	देख लेना	111

क्र०सं०	शीर्षक	पृष्ठ
103.	चेतावनी	112
104.	स्वराज्य का अर्थ	113
105.	विजय होगी	114
106.	नारियों का प्रोत्साहन	115
107.	विनय	117
108.	वीर गजना	118
109.	गुलामी से जकड़ा हमारा वतन है	119
110.	हो गये तैयार अब कुछ कर दिखाने के लिये	120
111.	जगदीश ! यह विनय है जब प्राण तन से निकलें	121
112.	खादी का बाना पहन लिया	123
113.	करो कुछ देश-हित भ्राता	124
114.	काम करने का समय है काम करना चाहिए	125
115.	जियें तो बदन पर स्वदेशी वसन हों	126
116.	हिमादि तुंग श्रृंग से	127
117.	हिंदियों को संदेश	128
118.	झण्डा झुकने न दो	129
119.	देश की लाज	130
120.	मेल करना सीख लो	131
121.	प्रतिज्ञा	132
122.	लावनी रंगत	133
123.	वतन एक ही है	135
124.	एक शैदाये वतन के आदर्श विचार	136
125.	नौजवानों को उपदेश	137
126.	बन्देमातरम्	138
127.	वीर बन कर के झंडा उठा लो, लाज भारत की मिल कर बचा लो	139
128.	बन्देमातरम्	140

क्र०सं०	शीर्षक	पृष्ठ
129.	देशभक्त वीर की गर्जना	141
130.	सफल जीवन	142
131.	राष्ट्रपताका	143
132.	बलिदान	144
133.	हुब्बे वतन	146
134.	हमारा उद्देश्य	147
135.	भगत सिंह किधर गया	148
136.	कौमी दर्द का बीमार	150
137.	सत्याग्रह का बिगुल	151
138.	मोहन और मोहनदास	152
139.	हिन्दू-मुस्लिम एकता	153
140.	फाँसी के तख़ते पर देशभक्तों के मनोभाव	154
141.	झंडा महिमा	155

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है ।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुये कातिल में है ॥

राहरवे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में ।
लज्जते सहरा नवरदी दूरिये मंजिल में है ॥

वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आस्मां ।
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है ॥

आके मकतल में यह कातिल कह रहा है बार बार ।
क्या तम्नाये शहादत भी किसी के दिल में है ।

ऐ शहीदे मुल्को मिल्लत तेरे कदमों पर निसार ।
तेरी कुरबानी का चर्चा गैर की महफिल में है ।

अब न अगले वलवले हैं और न अरमाणों की भीड़ ।
एक मिट जाने की हसरत अब दिले बिस्मिल है ।

"अक्सीर सियालकोटी" द्वारा संग्रहीत, ऐंग्लो ओरियन्टल प्रेस, लाहौर से मुद्रित, "स्वराज्य की गूंज" पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या : 829-830 ।

शहीदों के खूं का असर

शहीदों के खूं का असर देख लेना ।
मिटायेंगे जालिम का घर देख लेना ॥

किसी के इशारे के हम मुन्तजिर हैं ।
बहा देंगे खूं की नहर देख लेना ॥

झुकादेंगे गरदन को हम जेर खंजर ।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना ॥

जो खुदगर्ज गोली चलाते हैं हमपर ।
तो कदमों में उनका ही सर देख लेना ॥

जो नक्श हमने खींचा है खूने जिगर से ।
वह होगा कभी बारबर देख लेना ॥

किनारे पे आये भंवर से वह किश्ती ।
वह आयेगी एक दिन लहर देख लेना ॥

बलायें ये जायेंगी खुद सर निगूं हो ।
नहीं होगी इनकी गुजर देख लेना ॥

खुजद ही हुआ हिन्द आजाद अपना ।
छपेगी ये एक दिन खबर देख लेना ॥

"आर०एन० शर्मा" द्वारा संग्रहीत तथा द्वादश श्रेणी प्रेस, दिल्ली से मुद्रित, "स्वराज्य का तूफान" पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।
अवाप्ति संख्या : 852(—)854 ।

आज़ादी की देवी

बुन्देले हर बोलो के मुख हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी ॥
सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने, भृकुटी तानी थी ।
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी ॥
गुमी हुई आज़ादी की क़ीमत सबने पहचानी थी ।
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी ॥
चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी ॥ बु० ।

कानपुर के नाना की मुंह बोली बहिन "छबीली" थी ।
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह सन्तान अकेली थी ॥
नाना के संग पढ़ती थी वह नाना के संग खेली थी ।
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी ॥
वीर शिवाजी की गाथायें उसको याद जबानी थी ॥ बु० ।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार ।
देख मराठ पुलकित होते उसके तलवारों के वार ॥
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार ।
सैन्य घेरना दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवार ॥
महाराष्ट्र कुल देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी ॥ बु० ।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झांसी में ।
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झांसी में ॥
राज महल में बजी बधाई खुशियां छाई झांसी में ।
सुभट-बुन्देलों की विरदावलि सो वह आई झांसी में ॥
चित्रा ने अर्जुन को पाया शिव से मिली भवानी थी ॥ बु० ।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियाली छाई ।
किन्तु काल-गति चुपके चुपके काली घटा घेर लाई ॥
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियां कब भाईं ।
रानी विधवा हुई हाय ! विधि को भी नहीं दया आई ॥
निःसन्तान मरे राजा जी रानी शोक समानी थी ॥ बु० ।

बुझा दीप झांसी का तब डलहौजी मन में हरषाया ।
राज्य हड़प करने का उसने वह अवसर अच्छा पाया ।।
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झण्डा फहराया ।
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झांसी आया ।।
अश्रु-पूर्ण रानी ने देखा झांसी हुई विरानी थी ।। बु० ।

अनुनय विनय नहीं सुनता है, बिकट शासकों की माया ।
व्यापारी बन दया चाहता था यह जब भारत आया ।।
डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया ।
राजा और नवाबों को भी उसने पैरों ठुकराया ।।
रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महारानी थी ।। बु० ।

छीनी राजधानी देहली की लखनऊ छीना बातों बात ।
कद पेशवा था बिठुर में हुआ नागपुर का भी घात ।।
उदेपुर, तंजौर, सितारा, करनाटक की कौन बिसात ।
जबकि सिंध, पंजाब ब्रह्मपर अभी हुआ था बज्र निपात ।।
बंगाले, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी ।। बु० ।

रानी रोई रनिवासों में बेग़म ग़म से थी बेजार,
उनके गहने कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाजार ।
सरे आम नीलाम छापते थे अंगरेजो के अखबार,
नागपुर के जेवर ले लो लखनऊ के नौलख हार ।
यों परदे की इज्जत परदेशी के हाथ बिकानी थी ।। बु० ।

कुटियों में थी विषम वेदना महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था अपने पुरुषों का अभिमान ।
नाना धुन्दूपन्त पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रणचण्डी का कर दिया प्रकट आव्हान ।।
हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी ।। बु० ।

महलों ने दी आग झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतन्त्रता की चिनगारी अन्तरतम से आई थी ।
झांसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थीं,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी ।
जबलपुर, कोल्हापुर में भी कुछ हलचल उकसानी थी ।। बु० ।।

इस स्वतन्त्रता महायज्ञ में कई वीर बरू आये काम,
नाना धुन्दूपन्त, तांतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम ।
अहमदशाह मौलवी ठाकुर कुंवर सिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम ॥
लेकिन आज जुर्म कहलाती उनकी जो कुर्बानी थी ॥ बु० ।

इनकी गाथा छोड़ चले हम झांसी के मैदानों में,
जहां खड़ी है लक्ष्मी बाई मर्द बनी मर्दानों में ।
लेफ्टिनेन्ट बौकर आ पहुंचा आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली हुआ द्वन्द असमानों में ॥
जखमी होकर बौकर भागा उसे अजब हैरानी थी ॥ बु० ।

रानी चढ़ी कालपी आई कर सौ मील निरन्तर पार,
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर गया स्वर्ग तत्काल सिधार ।
यमुना तट पर अंग्रेजों ने फिर खाई रानी से हार,
बिजयी रानी आगे चलदी किया ग्वालियर पर अधिकार ॥
अंग्रेजों के मित्र सेंधिया ने छोड़ी रजधानी थी ॥ बु० ।

विजय मिली पर अंग्रेजी की फिर सेना घिर आई थी,
अब के जनरल स्मिथ सन्मुख था उसने मंह की खाई थी ।
काना और मन्दिरा सखियां रानी के संग आई थीं,
युद्धक्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी ॥
पर पीछे ह्यूरोज आ गया, हाय घिरी अब रानी थी ॥ बुं० ।

तौ भी रानी मारकाट कर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार ।
घोड़ा अड़ा नया घोड़ा था, इतने में आ गये सवार,
रानी एक शत्रु बहुतेरे होने लगे वार पर वार ॥
घायल होकर गिरी सिंहनी उसे वीरगति पानी थी ॥ बुं० ।

1 D of A/85—2

रानी गई सिधार! चिता अब उसकी दिव्य संवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी।
अभी उम्र कुल तेइस की थी मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतन्त्रता नारी थी॥
दिखागई पथ सिखागई हमको जो सीख सिखानी थी॥ बुं०॥

जाओ रानी याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतन्त्रता अविनाशी।
होवे चुप इतिहास लगे सच्चाई को चाहे फांसी,
हो मुदमाती विजय मिटा दे गोलों से चाहे झांसी॥
तेरा स्मारक तू ही होगी, तु ही खुद अमर सिशानी थी॥ बुं०।

"मोहर चन्द (मस्त)" द्वारा सम्पादित तथा द्वादश श्रेणी प्रेस से मुद्रित, "फौजी ऐलान" पुस्तक से।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य।

अवाप्ति संख्या : 880।

काकोरी शहीद रामप्रसाद बिस्मिल

भारत न रह सकेगा हरगिज गुलामख़ाना ।
आज़ाद होगा होगा आता है वह ज़माना ॥

ख़ूं खोलने लगा है हिन्दोस्तानियों का ।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना ॥

कौमी तिरंगे झण्डे पर जां निसार अपनी ।
हिन्दू मसीह मुसलिम गाते हैं यह तराना ॥

अब भेड़ और बकरी बन कर न हम रहेंगे ।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना ॥

परवाह न अब किसे है जेल और दमन की त्यारी ।
इक खेल हो रहा है फांसी पै झूल जाना ॥

भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे ।
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना ॥

"मोहर चन्द (मस्त)" द्वारा सम्पादित तथा द्वादश श्रेणी प्रेस से मुद्रित, "फौजी ऐलान" पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या : 880 ।

हिन्दोस्तां हमारा

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा ।
हम बुलबुले हैं उसकी वह गुलिस्तां हमारा ।

गुर्बत में हों अगर हम रहता है दिल वतन में ।
समझो हमें वहीं पर दिल हो जहां हमारा ।

पर्वत वह सबसे ऊंचा हम साया आसमां का ।
वह संतरी हमारा वह पांस वां हमारा ।

गोदी में खेलती है जिसके हज़ारों नदियां ।
गुलशन है जिनके दम से रश्के जिनां हमारा ।

ऐ आबे रोदे गंगा वह दिन है याद तुझको ।
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा ।

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना ।
हिंदी हैं हम बतन है हिन्दोस्तां हमारा ।

यूनान, मिस्र, रोमा सब मिट गये जहां से ।
अब तक मगर है बाकी नामों निशां हमारा ।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमां हमारा ।

"इकबाल" कोई महरम अपना नहीं जहां में ।
मालूम क्या किसी को दर्दे निहां हमारा ।

"आर० एन० शर्मा" द्वारा संग्रहीत तथा मार्तण्ड प्रेस, दिल्ली से मुद्रित, "भारतमाता के जख्मी लाल" पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य।

अवाप्ति संख्या : 288—293 ।

वन्दना

मुकुट हिमालय शिर पर सोहत, केशर काश्मीर को भाल ।
"भारतमाता", तुमको सुमिरों, बल बुद्धि हमें देउ ततकाल ।।

तिलक, गोखले, विपिन बनर्जी, अइयर, गांधी, राखो लाज ।
नौरोजी, बेसेन्ट, मालवी, पूरन कीजो आल्हा स्वराज ।।

चिन्तामणि, गोकर्ण, घोषवसु, इमाम, जिन्ना, सपरू, लाल ।
राम, नेहरू, आन्डेल सब, मैटो दास्यभाव जंजाल ।।

हार्वीमैन, वाडियो, पोलक, एन्ड्रूज, परांजपे, ढागोर ।
राजा, सिन्हा, खापर्डे भी, कीजे दया हमारी ओर ।।

मन्नन, माधव, पूर्ण मैथली, श्रीधर कंठ विराजो आय ।
त्यों चक्रवस्त त्रिशूल, भार्गव, कनहु सनेही सकल सहाय ।।

ऐसा आल्हा बनै कि जिसमें, होवे होम रूल की धून ।
मुरदों में भी जोश मारने, लगै स्वदेश भक्ति का खून ।।

बिना देश उद्धार किये नहिं, लैवें पल भर भी विश्राम ।
समझे अधिक जान से प्यारा, अपनी मातृभूमि का काम ।।

विघ्नों को वह कभी न देखें, दुख सहने को रहें तयार ।
ईश्वर पर विश्वास रोपके, दिल से भय को देय निकार ।।

"लाला भगवान दास" द्वारा संग्रहीत तथा हिन्दु प्रेस, इटावा से मुद्रित, "स्वराज्य आल्हा" पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य।

अवाप्ति संख्या : 803-804 ।

करो स्वदेशी से प्रेम अब तुम, जो चाहते हो स्वराज लेना

करो स्वदेशी से प्रेम अब तुम, जो चाहते हो स्वराज लेना ।
निशार कर दो स्वदेश पे जां, जो चाहते हो स्वराज लेना ।।

स्वदेशी का है पुरूषन्डा स्वदेश का है तिरंगा झन्डा ।
स्वदेशी से ही सजाओ तन मन, जो चाहते हो स्वराज लेना ।।

स्वदेशी से ही है तन की लज्जिया स्वदेशी से ही धरम की रक्षा ।
स्वदेशी का ही सबक पढ़ो तुम जो चाहते हो स्वराज लेना ।।

स्वदेशी में ही है इतनी शक्ति, विदेशी जिस से सदा हिचकती ।
स्वदेशी के ही बनो हितैषी जो चाहते हो स्वराज लेना ।।

है अर्ज "बन्दा" को हर जबां से व बूढ़े बच्चों और देवियों से ।
कि सच्चे खामिद बनो वतन के जो चाहते हो स्वराज्य लेना ।।

"गंगाराम सिंह" द्वारा संग्रहीत तथा सिंघल प्रिंटिंग वर्क्स, बरेली से मुद्रित, "गरीबों की आह" पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या : 1053 ।

जवानो उठो

जवानों उठो देश की जान, मांगती माता बलिदान ।
सो चुके बहुत, हो चुके वीर, देखते हुये देश की पीर वीर ।।

सजग हो मत हो अधिक अधीर, गुलामी की तोड़ो जंजीर ।
देश का करो आज कल्याण, जवानों उठो देश की जान ।।

देश हित बाधा विघ्न ढकेल, बढ़ो संकट को समझो खेल ।
बनो मत अब इतने बेजार, संभल कर हो जाओ तैयार ।।

जोश से गाओ गौरव गान, जवानों उठो देश की जान ।
बढ़ो अपने को खूब संभाल, तुम्हीं भारतमाता के लाल ।।

छोड़ दो दकियानूसी ख्याल, न नीचा हो भारत का भाल ।
तुम्हीं तो हो उसके अरमान, जवानों उठो देश की जान ।।

चलो वीरों ! अब ठानोठान, करो भारत मां का कल्याण ।
रहे सारी दुनियां में शान, विरोधी भागें लेकर जान ।।

हाथ में ले राष्ट्रीय निशान, जवानों उठो देश की शान ।।

——रतन देवी मिश्र

काशी राम तिवारी द्वारा संग्रहीत तथा यूनियन जॉब प्रेस, इलाहाबाद से मुद्रित, "युवक गर्जना" पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या : 913 ।

जब तक स्वराज हिंद में लाया न जायगा

जब तक स्वराज हिन्द में लाया न जायगा ।
शैतानी हुकूमत को मिटाया न जायगा ।।

हर रोज हो रही है तबाही जो हिन्द में ।
मिट जायेंगे, गर इसको घटाया न जायगा ।।

पैदा करे जो अन्न, वही भूख से मरे ।
यह जुल्म-सितम अब तो उठाया न जायगा ।।

मेहनत करे कोई, कोई लूटे, करे मजे ।
धन अपना इस तरह से लुटाया न जायगा ।।

कानून इस तरह कि तरक्की न हम करें ।
अंधेर इस तरह से मचाया न जायगा ।।

कैसे जलील हो रहे, हम गर मुल्क में ।
पशुओं की तरह ठोकरें खाया न जायगा ।।

हम बावफा हैं कैसे, दिखाया है, बार-बार ।
अब पेट के बल हमको चलाया न जायगा ।।

वादे बहुत किए, न किया एक भी पूरा ।
वादों पै एतबार अब, लाया न जायगा ।।

जख्मी जिगर को चैन हो सकता नहीं तब तक ।
शैतानी हुकूमत को मिटाया न जायगा ।।

खुशहाल न होगा, न तरक्की करेगा मुल्क ।
जब तक स्वराज हिन्द में लाया न जायगा ।।

चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु द्वारा सम्पादित तथा अर्जुन प्रेस, काशी से मुद्रित, "स्वतन्त्र भारत का सिंहनाद" पुस्तक से ।
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।
अवाप्ति संख्या : 837-838 ।

राष्ट्रीय झंडा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊंचा रहे हमारा । टेक

सदा शक्ति बरसानेवाला, प्रेम-सुधा सरसानेवाला ;
वीरों को हरषानेवाला, मातृ-भूमि का तन-मन सारा । झंडा०

स्वतन्त्रता के भीषण रण में, लखकर बढ़े जोश क्षण-क्षण में ;
कांपे शत्रु देखकर मन में, मिट जाए भय-संकट सारा । झंडा०

इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज हम अविचल निश्चय ;
बोलो भारत-माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा । झंडा०

आओ प्यारे वीरो आओ, देश-धर्म पर बलि-बलि जाओ ;
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा । झंडा०

इसकी शान न जाने पाए, चाहे जान भले ही जाए ;
विश्व-विजय करके दिखलाएं, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा । झंडा०

चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु द्वारा संपादित तथा गंगा फाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ से मुद्रित, "राष्ट्रीय डंका" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या : 1679 ।

बलिदान आह्वान

मेरी जां न रहे मेरा सर न रहे, सामान रहे न ये साज रहे ।
फकत हिन्द मेरा आजाद रहे, माता के सर पर ताज रहे ॥

पेशानी में सोहे तिलक जिसकी, औ गोद में गान्धी विराज रहे ।
न ये दाग बदन में सफेद रहे, न तो कोढ़ रहे न ये खाज रहे ॥

मेरे हिन्दु मुसल्मां एक रहें, भाई भाई सा रस्मो रिवाज रहे ।
मेरे वेद पुराण कुरान रहें, मेरी पूजा सन्ध्या नमाज रहे ॥

मेरी टूटी मण्डैया में राज रहे, कोई गैर न दस्तन्दाज रहे ।
मेरी बीन के तार मिले हों, सभी एक भीनीमधुर आवाज रहे ॥

ये किसान मेरे खुश हाल रहें, पूरी हो फसल सुख साज रहे ।
मेरे बच्चे वतन पै निसार रहें, मेरी मां बहिनों में लाज रहे ॥

मेरी गाय र मेरे बैल रहें, घर-घर में भरा नित नाज रहे ।
घी दूध की नदियां बहती रहें, हरसूआनन्द स्वराज्य रहे ॥

"शर्मा" की है चाह खुदा की कसम, मेरे बाद वफात ये याद रहे ।
ाढ़े का कफन हो मुझपे पड़ा, वन्दे मांतरम् अल्फाज रहे ॥

"हुलास वर्मा," प्रेमी, द्वारा संपादित तथा भास्कर प्रेस, देहरादून से मुद्रित, "क्रांति गीतांजलि" पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या : 487—489

मिटा देंगे हुकूमत को हम ऐसा करके छोड़ेंगे

मिटा देंगे हुकूमत को हम ऐसा करके छोड़ेंगे ।
हम अपने मुल्क पर खुद अपना कब्जा करके छोड़ेंगे ।

तू ऐ वादेसबा जाकर यह पंचम जार्ज से कह दे ।
कि हम इंगलैंड वालों को लिफाफा करके छोड़ेंगे ॥

पहनकर कोट और पतलून जो न आपे में अपने थे ।
हम उनको अब मुजस्सिम पायेजाम करके छोड़ेंगे ॥

फिरेंगे दर बदर घर-घर जगाते देश भक्तों को ।
जो मुर्दा दिल हुये हैं उनको जिन्दा करके छोड़ेंगे ॥

गजब की बेड़ियां डाली हैं जो ज़ालिम ने पैरों में ।
उसी झनकार से हम हश्र बरपा करके छोड़ेंगे ॥

न छोड़े जीते जी दुश्मन कभी हम वह काले हैं ।
अगर छोड़ेंगे दुश्मन को तो मुर्दा करके छोड़ेंगे ॥

अजी जो अब मरव्विज होने दो गांधी के चरखे को ।
इसी चरखे से हम दुश्मन को चर्खा करके छोड़ेंगे ॥

"चिरंजी लाल विद्यार्थी" द्वारा संग्रहीत तथा पाठिक एण्ड कम्पनी, दिल्ली से प्रकाशित, "देश का राग" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या : 365--367 ।

मन तरंग

मिटेंगे देश पर अपने यही दिल में समाई है ।
करें आज़ाद भारत को यही एक धुन समाई है ॥

नहीं है ज्ञात क्या उनको कि भारत वीर भूमी है ।
करें बरबाद हम उनको कि जिनसे दुश्मनाई है ॥

कटायेंगे गला बेशक मगर यह ध्यान में रखना ।
मिटेंगे हम मिटा करके शपथ हमने यह खाई है ॥

है क्या शै जेल और फांसी डराते हो हमें जिनसे ।
कटें आदर्श पर तिल तिल न वह भी दुःखदाई है ॥

करो जुल्मों सितम बेशक मगर यह भूल मत जाना ।
नहीं अपमान सह सकते जो भारत के शैदाई हैं ॥

मोहर चन्द्र "मस्त" द्वारा प्रकाशित तथा द्वादश श्रेणी प्रेस, दिल्ली से मुद्रित, "शहीदों का सन्देश" नामक पुस्तक से।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या : 763--765 ।

माता की पुकार

ऐ हिन्द के सपूतों ! कुछ भी तो कर दिखाओ ।
अब भी तजो गुलामी सबको यही सिखाओ ।।

सुनकर हजारों लैक्चर आगे कदम बढ़ाओ ।
कस ही चुके कमर तो फिर पीठ मत दिखाओ ।।

सिर फूट भी चुका हो खाकर पुलिस के डंडे ।
जब होश फिर से आवे झंडे का गीत गाओ ।।

आजाद है जो होना पहला सबक यही है ।
कानून को कुचल कर घर जेल को बनाओ ।।

नंगा तुम्हें बनाया अंग्रेज ने दगा से ।
बारी तुम्हारी आई उनको जरा नचाओ ।।

वह साइमन कमीशन, यह जांच, वह कमेटी ।
सब हैं फरेब, इनसे फिर भी दगा न खाओ ।।

आंखें जो खुल चुकी हों, तुम जाग जो चुके हो ।
तब आंख मूंद कर, बस गांधी को जय मनाओ ।।

खादी पहन रहे हो बे खौफ बन रहे हो ।
हिंसा का दाग काला उस पर न तुम लगाओ ।।

जो जुल्म कर रहे हैं होकर तुम्हारे भाई ।
पिस्तोल देशी उन पर बायकाट की चलाओ ।।

कट जाय सर, न कर दो, यह आखरी कसौटी ।
इसका भी वक्त आया, वीरों ! कदम बढ़ाओ ।।

यती यतनलाल द्वारा प्रकाशित तथा केसरी, प्रेस, आगरा से मुद्रित, "राष्ट्रीय शंखनाद" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या : 681—683 ।

प्यारा हिन्दोस्तां हमारा

बुलबुल हैं हम वतन की, वह गुल्सितां हमारा ।
प्यारे हम उस के, प्यारा हिन्दोसतां हमारा ।।

यह तन हुआ हमारा खाके वतन से पैदा ।
काम आयेगा वतन के, हर उस्तखां हमारा ।।

दिल में वतन की उलफत, सर में वतन का सौदा ।
नामे वतन हो यारब्ब, विरदे जबां हमारा ।।

फसले बहार आये, गर गुलशने वतन में ।
खूने जिगर से सीचें, हर नोजवां हमारा ।।

हिन्दू हो या मुसलमां कह दें मुखालिफों से ।
"हिन्दी हैं हम, वतन है, हिन्दोस्तां हमारा ।।"

गर ईश्वर ने चाहा, तो देखना कि इक दिन ।
उड़ता हिमालिया पर, होगा निशां हमारा ।।

हम अहद कर चुके हैं, मर जायेंगे वतन पर ।
क्या कर सकेगा देखें, दौरे जमां हमारा ।।

मिट जायेंगे वह खुद ही, "हमदम" जहां के हाथों ।
जो चाहते मिटाना, नामो निशां हमारा ।।

"अक्सीर सियालकोटी द्वारा" संग्रहीत, ऐंग्लो ओरियन्टल प्रेस, लाहौर से मुद्रित, "स्वराज्य की गूंज" पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या : 829-830 ।

सत्य बाणी

हमारे खूं से बने हैं गोरे, हमीं को काला बता रहे हैं ।
ये लूट कर मालो जर हमारा, हमीं को जालिम सता रहे हैं ।।

हमारे पैसे से फौज पलटन हमारे पैसे से हैं हकुमतें ।
हमीं से पैसा वसूल करके अगूंलियों पे नचा रहे हैं ।।

जिधर वो चाहे चलावे डंडे जिधर वो चाहे चलावे गोली ।
हिन्द के ये पुलिश वाले प्रजा को नाहक सता रहे हैं ।।

गुलामी से देख हिन्द जकड़ा, बजाया मोहन ने शंख आला ।
जो लाल भारत के सो रहे थे, उन्हें वो अब तो जगा रहे हैं ।।

कुछ भी दिल में रहम तो लाओ, सताना अच्छा न बेकसों को ।
तु क्यों न खाता है खौफ उनका, जो सारी दुनियां चला रहे हैं ।।

जो तुम चलाओगे गन मशीनें, तो हम भी सीना अड़ाय देंगे ।
भगायेंगे हम तुम्हें भी लंदन, ये सत्य वाणी सुना रहे हैं ।।

बनायेंगे हम अनेकों जंगी, अनोखे ये जंग मचा मचा कर ।
निशस्त्र होकर भी "भीम" ऐसा, दे गर्जना कर घुमा रहा है ।।

के० एल० बर्मन द्वारा संग्रहीत तथा लक्ष्मी प्रेस बनारस से मुद्रित, "राष्ट्रीय तरंग" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 692 ।

अरूजे कामयाबी पर कभी हिन्दोस्तां होगा ।
रिहा सैयाद के हाथों से अपना आशतां होगा ।।

चखायेंगे मजा बरबादिये गुलशन का गुलची को ।
बहार आजायेगी उस दिन जब अपना बागवां होगा ।।

वतन की आबरू का पास देखे कौन करता है ।
सुना है आज मक़तल में हमारा इमतिहां होगा ।।

जुदा मत हो मेरे पहलू से ऐ दर्दे वतन हरगिज ।
न जाने बाद मुर्दन मैं कहां और तू कहां होगा ।।

यह आये दिन की छेड़ अच्छी नहीं ऐ खंजरे क़ातिल ।
बता कब फैसला उन के हमारे दर्मियां होगा ।।

शहीदों की चितावों पर जुड़ेगे हर वर्ष मेले ।
वतन पर मरनेवालों का यही बाकी निशां होगा ।।

कभी वह दिन भी आयेगा कि जब स्वराज देखेंगे ।
जब अपनी ही जमीं होगी जब अपना आसमां होगा ।।

हुलास वर्मा "प्रेमी" द्वारा सम्पादित तथा भास्कर प्रेस, देहरादून से मुद्रित, "क्रांति गीतांजलि" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 487—489 ।

खूं का असर देख लेना

शहीदों के खूं का असर देख लेना ।
वह पायेंगे थामे जिगर देख लेना ।।

किसी के इशारे के हम मुन्तजिर हैं ।
बहा देंगे खूं की नहर देख लेना ।।

झुका देंगे गर्दन हम जेर खंजर ।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना ।।

जो खुदगरज गोली चलाते हैं हम पर ।
ना कदमों में उनका ही सर देख लेना ।।

जो नस्ल हमने सींचा है खुने जिगर से ।
वह होगा कभी बारवर देख लेना ।।

किनारे पै आये भंवर से वह किश्ती ।
वह आयेगी एक दिन लहर देख लेना ।।

बलायें वह जायेंगी खुद सर न गुहों ।
नहीं होगा इनकी गुजर देख लेना ।।

खुद ही हुआ हिन्द आजाद अपना ।
यह आयेगी एक दिन खबर देख लेना ।।

सीताराम गुप्ता द्वारा संग्रहीत व प्रकाशित तथा शर्मा मशीन प्रिंटिंग प्रेस, मुरादाबाद से मुद्रित "स्वराज्य की कुंजी" नामक पुस्तक से।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 817—819 ।

D of A/85—3

राष्ट्रपति जवाहरलाल

भारत का डंका आलम में, बजवाया वीर जवाहर ने ।
स्वाधीन बनो, स्वाधीन बनो, समझाया वीर जवाहर ने ॥
वह लाल जो मोतीलाल का है, है लाल दुलारा भारत का ।
सोते भारत को हठ करके, जगवाया वीर जवाहर ने ॥
अंग्रेजों की मृगतृष्णा में, भूले थे भारतवासी सब ।
पूरी आजादी का मन्तर, सिखलाया वीर जवाहर ने ॥
दे दे स्पीचें जिन्दा-दिल, कमजोरी दूर भगा दी सब ।
रग रग में खूं आजादी का, दौड़ाया वीर जवाहर ने ॥
घोंटी है राजनीति उसने, छानी है खाक विदेशों की ।
समता स्वतंत्रता का मारग, दिखलाया वीर जवाहर ने ॥
पूंजीपति जमींदार करते हैं, जुल्म मजूर किसानों पर ।
बन साथी दीनों का धीरज, धरवाया वीर जवाहर ने ॥
हिन्दु, मुसलिम, सिख, जैन, ईसाई, पार्सी भाई-भाई हैं ।
सब ऊंच-नीच का भेद-भाव, मिटवाया वीर जवाहर ने ॥
इक रोशन आग धधकती है, आजादी की उसके दिल में ।
जिससे युवकों का मुर्दा दिल, चमकाया वीर जवाहर ने ॥
नवयुवक करोड़ों भारत के, भूले थे भोग-विलासों में ।
युवकों की शक्ति को एकदम, उकसाया वीर जवाहर ने ॥
आदर्श चरित से वह अपने, युवकों है सम्राट बना ।
आजादी का ऊंचा झंडा, लहराया वीर जवाहर ने ॥
बिजली है वाणी में उसकी, जादू है आंखों में उसकी ।
देखा जिसको इक पल-भर में, अपनाया वीर जवाहर ने ॥
गांधी जब आशिष दे बोले—"खुद क्लर्क बनूंगा मैं तेरा"।
तब सेहरा राष्ट्रपति का सिर, बंधवाया वीर जवाहर ने ॥
लखकर "प्रकाश" अब भारत का, अचरज में डूबी है दुनिया ।
कांग्रेस को करके मुट्ठी में, मुसकाया वीर जवाहर ने ॥

गोविन्द राम गुप्त रहबर द्वारा प्रकाशित तथा मार्तण्ड प्रस, दिल्ली से मुद्रित, "सरोजनी सन्देश" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 740—741 ।

विदा करो मां जाते हैं हम विजय ध्वजा फहराने आज

विदा करो मां जाते हैं हम विजय ध्वजा फहराने आज ।
देश स्वतंत्र बनाने जाते हम निज शीश चढ़ाने आज ॥

वीर प्रसू तू रोती क्यों है तेग अहिंसा मेरे हाथ ।
मलिन वेष यह आंसू कैसे क्यों कंपित होता है गात ॥

तेरे चरणों की रज लेकर जाते हैं करने रण रंग ।
फिर भय किसका है ये जननी निश दिन हमारे संग ॥

अहिंसात्मक सत्याग्रह की बाजेगी रण-भेरी आज ।
तब रिपु दल सब यही कहेगा तुम लो देश आपना आज ॥

उन्नत सिर नत हो जावेंगे टूट पड़ेंगे नभ के तार ।
विश्व देखता रह जावेगा जब सत्याग्रह की होगी मार ॥

विजय देवि आकर धोयेंगी तब चरणों को सज नव साज ।
पुलकित होकर हम गावेंगे भारत भूमि हमारी आज ॥

चलो-चलो सब भारत वीरो संकट तारन मां के आज ।
बहुत दुःख माता ने पाये अबतो इसकी राखो लाज ॥

गैर मुल्क के लखें तमाशा धन्य धन्य भारत संतान ।
फिर से गुरू करो भारत को तब ही होय आपका मान ॥

"विशारद"

रघुवर दयाल विद्यार्थी द्वारा संग्रहीत व प्रकाशित तथा आदर्श प्रेस, आगरा से मुद्रित, "सत्याग्रह संग्राम का बिगुल" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार, प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 757—759।

गांधी महिमा

गांधी तू आज हिन्द कि एक शान बन गया,
सारी मनुष्य जाति का अभिमान बन गया।

तू सत्य, अहिंसा, दया, निस्वार्थ त्याग से,
इस आज मृत्यु लोक में भगवान बन गया।

तेरा प्रभाव सादगी हस्ती को देख कर,
दुश्मन भी बे जुबान हो हैरान बन गया।

तेरी नसीहतों में वो जादू का असर है,
जिसको लगी हवा तेरी इनसान बन गया।

तू दोस्त है हर कोम का हरदिल अजीज है,
सारा जहान तेरा कदरदान बन गया।

सच तो है तेरी यह कि गई जिस तरफ नजर,
वीरान अगर था तो परिस्तान बन गया।

धिक्कार है अब सब तैंतीस करोड़ को,
तुझसा फकीर जेल का मेहमान बन गया।

बेनीमाधो गुप्त द्वारा प्रकाशित तथा आनन्द प्रेस, फतेहपुर से मुद्रित, "राष्ट्रीय गीत" नामक पुस्तक से।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य।

अवाप्ति संख्या 656—658।

पूर्ण स्वतंत्रता

सोते भारत को जगा दिया, इन पूर्ण स्वतंत्रता वालों ने ।
सबका उत्साह बढ़ा दिया, इन पूर्ण स्वतंत्रता वालों ने ।।

शुभ अशुभ महक बदबू जितनी थी छुपी हुई कलियां अंदर ।
सारे गुलशन को खिला दिया, इन पूर्ण स्वतंत्रता वालों ने ।।

जितना महत्व प्रभुता सदगुण था पोशीदा इस खद्दर में ।
सबको हल करके दिखा दिया, इन पूर्ण स्वतंत्रता वालों ने ।।

देश पर देश के गौरव पर सर्वस्व निछावर कर देना ।
जेलों का जाना सिखा दिया, इन पूर्ण स्वतंत्रता वालों ने ।।

बंदूक तोप तलवार आदि धर्म को डिगा नहीं सकते हैं ।
सिर देकर खून बहा दिया, इन पूर्ण स्वतंत्रता वालों ने ।।

रूठे थे भाई से भाई, थे चन्द बखेड़े आपस के ।
घरका भी कलह मिटा दिया, इन पूर्ण स्वतंत्रता वालों ने ।।

मिल सकै जिस कदर आजादी "रेवती" होय हितकर सबको ।
वो पूरा पाठ पढ़ा दिया, इन पूर्ण स्वतंत्रता वालों ने ।।

रामस्वरूप गुप्ता द्वारा संग्रहीत तथा एच० डी० प्रिंटिंग वर्क्स, मथुरा से मुद्रित, "आजादी या मौत" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 216-217।

शहीद भगत सिंह

भारत के लिये तू हुआ बलिदान भगत सिंह ।
था तुझको मुल्को-कौम का अभिमान भगत सिंह ।।

वह दर्द तेरे दिल में वतन का समा गया ।
जिसके लिये तू हो गया कुर्बान भगत सिंह ।।

वह कौल तेरा और दिली आरजू तेरी ।
है हिन्द के हर कूचे में एलान भगत सिंह ।।

फांसी पै चढ़के तूने जहां को दिखा दिया ।
हम क्यों न बने तेरे कदरदान भगत सिंह ।।

प्यारा न हो क्यों मादरे-भारत के दुलारे ।
था जानो-जिगर और मेरी शान भगत सिंह ।।

हरएक ने देखा तुझे हैरत की नजर से ।
हर दिल में तेरा हो गया स्थान भगत सिंह ।।

भूलेगा कयामत में भी हरगिज न ए "किशोर" ।
माता को दिया सौंप दिलोजान भगत सिंह ।।

रामविलास अवस्थी द्वारा संग्रहीत तथा दयाल प्रिंटिंग वर्क्स, लखनऊ से मुद्रित, "सुलह और राष्ट्र पुकार" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 778—780 ।

भारत माता के सच्चे सुपुत्र की प्रतिज्ञा

ए ! जन्मभूमि जननी ! सेवा तेरी करूंगा ।
तेरे लिये जिऊंगा, तेरे लिये मरूंगा ॥

हर जगह, हर समय में तेरा ही ध्यान होगा ।
निज देश, भेष भाषा का भक्त मैं रहूंगा ॥

संसार की विपत्ति हंस हंस के सब सहूंगा ।
पर देश द्रोही बन कर यह पेट नहीं भरूंगा ॥

धन, माल और सर्वस्व यह प्राण वार दूंगा ।
पर मान तेरा माता जाने नहीं मैं दूंगा ॥

होगी हराम मुझको दुनियां की ऐशो अशरत ।
जबतक स्वतन्त्र तुझको माता मैं कर न लूंगा ॥

कह कह के मात ! तेरे दुख दर्द की कहानी ।
भारत की लता पेड़ों तक को जगा मैं दूंगा ॥

"हम हिन्द के हैं बच्चे हिन्दोस्तां हमारा ।"
मैं मात ! मरते दम तक कहता यही रहूंगा ॥

सीताराम गुप्त द्वारा संग्रहीत तथा शर्मा मशीन प्रिंटिंग प्रेस, मुरादाबाद से मुद्रित, "स्वराज्य की कुंजी" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 817—819 ।

नहीं रह सकता

अंगरेज अत्याचार कर अब राज कर सकता नहीं,
जो दिल दुखाये किसी का वह सुख से रह सकता नहीं ।

अन्याय में है दुख भरा अरू न्याय में आनन्द है,
जो सोच लेगा इस कदर धोखा वह खा सकता नहीं ।

गड्ढा जो खोदे और को कुइयां उसे तैयार है,
धर्म की होती विजय अधरम तो रह सकता नहीं ।

राजा का तो यह धर्म है समझे प्रजा को पुत्र सम,
हो न बर्ताव बुरा तो राज्य जा सकता नहीं ।

किसी मजहब में नहीं रिआया को दुख देना लिखा,
पर बादशाही ठाठ में यह ध्यान जम सकता नहीं ।

बुद्धू इन्हें इतने ही दिन था राज्य करना हिन्द में,
जो विधाता ने लिखा वह टल कभी सकता नहीं ।

बुद्धु राम द्वारा लिखित तथा शिशु प्रेस इलाहाबाद से मुद्रित "राष्ट्रीय तरंग" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 690-691, 983 ।

धर्म

इस देश पर मरना ही केवल हर युवक का धर्म है ।
खून गर्दन से बहा देना ही सब का कर्म है ॥

देश की इज्जत के आगे जग में है कुछ भी नहीं ।
जान भी जाये तो क्या हमको नहीं कुछ भर्म है ॥

धन, धर्म इज्जत और कर्म मिट्टी बराबर हैं सभी ।
माता कलंकित है तुम्हारी, तुमको युवको शर्म है ॥

जाते विदेशों में कहीं तो लोग हंसते हैं सभी ।
इज्जत तुम्हारी कुछ नहीं कहते बड़ा बेशर्म है ॥

निज देश को आज़ाद कर जब तक नहीं दिखलावोगे ।
जीना तुम्हारा है वृथा, सोचो तो क्या यह मर्म है ॥

इस लिये इक बारगी आकर के अब सब मर मिटो ।
शीश को आगे झुका बनना नहीं अब नर्म है ॥

हजारी लाल द्वारा रचित तथा राजवाली प्रेस, इलाहाबाद से मुद्रित, "राष्ट्रीय गायन अथवा उबलता खून" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 655, 921।

क्या चाहते हैं

बतायें तुम्हें हम कि क्या चाहते हैं ।
गुलामी से होना रिहा चाहते हैं ॥

अगर वह न अपनी गुलामी से छोड़ें ।
तो फिर जेल की हम सजा चाहते हैं ॥

रहे फूस खपरैल के घर में क्यों हम ।
उसी पक्के घर में रहा चाहते हैं ॥

नहीं घर के खाने में अब जायका है ।
वहां का भी लेना मजा चाहते हैं ॥

वह तीरथ है वां कृष्ण पैदा हुए थे ।
वहीं चलके पूजा किया चाहते हैं ॥

दिवाला निकल जाए जेलों का एक दम ।
उसे इस कदर हम भरा चाहते हैं ॥

वह नाहक डराते हैं हमको सजा से ।
खुशी से उन्हें सर दिवा चाहते हैं ॥

अजी ऐसे जीने पै सौ बार लानत ।
वतन के लिए हम मरा चाहते हैं ॥

घड़ा पाप का गालिब भर चुका है ।
जमाने जालिम मिटा चाहते हैं ॥

त्रिभुवन नाथ "आजाद" द्वारा संपादित तथा लक्ष्मी प्रेस, बनारस से मुद्रित, 'बेकसों के आँसू" नामक पुस्तक से।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 271--273 ।

भारत वीरो उठो

उठो वीर भारतवासी, जब धर्म युद्ध करना होगा ।
शान्तिमय संग्राम मचा नित, भारत दुःख हरना होगा ।।

पूज्य भारत के व्यथित हृदय की, विषय पीर हरना होगा ।
बाल वृद्ध सब नर नारिन को, स्वार्थ त्याग करना होगा ।।

छोटे बड़े सभी के उर में, वीर भाव भरना होगा ।
"बिना स्वराज्य के नहीं हटेंगे" प्रण यह दृढ़ करना होगा ।।

कोई लाख डराये जेलों से, "शिव" कभी नहीं डरना होगा ।
मातृभूमि के लिए प्रेम से, उचित तुम्हें मरना होगा ।।

त्रिभुवन नाथ "आजाद" द्वारा संपादित तथा लक्ष्मी प्रेस, बनारस से मुद्रित, "बेकसों के आंसू" नामक पुस्तक से।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 271—273।

जालिम से

हम बेकसों का जालिम ! क्यों खूं बहा रहा है ।
है क्या कसूर जिससे, ये जुल्म ढा रहा है ।।

भारत को दासता की चक्की में डाल करके ।
गर्दन पे निर्दयी क्यों, छूरी चला रहा है ।।

यह हक भी है हमारा, दौलत भी है हमारी ।
फिर हमको किसलिये तू, दर-दर फिरा रहा है ।।

लेना सबाब गर हो, तो जा चला यहां से ।
भारत में धाक अपनी गांधी जमा रहा है ।।

करता रहा गुजर यह अब तक गुलाम बन के ।
पर अब तो देश का ध्यां, दिल में समा रहा ।।

अन्याय से न तेरे, डरने का अब "नरायन" ।
भारत की दासता का, अब अंत आ रहा है ।।

श्रीयुत प्रकाश द्वारा संकलित तथा सरस्वती प्रेस, काशी से मुद्रित, "आजाद भारत के गाने" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 189–190।

कैद हस्ती से कोई आजाद फिर होने को है

देश भारत कैद से आजाद फिर होने को है।
गुलशने हिन्दोस्तां आबाद फिर होने को है॥

पड़ रही है आज कल सैयाद की तुझ पर नजर।
जुल्म तुझ पर बुलबुले नाशाद फिर होने को है॥

रंजों ग्रम फस्ले खिजां में फिर उठाने के लिये।
बुलबुले नाशाद तू आजाद फिर होने को है॥

सुन रहे हैं बुलबुले नाशाद अब होगी रिहा।
आशियां उजड़ा हुआ आबाद फिर होने को है॥

पांव जौलां जा रहे हैं हिन्द के कुछ नौजवान।
ऐ सितमगर तेरा घर, आबाद फिर होने को है॥

जा रहा है आज कातिल किसलिये खंजर बकफ।
कैद हस्ती से कोई आजाद फिर होने को है॥

श्री एन० एल० ए० "बमलट" द्वारा संग्रहीत तथा रंगमंच प्रैस किंग्स सर्विस माटुंगा से मुद्रित, "लाहौर की फांसी उर्फ भगत सिंह का तराना" नामक पुस्तक से।
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य।
अवाप्ति संख्या 531।

इन गांधी टोपीवालों ने

इक लहर चला दी भारत में, इन गांधी टोपी वालों ने ।
"स्वाधीन बनो" यह सिखा दिया इन गांधी टोपी वालों ने ।।

सदियों की गुलामी में फंस कर, अपने को भी जो भूल चुके ।
कर दिया सचेत उन्हें अब तो, इन गांधी टोपी वालों ।।

सर्व स्वदेश हित कर दो तुम, अर्पण सपूत हो माता के ।
सर्वस्व त्याग का मंत्र दिया, इन गांधी टोपी वालों ने ।।

अनहित में भारत माता के, जो लगे देश द्रोही बन कर ।
उन को सत-पथ पर चला दिया, इन गांधी टोपी वालों ने ।।

पट बन्द हुये कितने मिल के, लंकाशायर भी चीख उठा ।
चरखे सा चक्र चलाया जब, इन गांधी टोपी वालों ने ।।

रोते हैं विदेशी व्यापारी, अपना सिर धुन बतलाते हैं ।
खद्दर से प्रेम किया जब से, इन गांधी टोपी वालों ने ।।

आदर्श जो हैं इस भारत के, दीनों के प्राण पियारे हैं ।
नेता गांधी को बना लिया, इन गांधी टोपी वालों ने ।।

"अब मेल करो आपस में तुम, जंजीर गुलामी की तोड़ो ।
माना गांधी का कहना ये, इन गांधी टोपी वालों ने ।।

है विकट समस्या तीस की भी, उसको भी हल कराना होगा ।
जरिया बस एक निकाल लिया, इन गांधी टोपी वालों ने ।।

युवकों के हृदय दुलारे हैं, आंखों के प्यारे तारे हैं ।
चुन लिया जवाहर को राजा, इन गांधी टोपी वालों ने ।।

खुश हुआ "दन्ध" यह सुन करके स्वाधीन बनेगा भारत अब ।
विश्वास दिलाया ऐसा ही, इन गांधी टोपी वालों ने ।।

"आर० एन० शर्मा द्वारा संग्रहीत तथा द्वादश श्रेणी प्रेस दिल्ली से मुद्रित, "स्वराज्य का तूफान" पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति सं० 852—854 ।

है वतन के वास्ते अक्सीर बन्देमातरम्

है वतन के वास्ते अक्सीर बन्देमातरम् ।
देश के खादिम की है जागीर बन्देमातरम् ॥

जालिमों को है अगर बन्दूक पर अपनी गरूर ।
है इधर हम बेकसों का तीर बन्देमातरम् ॥

कतल की धमकी न दे हमको हमारे सब्र से ।
तेग पर हो जाएगी तहरीर बन्देमातरम् ॥

किस तरह भूलूं इसे मैं जबकि किस्मत में मेरी ।
लिख चुका है राकिं में तहरीर बन्देमातरम् ॥

फिक्र क्या जल्लाद ने गर कत्ल पर बांधी कमर ।
रोक देगी दूर से शमशीर बन्देमातरम् ॥

जुल्म से गर कर दिया खामोश मुझ को देखना ।
बोल उठेगी फिर मेरी तस्वीर बन्देमातरम् ॥

संतरी भी मुजतरिब थे जबकि हर झंकार में ।
बोलती थी जेल में जंजीर बन्देमातरम् ॥

गिरिराज किशोर अग्रवाल द्वारा संग्रहीत तथा केसरी प्रेस आगरा से मुद्रित, "स्वतन्त्रता की देवी" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 869—871 ।

प्रार्थना

न चाहूं मान दुनियां में न चाहूं स्वर्ग का जाना ।
यही वर दो मुझे भगवन रहूं भारत पै दीवाना ।।

करूं मैं देश की सेवा पड़े चाहे करोड़ों दुःख ।
अगर मरकर जनम होवे तो भारत में ही हो आना ।।

लगा रहे प्रेम हिन्दी से पढ़ूं हिन्दी लिखूं हिन्दी ।
चलन हिन्दी चलूं, हिन्दी पहिनना ओढ़ना खाना ।।

भवन में रोशनी मेरे जले हिन्दी चिरागों की ।
स्वदेशी ही बजे बाजा बजाना राग का गाना ।।

लगे सब देश के ही अर्थ मेरा तुच्छ विद्याधन ।
करूं मैं प्राण तक अर्पण यही प्रण सत्य है ठाना ।।

संभल कर पहिन ले भारत बदन पर भक्ति का चोला ।
चढ़ा लो प्रेम को रंगत दुई का त्याग कर बाना ।।

नहीं कुछ गैर मुमकिन है जो दिल से समझो बिसमिल तुम ।
उठालो देश हाथों पर समझ कर अपना बेगाना ।।

ला० प्रभुदयाल द्वारा संग्रहीत तथा सुधारक प्रेस, इटावा से मद्रित, "स्वराज्य संग्राम" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 850 ।

वार की

जान ली सारी हकीकत आपके सरकार की ।
तारीफ क्यों करते हो झूठी जालिमें बदकार की ।।

बद चलन को सर चढ़ा कर नाचते भी आप हैं ।
फक्र करते हो उसी पै जो कौम है मक्कार की ।।

भूलकर कौमी मुहब्बत बन गये गद्दार तुम ।
खाते हो टुकड़ा हमारा गाते हो उस पार की ।।

देख चुके हम तुम्हें पहिचान भी पूरा लिया ।
कर दिया सीना अगाड़ी गम नहिं है वार की ।।

स्वामी विचारानन्द सरस्वती द्वारा लिखित तथा अभय प्रेस, देहरादून से मुद्रित, "विचार तरंग" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 885—887 ।

1 D of A/85—4

हम करेंगे या मरेंगे

कह उठा यों वृद्ध बागी,
जाग उठ मेरी जवानी ।
कह उठा यों युवा बागी,
भभक उठ मेरी जवानी ।।

अग्नि-वीणा पर प्रलय का,
स्वर सुना मेरी भवानी ।
और जगती को सुनादे,
द्रोह की मेरी कहानी ।।

ओ दिगम्बरी ! मुझ दिगम्बर,
को चढ़ा दे हिम-शिखर पर ।
व्योम की नीली लरह पर,
नाच उट्ठूं मैं भंयकर ।।

जग जलधि को आज मथकर,
तू मृतक को अमर कर दे ।
विश्व का अनुताप-विष तू,
आज मेरे कण्ठ धर दे ।।

जब जगी तू अग्नि वाले,
क्रांति का उन्माद जागा ।
सूर्य जागा, सोम जागा,
द्रोह का संवाद जागा ।।

जब जगी तू उग्र रूपिणि,
विश्व का संग्राम जागा ।
चीरता छाती नियति की,
राष्ट्र का अभिमान जागा ।।

भूमि-गोल ख-गोल तेरी,
चरण-ध्वनि सुन डगमगाते ।
क्षितिज के निस्सीम छोरों,
पर प्रलय का गीत गाते ।।

मैं सधे स्वर में सुनाता,
मनुज की दारूण कहानी ।
तू उसी स्वर को बनाती,
विश्व का परित्राण रानी ।।

तू युगों से जिस तरह,
लिखती रही मेरी कहानी ।
आज भी लिख अग्नि मय,
जलते हुए दिल की कहानी ।।

दे रहा नर जवानी के,
साथ विप्लव को निमन्त्रण ।
बदलता है अमंगल के,
आज वह प्रत्येक क्षण क्षण ।।

आज हम भी अग्नि खाकर,
अग्नि-पथ पर चल पड़े हैं ।
हमें भी संसार देखे,
हम कहां आकर अड़े हैं ।।

द्रोह क्रमशः रवि-किरण सा,
छा रहा भू पर हमारा ।
अग्नि वाही बन जगत में,
ला रहा खूनी सबेरा ।।

नये युग की नव प्रभाती,
से जगाता नव्य यौवन ।
क्रान्तिकारी स्वर-लहर में,
जागरण सन्देश नूतन ।।

खून में लथपथ अवनि के,
शेष फिर अरमान जागे ।
शहीदों की कब्र से फिर,
इन्कलाबी गान जागे ।।

शीश वे जो चढ़ चुके थे,
जालिमों की शूलियों पर ।
वक्ष वे जो तन चुके थे,
जालिमों की गोलियों पर ।।

जग उठे पूर्ण करने,
निज अधूरी साधनाएं ।
जग उठी जलियान वाला,
बाग की ठंडी चिताएं ।।

कर पिकी भी क्रांति-दर्शन,
छोड़ पंचम गीत मंथर ।
आमु-वन में भैरवी सी,
गा उठी सुन द्रोह का स्वर ।।

मुरलिका-मृदु बीन पर उन,
चल रहे कोमल करों से ।
झर उठी विद्रोह की,
चिनगारियां सातों स्वरों से ।।

हम हुए व्याकुल हमारे,
प्राण में विद्रोह जागा ।
मुक्ति पाने के लिये, जीवन—,
—मरण का मोह त्यागा ।।

सह सकेंगे हम नहीं अब,
आज पशु-सी जिन्दगानी ।
ना सुनेंगे ही किसी के,
जुलम की काली कहानी ।।

दासता को मार ठोकर,
जब कहा आजाद हैं हम ।
कौन कह सकता हमें फिर,
चिर विकल नाशाद हैं हम ।।

प्रण हमारा है यही, "हम",
पैर आगे ही धरेंगे ।
है यही नारा हमारा,
"हम करेंगे या मरेंगे" ।।

प्रह्लाद पाण्डेय (शशि) द्वारा लिखित तथा श्री उमेद प्रेस कोटा से मुद्रित, "तूफान" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।
अवाप्ति संख्या 877—879 ।

आजाद करो

भारत के वीरो भारत को आजाद करो आज़ाद करो ।
इस फैशन से मत घर को बरबाद करो बरबाद करो ॥

अब देश तुम्हारा है उजड़ा और काम तुम्हारा है सब बिगड़ा ।
इस उजड़े भारत को अब तुम आबाद करो आबाद करो ॥

गर ऋषियों की सन्तान हो तुम तो देश पै अब बलिदान हो तुम ।
अपने बल पौरूष की अब तुम कुछ याद करो कुछ याद करो ॥

लाखों जन भूखों मरते हैं और आह तलक नहीं करते हैं ।
कुछ गौर से अपने भाइयों की इम्दाद करो इम्दाद करो ॥

अब द्वेषभाव को छोड़ो तुम और तौके गुलामी तोड़ो तुम ।
जिस तरह से होवे उसी तरह इतिहाद करो इतिहाद करो ॥

जो वीर देशहित मरते हैं वह अमर सदा ही रहते हैं ।
इस बात "शुक्ल" की पर प्यारो इत्तफाक करो इत्तफाक करो ॥

पं० नित्यानन्द पाण्डेय द्वारा संग्रहीत तथा अभय प्रेस, देहरादून से मुद्रित, "स्वराज्य का बिगुल" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 810 ।

भारत भक्त

बनेंगे हिन्द के योगी धरेंगे ध्यान भारत का ।
उठा कर भक्ति का झंडा करें उत्थान भारत का ।।

गले में शील की माला पहिन कर ज्ञान की कफनी ।
पकड़ कर त्याग का डंडा रखेंगे मान भारत का ।।

जला कर कष्ट कीहोली उठा कर कष्ट की झोली ।
जमा कर सन्त की टोली करेंगे गान भारत का ।।

तजें सब लोक की लज्जा तजें सुख भोग की शय्या ।
न छोड़े बान ऋषियों की जो है विद्वान भारत का ।।

न है सुख भोग आकांक्षा न है धन माल की इच्छा ।
न है संसार की बांछा चहें सम्मान भारत का ।।

स्वरों में तान भारत की है मुख में गान भारत का ।
नसों में रक्त भारत का उदर में प्राण भारत का ।।

हमारे जन्म का सार्थक हमारे मोक्ष का मारग ।
हमारे लक्ष्य में वह हो बने उद्यान भारत का ।।

पं० नित्यानन्द पाण्डेय द्वारा संग्रहीत, अभय प्रेस, देहरादून से मुद्रित, "स्वराज्य का बिगुल" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 810 ।

आजादी या मौत

अबस जिन्दगी का गुमां है, भरम है।
गुलामी में जीना न मरने से कम है ।। टेक ।।

सितमगर ने हमको जो गफलत में पाया ।
तुरत दामे फितरत में अपने फंसाया ।
कहा और कुछ और कुछ कर दिखाया ।
दिखा करके अमृत जहर को पिलाया ।
न उठने की ताकत न चलने का दम है । गुलामी में जीना० (1)

वह कहते हैं कि हमसे खामोश रहना ।
सहो चोटें दिल पर, जुबां से न कहना ।
रहे पेट खाली, रहे तन बरहना ।
वफादार हो तुम, जफाओं को सहना ।
खुशी गर जुबां, तो वहीं सर कलम है । गुलामी में जीना० (2)

दिए जख्म पर जख्म सैयाद तू ने ।
सुनी बैकसों की न फरयाद तू ने ।
न रहने दिया हम को आजाद तू ने ।
किया हर तरह हमको बरबाद तू ने ।
ये है जुल्म कैसा, ये कैसा सितम है । गुलामी में जीना० (3)

तुझे भी कसम है जो रहने कसर दे ।
ये हैं जख्म ताजे नमक इनमें भर दे ।
उठा अपना खंजर अभी कत्ल कर दे ।
है वाजिब तुझे यह उड़ा धड़ से सर दे ।
किया चाहता तू जो हम पर करम है । गुलामी में जीना० (4)

सितमगर है, गर ताबो ताकत पै नाजां ।
तो हैं हम भी अपनी सदाकत पै कुरबां ।
यही दिल की हसरत, यही दिल में अरमां ।
कि आजाद हों, या फना होवें, दे जां ।
हटेगा न पीछे, बढ़ा जो कदम है । गुलामी में जीना० (5)

जिएंगे, तो आजाद होकर रहेंगे ।
जहां में कि बरबाद होकर रहेंगे ।
सितमगर ही या शाद हो कर रहेंगे ।
कि हम शा आबाद होकर रहेंगे ।
खुली अब हैं आंखें, खुला सब भरम है । गुलामी में जीना० (6)

हमें गो कि दिक्कत उठानी पड़ेगी ।
उन्हें खुद बखुद मुंह की खानी पड़ेगी ।
ये आदत पुरानी मिटानी पड़ेगी ।
सरे बज्म गरदन झुकानी पड़ेगी ।
हमें नाज बेजा उठाने से रम है । गुलामी में जीना० (7)

चमन में न फिर गैर का कुछ खतर हो ।
वतन अपना आजाद हो, औज पर हो ।
बुजुर्गों का तुममें अगर कुछ असर हो ।
दिखा दो जमाने में फिर ऊंचा सर हो ।
गजब का ये "अख्तर" का तर्ज रकम है । गुलामी में जीना० (8)

—स्वामी नारायणानन्द "अख्तर"

पं० कन्हैया लाल दीक्षित (इन्द्र) द्वारा सम्पादित तथा भारतभूषण प्रेस, लखनऊ से मुद्रित, "स्वराज्य पुकार" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 820—822 ।

गुलामी से हमको छुड़ायेगा खद्दर

जालिम को जड़ से मिटायेगा खद्दर ।

अदाएं जब अपनी दिखायेगा खद्दर ।।
हसीनों के दिल को लुभायेगा खद्दर ।

जीवन का लट्ठा नहीं नैनसुख है,
मलमल के पुर्जे सड़ायेगा खद्दर ।

पलालैन रोयेगी सर को पकड़ कर,
वकीलों के घर में जब आयेगा खद्दर ।

योरूप के रोवेंगे सारे जुलाहे,
घर घर में स्थापा करायेगा खद्दर ।

चिकन डोरिया और छब्बी की मलमल,
मलमल के सबको रुलायेगा खद्दर ।

भारत की इज्जत है इसमें ही भानू,
भारत के तन पर हो भारत का खद्दर ।

हमें यह भरोसा हमें यह यकीं है,
कि आजादी हमको दिलायेगा खद्दर ।

उरुज एक दिन ऐसा पायेगा खद्दर,
योरूप को नीचा दिखायेगा खद्दर ।

निगाहों में ऐसा समायेगा खद्दर,
हरसू नजर हमको आयेगा खद्दर ।

हमें भाग ऐसे लगायेगा खद्दर,
जमीं से फलक पर बिठायेगा खद्दर ।

हमें दोनों हाथों से जो लूटते थे,
अब उनके छक्के छुड़ायेगा खद्दर ।

जलाए हैं जिस तौर कपड़े विदेशी,
यूं ही दिल उदू का जलायेगा खद्दर ।

हिकारत से देखो न हर्गिज इसे तुम,
नहीं तो अभी होश उड़ायेगा खद्दर ।

न तहरीर खद्दर कम होगी यारो,
दिन व दिन बढ़ता यह जायेगा खद्दर ।

जो खद्दर पहनने से डरते हैं उनको,
बला बनकर उनको न खायेगा खद्दर ।

नहीं लेंगे तंजेब हम मुफ्त भी अब,
खरीदेंगे जिस भाव आयेगा खद्दर ।

हिन्दू-मुसलमां सभी समझे बैठे हैं,
गुलामीं से हमको छुड़ायेगा खद्दर ।

जो पहनेगा खद्दर खलक उसके दिल में,
वतन की मुहब्बत बढ़ायेगा खद्दर ।

के०एल० गुप्त द्वारा संग्रहीत तथा लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस, आगरा से मुद्रित, "स्वराज्य संग्राम का बिगुल" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 836 ।

स्वदेश प्रेम

सेवा में तेरी भारत ! तन मन लगायेंगे हम ।
फिर स्वर्ग का सहोदर, तुझ को बनायेंगे हम ।।

तुझ से जिये तुझी ने, पालन किया हमारा ।
उपकार जितना करता, क्या क्या गिनायेंगे हम ।।

तेरे ऋणों का बोझा, सर पर धरा हमारे ।
करके प्रयत्न पूरा, उसको चुकायेंगे हम ।।

तेरे लिये जियेंगे, तेरे लिये मरेंगे ।
आखिर स्वतन्त्र करके तुझको दिखायेंगे हम ।।

हुलास वर्मा, "प्रेमी" द्वारा संपादित तथा भास्कर प्रेस, देहरादून से मुद्रित, "क्रान्ति गीतांजलि" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य से ।

अवाप्ति संख्या 487—489 ।

चर्खे से स्वराज्य

करेंगे मुल्क में कायम स्वराज्य चर्खे से ।
मिलेगा हिन्द को फिर तख्तो ताज चर्खे से ।।

बनेंगे बिगड़े हुए कामकाज चर्खे से ।
रहेगी देश की आलम में लाज चर्खे से ।।

हमें मशीनगनों की वह देता है धमकी ।
उड़ू से पूछते हैं हम मिजाज चर्खे से ।।

जिन्होंने लूट कर वीरान कर दिया भारत ।
वसूल उनसे करेंगे खिराज चर्खे से ।।

हमें यह चक्र सुदर्शन से कम नहीं चर्खा ।
मचाई धूम है दुनिया में आज चर्खे से ।।

पं० रामसहाय शर्मा द्वारा संग्रहीत तथा जैन प्रेस, आगरा से मुद्रित, "विजय-दुन्दुभि" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 893—895 ।

मुबारिकबाद

हमारे लीडरों का जेल का जाना मुबारिक हो ।
वतन के वास्ते तकलीफ का पाना मुबारिक हो ।।

पड़ी हो हाथ पैरों में मुबारिक हथकड़ी बेड़ी ।
शौक से जेब तन पर जेल का जाना मुबारिक हो ।।

समझ कर हार फूलों का गले में तौक को पहिने ।
राग जंजीर की झन्कार पर गाना मुबारिक हो ।।

चटाई जेल की कालीन हो कम्बल दुशाला हो ।
कोठरी जेल की वह महल शाहाना मुबारिक हो ।।

सुबह को जेल का दलिया मिसाल हलवे के मालूम हो ।
उस मोहन भोग रोटी दाल का खाना मुबारिक हो ।।

लिया जिस जेल में अवतार श्री बांकेबिहारी ने ।
कृष्ण के जन्म गृह में हमको भी जाना मुबारिक हो ।।

"दास" ऐसे पवित्र स्थान में जाने से क्या डरना ।
देश हित के लिये दुख जेल के पाना मुबारिक हो ।।

पं० रामसहाय शर्मा द्वारा संग्रहीत तथा जैन प्रेस, आगरा से मुद्रित, "विजय-दुन्दुभि" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 893—895 ।

आजादी या मौत

(श्री हरद्वार प्रसाद बी० ए० एल० एल० बी०)

अब तो आजादी बिना जीना हमें दुशवार है ।
इसलिये ही मुल्क मर मिटने को अब तैयार है ॥

आबरू इज्जत गंवाकर हो गये कसे जलील ।
हा ! हमारी जिंदगी संसार में भू-भार है ॥

इंतजारी हो चुकी, अब सब्र भी जाता रहा ।
उनकी बातों पर हमें कुछ भी नहीं इतबार है ॥

जिंदगी वह खाक है जिसमें न आजादी रहे ।
इस गुलामी जिंदगी तो बार सौ धिक्कार है ॥

है तमन्ना दिल की यह, आजाद ही होकर रहें ।
सब दिलों की धुन यही, यह सब दिलों का तार है ॥

मुल्क हो आजाद, तकलीफें उठायेंगे सभी ।
जेल जाने से जरा हमको नहीं इन्कार है ॥

गोलियां हम पर चलें, शूली मिले, फांसी चढ़ें ।
गन मशीनों से भी अब मरना हमें स्वीकार है ॥

नरक भी जाना पड़े तो हम खुशी से जायेंगे ।
हिंद के उद्धार को वह स्वर्ग ही का द्वार है ॥

चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु द्वारा सम्पादित तथा अर्जुन प्रेस, काशी से मुद्रित, "स्वतन्त्र भारत का सिंहनाद" पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 837-838 ।

युवकों की प्रतिज्ञा

(श्री सरजुप्रसादसिंह "भीम")

भारत ! मैं तेरे नाम का डंका बजाऊंगा ।
संसार का शिरमौर तुझे फिर बनाऊंगा ॥

रहने न दूंगा मां की गुलामी की बेड़ियां ।
आजाद बनाऊंगा, तभी चैन पाऊंगा ॥

जालिम पुलिस गर हम पै चलाएगी लाठियां ।
तो शौक से मैं सामने सीना अड़ाऊंगा ॥

हिंसा को स्वप्न में भी न लाऊंगा हृदय में ।
खंजर से सितमगर के मैं बोटा कटाऊंगा ॥

बौछार गोलियों की या तेगों की मार हो ।
माता के लिये शीश मैं अपना चढ़ाऊंगा ॥

घर-घर में चला चर्खा, बना करके सूत को ।
लाखों करोड़ों थान में खादी बनाऊंगा ॥

कपड़े विदेशी मुल्क में बिकने न दूंगा मैं ।
खादी से देश भाइयों के तन सजाऊंगा ॥

मैंचेस्टर-लंकाशायर ने लूटा है देश को ।
अब ताले चढ़ा उनकी मिलों को रुलाऊंगा ॥

गांजे, शराब, ताड़ियों की जा दुकानों पर ।
कर जोड़ भाइयों से नशा को छुड़ाऊंगा ॥

जिन जालिमों ने देश को बरबाद किया है ।
उनके किए का फल बुरा, उनको चखाऊंगा ।।

अब तक जो लुटा मालीजर वह कम है कुछ नहीं ।
लुटने न दूंगा, देश की दौलत बचाऊंगा ।।

ऐ "भीम" न कर सोच, ये मोहन ने कहा है ।
"स्वाधीन मातृभूमि" में अपनी बनाऊंगा ।।

चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु द्वारा संग्रहीत तथा अर्जुन प्रेस, काशी से मुद्रित, "स्वतन्त्र भारत का सिंहनाद" पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 837–838 ।

देश के लिये जान जावे हित तो भी घबड़ाना नहीं

देश के हित जान जावे, तो भी घबड़ाना नहीं ।
धन धाम हो बरबाद, माथे पर शिकन लाना नहीं ।

अब उठो होकर निडर, कर्तव्य पथ में पग धरो;
काम करना है तुम्हें; सोना या अलसाना नहीं ।

हम सभी बच्चे हैं, लक्ष्मी बाई नाना वीर के;
खून गोरों ने किया है, उनका बिसराना नहीं ।

लाहिड़ी अशफ़ाक़ रोशन, फांसी पे बिस्मिल चढ़े;
उनके अरमानों को पूरा करना, भय खाना नहीं ।

दास ने अनशन किए, और स्वर्ग में जाकर कहा ;
जान दे करके कठिन, आज़ादी का पाना नहीं ।

भगत सिंह सरदार हमको, आज भी बतला रहे;
दे के सर सरदार हो; यह वक्त फिर आना नहीं ।

गोली खाकर भाइयों ने, बागे जलियां कहा;
खून का ये दिन हमारे, भूल मत जाना कहीं ।

दुध मुंह बच्चे भी, संगीनों से छिद्र कर बोले यों;
इत्मीनान इन बेईमानों, पर कभी लाना नहीं ।

जेल समझो खेल, शूली को शकुन तुम मान लो;
मौत से डरता है, आज़ादी का परवाना नहीं ।

उल्फते आज़ादी में, अपने को कर कुर्बान दो;
हिन्दियों मौका यही है, पीछे पछताना नहीं ।

ले० "विजय" द्वारा रचित, "प्रभात फेरी" नामक पुस्तक से ।
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।
अवाप्ति संख्या 605 ।

1 D of A/85—5

बृटिश सरकार को भाई, जरूरत अब कफन की है

बृटिश सरकार को भाई, जरूरत अब कफन की है;
हुई मुर्दा फ़क़त बाक़ी कसर, अब तो दफन की है ।

इधर हैं शेर गरजे, दम हुकूमत का उधर निकला;
न जड़ बुनियाद कुछ बाक़ी, कहीं पर भी दमन की है ।

न सोया चैन से कोई कभी भी, जब से यह आई;
यही तारीफ अंग्रेजी हुकूमत के अमन की है ।

दग़ाबाजी से खुद मुख्त्यार, यह भारत को बन बैठी;
अमानत देने से इन्कार है, नीयत ग़बन की है ।

कभी हमने सुनी अंधेर की बातें नहीं ऐसी;
न हक़ आज़ादी बुलबुल का, न ख्वाहिश ही चमन की है ।

नहीं टिक सकती, योरप को चली, ठहरेगी लंदन में;
ये जौहर है भगत सिंह का, ये ताकत अन्जुमन की है ।

ले० "बिजय" द्वारा रचित, "प्रभात फेरी" नामक पुस्तक से ।
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।
अवाप्ति संख्या 605 ।

जालिम तेरी तलवार के डर से न डरेंगे

जालिम तेरी तलवार के डर से न डरेंगे ।
हंस खेल हेल मेल से कुल जेल भरेंगे ॥

चक्की चलावें शोक से मानिन्द रेल के ।
छाती पै दुश्मनों के खूब दाल दलेंगे ॥ जालिम०

लुटेंगे ऐश जेल में बट-बट के रस्सियां ।
ऊसर उजाड़ भूमि को आबाद करेंगे ॥ जालिम०

बांधेंगे ठाट टाट का बिस्तर लगा-लगा ।
फाकेकशी करेंगे डरेंगे न मरेंगे ॥ जालिम०

परवाह जान की नहीं हरगिज वसन्त को ।
झेलें हजार सख्तियां तिल भर न टरेंगे ॥ जालिम०

ब्रह्मचारी रामानन्द द्वारा संग्रहीत तथा सरस्वती प्रेस, काशी से मुद्रित, "राष्ट्र वीणा" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 628—630 ।

खुदाया मैहर की नजरों से गर इरशाद तेरा है

खुदाया मैहर की नजरों से गर इरशाद तेरा है ।
तो यह उजड़ा हुवा भारत अहा आजाद मेरा हो ।।

हजारों साल से बेदर्द लोगों के हवाले है ।
न यूं गैरों के पंजे से वतन बरबाद मेरा हो ।।

खुशी रखता है दुनिया को सभी का अन्न दाता है ।
मगर अफसोस फिर भी यह चमन नाशाद मेरा हो ।।

तमन्ना है कि यह शैतानियत उठ जाय दुनियां से ।
करूं कोशिश मिटाने की अगर इमदाद मेरा हो ।।

कटै बेड़ी गुलामी की तेरी नजरे इनायत से ।
यही फरयाद करता हूं वतन आजाद मेरा हो ।।

उठाते थे मुसीबत पर मुसीबत जिस तरह से हम ।
पड़ा पिंजरे में मेरी ही तरह सैयाद मेरा हो ।।

आर०एन० शर्मा द्वारा संग्रहीत तथा द्वादश श्रेणी प्रेस, दिल्ली से मुद्रित, "महात्मा गांधी की आंधी अथवा राष्ट्रीय झण्डा" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 615—617 ।

वक्त बिताने को

मेरा मन माता मचल रहा, तुझ को आजाद बनाने को ।
कहती है आत्मा उठो चलो, अब आत्मिक खडग चलाने को ।।

संग्राम यहां है आत्मा से, है विनय यही परमात्मा
सबकी आत्मा में देवी हो, हाजिर हो शीश कटाने को ।।

यह स्वप्न रूप दुनिया सारी क्यों करें भला फिर लहचारी ।
वह हाजिर जेल पठाने में, तत्पर हम कष्ट उठाने को ।।

अन्यायी शासन में रहना, मेहनत करना भूखों मरना ।
जर दौलत लेकर दीन किया, अब हाजिर खून बहाने को ।।

जब तुम्हारे न्याय बने, अन्याई हम अन्याय सने ।
हम अपने हक को ले लेंगे, पूछो तुम जाय जमाने को ।।

बैठक है राउनटेबिल की, अब नजर हो गांधी के बिल की ।
हरगिज गांधी राजी है नहीं, इंगलैण्ड तुम्हारे जाने को ।।

मिस्टर जैकर सप्रू आये, देखें क्या गुंचे खिलबाये ।
मिल आये राष्ट्रपति से, वह बाकी है हाल सुनाने को ।।

पोशीदा कार्रवाई है, गांधी ने इल्म पढ़ाई है ।
देखें क्या शर्तें पूरी हों भारत आज़ाद बनाने को ।।

हम तो एक वीर पुजारी हैं, अपने हक के अधिकारी हैं ।
तुम शौक से साहब कत्ल करो, हम हाजिर सीस कटाने को ।।

शिव शंकर क्या दहलाना है, आज़ादी पर मर जाना है ।
बच्चा 2 तय्यार यहां है जेल में वक्त बिताने को ।।

पंडित शिवशंकर लाल देवी प्रसाद द्वारा लिखित तथा भारत प्रिंटिंग प्रेस, कानपुर से मुद्रित "खूनी नज़ारा" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 479, 618 ।

देश रक्षा के लिये जान का जाना अच्छा

देश रक्षा के लिए जान का जाना अच्छा ।
नाम बदनाम जो हो जहर का खाना अच्छा ॥

किस लिये देश बहा जाता है मझधार में ।
डूब जाए न कहीं इसका बचाना अच्छा ॥

देश संकट में पड़ा है न करो देर उठो ।
बुजदिली छोड़ के मैदान में आना अच्छा ॥

देश की हालते अबतर प जरा गौर करो ।
आबरू जाती है धब्बे का मिटाना अच्छा ॥

मर्द कहलाते हैं आगे बढ़ो औरत न बनो ।
कुछ तो शर्माओ नहीं नाम घटाना अच्छा ॥

मर मिटो जान से हिम्मत जरा हिम्मत बांधो ।
काहिली छोड़ के कुछ करके दिखाना अच्छा ॥

प्रभुनारायण मिश्र द्वारा लिखित तथा श्री बागेश्वरी प्रेस, बनारस से मुद्रित "राष्ट्रीय वीण" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 631--633 ।

पंचरंगी चोला

मेरा रंग दे पचरंगी चोला मां रंग दे पचरंगी चोला । टेक
इसी रंग में रंग के शिवा ने मां का बन्धन खोला ॥ मां० ॥

वही रंग प्रताप सिंह ने हल्दी घाट में खोला ॥ मां० ॥
इसी रंग में तिलकदेव ने यह स्वराज्य टटोला ॥ मां० ॥

इसी रंग में लाला जी ने मां का चरण टटोला ॥ मां० ॥
इसी रंग में भगतदत्त ने दुश्मन का दिल छोला ॥ मां० ॥

इसी रंग में यतीन्द्रदास ने अपना चोला छोड़ा ॥ मां० ॥
इसी रंग में सत्यवती ने जेल का फाटक खोला ॥ मां० ॥

इसी रंग में गांधी जी ने नमक पर धावा बोला ॥ मां ॥
यही रंग अब्बास तैय्यब ने जेल में जाके घोला ॥ मां० ॥

इसी रंग में जवाहरलाल ने आत्म बल को तोला ॥ मां ॥
इसी रंग में तारा सिंह ने सिक्खों का सत तोला ॥ मां० ॥

इसी रंग में मदन मोहन का असेंबली से दिल डोला ॥ मां० ॥
इसी रंग में मोती लाल का कानून से दिल डोला ॥ मां० ॥

इसी रंग में सैय्यद जी ने अल्ला हो अकबर बोला ॥ मां० ॥
इसी रंग में सत्याग्रह ने बन्देमातरम् बोला ॥ मां० ॥

इसी रंग में वीरों ने चमकाया है शोला ॥ मां ॥
इसी रंग में लिया देश ने आजादी का झोला ॥ मां ॥

आर० एन० शर्मा द्वारा संग्रहीत तथा द्वादश श्रेणी प्रेस दिल्ली से मुद्रित, "राष्ट्रीय मल्हारें अथवा जख्मी भारत" नामक पुस्तक से ।
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।
अवाप्ति संख्या 672—674 ।

फिर क्या चाहते हैं ?

बतायें तुम्हें हम कि क्या चाहते हैं ।
गुलामी से होना रिहा चाहते हैं ॥

फ़कत इस ख़ता के सज़ावार हैं हम ।
की दर्दे वतन की दवा चाहते हैं ॥

बुरा चाहते हैं जो हम बेकसों का ।
हम उनका भी दिल से भला चाहते हैं ॥

गरीबों को तेरा ही बस आसरा है ।
निगाहें करम या खुदा चाहते हैं ॥

इस उजड़े हुए गुलसने हिन्द को फिर ।
हरा और फूला फला चाहते हैं ॥

घड़ा पाप का गालिबन भर चुका है ।
जमाने से जालिम मिटा चाहते हैं ॥

वतन पर दिलो जान कुरबां को करके ।
जो मर कर भी आबे वफा चाहते हैं ॥

के० एल० वर्मन द्वारा संग्रहीत तथा लक्ष्मी प्रेस बनारस से मुद्रित, "राष्ट्रीय तरंग" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 692 ।

कट कट के मरना होगा

आओ वीरो ! मर्द बनो, अब जेल तुम्हें भरना होगा ।
सत्याग्रह के समर क्षेत्र में आ आ के डटना होगा ॥

शूर लड़ाके मर्दाने हो, पैर हटाना कभी नहीं ।
मरते मरते माता का अब, कर्ज अदा करना होगा ॥

वक्त नहीं है ऐ वीरों, अब गाफिल होकर सोने का ।
दौड़ चलो मैदानों में, माता का दुःख हरना होगा ॥

याद करो माता का तुमने, बहुत दूध है पान किया ।
दूध पिये की लाज बहादुर, किसी तरह रखना होगा ॥

शेर मर्द हो वीर बांकुड़ा, याद करो कर्तव्यों का ।
मातृ वेदी पर हंसते हंसते कट कट के मरना होगा ॥

के० एल० बर्मन द्वारा संग्रहीत तथा लक्ष्मी प्रेस बनारस से मुद्रित, "राष्ट्रीय तरंग" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 692 ।

रसिया

प्रीतम चलूं तुम्हारे संग, जंग में पकड़ूंगी तलवार।
गाढ़े सब बस्त्र बनाओं, सारी पब्लिक को पहनाओ ॥

और मैं करूं सूत त्यार ॥ जंग में ॥
ऊंच नीच सब को बतलाओ, गांधी का पैगाम सुनाओ।

मैं भी करूं नमक तैयार ॥ जंग ॥
जेल तोप से नहीं डरूंगी, बिना काल के नहीं मरूंगी ॥

गोली खाने को तैयार ॥ जं० ॥
भारत को आज़ाद करूंगी, दुश्मन को बरबाद करूंगी ॥

कुछ मत सोच करो भरतार ॥ जं० ॥
असहयोग की फौज सजाओ कांग्रेस की तोप लगाओ ॥

दुश्मन भगें समन्द्र पार ॥ जं० ॥
गांधी जी बन रहे कलन्दर, शशो पन्ज में पड़ गये बन्दर ॥

देखो कहा करे करतार ॥ जं० ॥
अब गांधी के कदम बढ़ाया, गवर्नमेंट का दिल दहलाया ॥

देवी हो रही है तैयार ॥ जं० ॥
आज़ादी की छिड़ी जंग अब, बनो सरोजनी सत्यवती सब ॥

बहनो हो जावो हुशियार ॥ जं० ॥
यह रसिया गा गा के सुनावे, जोश जनानों को भी आये ॥

वर्मा जी तैयार ॥ जं० ॥

मोहर चन्द्र "मस्त" द्वारा प्रकाशित तथा द्वादश श्रेणी प्रेस, दिल्ली से मुद्रित, "शहीदों का सन्देश" नामक पुस्तक से।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य।

अवाप्ति संख्या 763—765।

देशभक्त का प्रलाप

हमारा हक़ है, हमारी दौलत, किसी के बाबा का ज़र नहीं है ।
है मुल्क भारत वतन हमारा, किसी के खाला का घर नहीं है ॥

हमारी आत्मा अजर अमर है, निसार तन-मन स्वदेश पर है ।
है चीज क्या जेलों गन मशीनें, कज़ा का भी हमको डर नहीं है ॥

व देश का जिसमें प्रेम होवे, दुखी के दुख से जो दिल न रोवे ।
खुशामदी बनके शान खोवे, वो खर है, हरगिज़ बशर नहीं है ।

हुकुक अपने को चाहते हैं, न कुछ किसी का बिगाड़ते हैं ।
तुझे तो ऐ खुदगरज, किसी की भलाई मद्दे नजर नहीं है ॥

हमारी नस-नस का खून तूने, बड़ी सफाई के साथ चूसा ।
है कौन सी तेरी पालसी वह कि जिसमें घोला जहर नहीं है ॥

बहाया तूने है खूं उसी का, है तेरे रग-रग में अन्न जिसका ।
बता दे बेदर्द, तू ही हक से, सितम है ये या कहर नहीं है ॥

जो बेगुनाहों को है सताता, कभी न वह सुख से बैठ पाता ।
बड़े-बड़े मिट गए सितमगर, क्या इसकी तुझको खबर नहीं है ॥

संभल-संभल अब भी ओ लुटेरे, है तेरे पापों का अंत आया ।
कि जुल्म करने में तूने जालिम, जरा भी रक्खी कसर नहीं है ॥

गजब है हम बेकसों की आहें, तक को आसमां हिला दें ।
गलत है समझे "कमल" जो समझे कि आह में कुछ असर नहीं है ॥

के० एल० बर्मन द्वारा संग्रहीत तथा लक्ष्मी प्रेस बनारस से मुद्रित, "राष्ट्रीय तरंग" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 692 ।

भारत का भार उतारेंगे

जलियांवाला का पुण्य दिवस, आया सप्ताह शहीदों का ।
वे चढ़े घमंडी घोड़ों पर, देखें उत्साह शहीदों का ॥

अबकी देवासुर संघर्षण, डाण्डी में होनेवाला है ।
उस ओर डायरी लश्कर है, इस ओर सुमन की माला ॥

देखें दल बांध खड़े अमला, हमला मूठी भर हाड़ों का ।
क्या चमत्कार दिखलाता है, यह बाबा टूटी डाढ़ों का ॥

अबकी मरने मिट जाने की, कितने मदनों की टोली है ।
बदला पटेलका लेने को, चेता घर घर बरदोली है ॥

यह कटक अटक तक जावेगा, वे अटक अटक में जावेंगे ।
कश्मीरी केप कुमारी तक, अपना झंडा फहरावेंगे ॥

शासन के प्रबल हुताशनमें, आसन भरपूर जमावेंगे ।
तिनका भी नहीं उठावेंगे, पर सिंहासन दहलावेंगे ॥

अभिमन्यु अनेकों आवेंगे, बढ़ चक्र-व्यूह में आवेंगे ।
ये नमक हलाली करने को, घर घर में नमक बनावेंगे ॥

जनता जगदम्बा जाग चुकी, शासक-महिषासुर हारेंगे ।
करतार कुशल गांधी करसे, भारत का भार उतारेंगे ॥

मतवाला मण्डल द्वारा प्रकाशित 20वीं सदी प्रिंटिंग प्रेस, मिर्जापुर से मुद्रित
"राष्ट्रीय गीत" नामक पुस्तक से ।
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।
अवाप्ति संख्या 661—663 ।

भारत का कल्याण

रणभेरी हां बजती है, तुम पांव पसारे सोते हो ।
बने जनाना वीरों क्यों, तुम समय अनोखा खोते हो ॥

छोड़ गुलामी लो अब मैंदा, क्या है तुममें जान नहीं ।
राणा, पारथ और शिवाकी, क्या हो तुम सन्तान नहीं ॥

रणचन्डी के चरणों में, जब शीश सुमन चढ़ जायेगा ।
सौम्य, शान्ति, श्री स्वत्व सुधा तब, मृत भारत फिर पायेगा ॥

वीरों वनिता बने पड़े हो, आती है कुछ लाज नहीं ।
बलि वेदी पर चढ़ जाना है, सोने का दिन आज नहीं ॥

कर्मवीर बन मरो विश्व में, जीवन की हो चाह नहीं ।
हाथों से तुम लगालो सूली, मुख से निकले आह नहीं ॥

फिर सब्ज बाग दिखलाने वाले, चरणों में झुक जावेंगे ।
अपनी करनी का फल अपने हाथों से खुद ही पावेंगे ॥

बूढ़ा सेना नायक पैदल समर भूमि में जाता है ।
धिक्कार तुम्हें जी जी हुजूर में मजा अभी तक आता है ॥

भावी आशा तुम्हीं देश के, तुम्हीं राष्ट्र के जीवन प्रान ।
पकड़लो दामन बूढ़े का, हो बूढ़े भारत का कल्याण ॥

मतवाला मण्डल द्वारा प्रकाशित, 20वीं सदी प्रिंटिंग प्रेस, मिर्जापुर से मुद्रित, "राष्ट्रीय गीत" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 661—663 ।

आह्वान

ऐ हिन्द के जवानों ! कुछ करके अब दिखा दो ।
संसार को अहिंसा की सीख तो सिखा दो ।।

मरने का भय दिखाकर तुमको डरा रहे हैं ।
अपनी क्षमा से उनके हथियार सब गिरा दो ।।

मरता है आन पर जो, होता वही अमर है ।
सिद्धान्त यह अटल है, मर कर उन्हें बता दो ।।

गोराकी गूढ़ गाथा, बादल की वीरता भी ।
रणमें गरज गरज कर उनको जरा सुना दो ।।

अभिमन्यु के सगौती मरने से क्या डरेंगे ।
कानून के चाबुक का भय तो अब भगा दो ।।

खारी नमक बनाने गांधी जी जा रहे हैं ।
ऐसा जो हैं समझते, उनको ये तुम जता दो ।।

मीठा बनाके भारत को वह मिठाई देंगे ।
भ्रम में पड़े हो साहब दिल से उसे हटा दो ।।

मतवाला मण्डल द्वारा प्रकाशित, 20वीं सदी प्रिंटिंग प्रेस, मिर्जापुर से मुद्रित, "राष्ट्रीय गीत" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 661—663 ।

भारत है जां हमारी

भारत है जां हमारी और जान है तो सब कुछ ।
ईमान वह हमारा, ईमान है तो सब कुछ ॥

मिट्टी से जिस के पल कर, हम सब बड़े हुये हैं ।
उसके लिये मरेंगे यह शान है तो सब कुछ ॥

खंजर चले चले गर, उफ भी नहीं करेंगे ।
परतन्त्रता में रह कर बस मान है तो सब कुछ ॥

आवे अजल भले ही फिर भी न हम डरेंगे ।
डर कर न हम हटेंगे यह आन है तो सब कुछ ॥

वीणा का तार चाहे, बिलकुल न राग छेड़े ।
जीवन का तार फिर भी, गावेगा गान सब कुछ ॥

मजहब जुदा है लेकिन, अहले वतन सभी हैं ।
तन, प्राण, धन, वतन पर कुरबान है तो सब कुछ ॥

मरना वतन पै सीखे, जीना वतन पै सीखे ।
इन्सान में अगर यह अरमाण है तो सब कुछ ॥

अक्सीर सियालकोटी द्वारा संग्रहीत, ऐंग्लो ओरियन्टल प्रेस, लाहौर से मुद्रित ; "स्वराज्य की गूंज" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 829—830 ।

ओउम् नाम का प्याला

पीकर ओउम् नाम का प्याला हो जा तू मतवाला ।। टेक ।।

पी सकता है इस प्याले को क्या अदना क्या आला ।
हिन्दु मुसलमान ईसाई गोरा हो या काला ।। 1 ।।

निर्भय धर्म वीर बन जाता इसका पीने वाला ।
डरा नहीं सकते फिर उसको तोप तमंचा भाला ।। 2 ।।

दयानंद ने पीकर इसको मां का संकट टाला ।
अंधकार अज्ञान मिटाकर कर दिया ज्ञान उजाला ।। 3 ।।

श्रद्धानंद वीर के दिल में जली इसी की ज्वाला ।
देश जाति की सेवा का प्रण मरते दम तक पाला ।। 4 ।।

इसको पी पंजाब केशरी बना लाजपत लाला ।
लेखराम ने इसको पीकर अपना होश संभाला ।। 5 ।।

जिसने भी अपने जीवन में इसे "सिंह कवि" ढाला ।
उसी धर्मधारी के गले में पड़ी विजय की माला ।। 6 ।।

जोरावर सिंह जी "सिंह कवि" द्वारा लिखित तथा आर्य प्रिंटिंग एण्ड पब्लिसिंग हाऊस लखनऊ से मुद्रित, "सिंह-नाद भाग-7" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 777 ।

उठो नौजवानों

भारत के नौजवानों ! मैदान-ए-जंग आओ ।
बन देश-प्रेमी अपना, जीवन सफल बनाओ ।।

वे वीर त्यागी अपना, कर्तव्य कर रहे हैं ।
है राह उनकी सीधी, उस पर कदम बढ़ाओ ।।

है कौन शक्ति ऐसी, जो तुमको रोक लेगी ।
गर एक साथ होकर बल अपना तुम दिखाओ ।।

भय त्याग दो अभय बन, स्वातन्त्र जंग छेड़ो ।
भू मां को अपनी वीरो ! बंधन तुम छुड़ाओ ।।

उमाशंकर दीक्षित द्वारा प्रकाशित तथा विजय प्रेस, प्रयाग से मुद्रित, "स्वदेशी गान" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 785—787 ।]

1 D of A/85—6

नौजवानों की तमन्ना

मुर्दा भारत को जिला जायेंगे मरते मरते ।
नाम जिन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते ॥

हमको कमजोर समझ बैठे हमारे दुश्मन ।
उनका अभिमान मिटा जायेंगे मरते मरते ॥

जुल्म करती है हिन्द पर नौकरशाही ।
उसकी बदचाल मिटा जायेंगे मरते मरते ॥

दिलों पर दुश्मनों के अपनी जवां मर्दी से ।
हिन्द का सिक्का बिठा जायेंगे मरते मरते ॥

जेलखाने की भी खुश होके बढ़ायें रौनक ।
एक क्या लाखों बना जायेंगे मरते मरते ॥

मातृ-भूमि के लिये जान निछावर कर दें ।
सबक भारत को पढ़ा जायेंगे मरते मरते ॥

हैं तो ना चीज मगर इतनी जुरत रखते हैं ।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायेंगे मरते मरते ॥

उमाशंकर दीक्षित द्वारा प्रकाशित तथा विजय प्रेस, प्रयाग से मुद्रित, "स्वदेशी गान" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 785—787 ।

चाहिए

(श्री दिनेश प्रसाद वाथम)

क्रान्ति के मैदान में खुश होके आना चाहिए ।
सत्य-आग्रह के लिये तन मन लगाना चाहिए ।।

देश-सेवा में लगाना प्राण की बाजी पड़े ।
तो खुशी से हम सबों को सिर कटाना चाहिए ।।

देश सेवक सह रहे कष्ट भारी आजकल ।
साथ दे उन सज्जनों का दुख बटाना चाहिये ।।

दुख सहे बिन भाइयों का दुख कैसे दूर हो ।
स्वार्थ साधन से सबों को दिल हटाना चाहिए ।।

तोड़ दो जंजीर अब तो दासता की मित्रवर ।
पाठ आजादी का अब सबको पढ़ाना चाहिए ।।

किन्तु हिंसा का समय हरगिज नहीं है भाइयो ।
नम्रतायुत सत्य आग्रह को निभाना चाहिए ।।

अब हटाओ अपने मन से बैर भावों को "दिनेश" ।
संगठन कर प्रेम से सबको मिलाना चाहिए ।।

गोविन्द राम गुप्त रहबर द्वारा प्रकाशित तथा मार्तण्ड प्रेस, दिल्ली से मुद्रित, "सरोजनी सन्देश" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 740—741 ।

पदवी वालों ने

दुश्मन का डंका भारत में, बजवा दिया पदवी वालों ने ।
लायक स्वराज के मुल्क नहीं, समझा दिया पदवी वालों ने ।।

खुद बन गुलाम परदेशी के, घर फूंक तमाशा देखें ये ।
औरों को स्वाद गुलामी का, चखवा दिया पदवी वालों ने ।।

तनख्वाह नहीं फूटी कौड़ी, भरता है पेट चुगलियों में ।
बे-पैसे के नौकर बनना, सिखला दिया पदवी वालों ने ।।

बे-मांगी रायें दे देकर, ये राय बहादुर बन बैठे ।
गांधी को पागल, दीवाना, बतला दिया पदवी वालों ने ।।

झंडा राष्ट्रीय जहां पर भी, देखा फहराता मर्दाना ।
चट चल अपने चाचा घर, उकसा दिया पदवी वालों ने ।।

कइयों को जेल दिला करके, बिछुड़ा कर रिश्तेदारों से ।
खादी धारण में बदचलनी, लिखवा दी पदवी वालों ने ।।

अंग्रेजों की नौकरशाही, काफी थी तुम्हें कुचलने में ।
शह देने को अपनी पल्टन, बनवा ली पदवी वालों ने ।।

सरकार प्रजाद्रोही जो है, ये राजभक्त कहलाते हैं ।
हां ! प्रजा द्रोह में राजभक्ति, दिखला दी पदवी वालों ने ।।

कुसलावें जनता को, मिल कर डायर के भाईबन्दों से ।
दो नावों पर टांगे रखना, सिखला दिया पदवी वालों ने ।।

ये हैं दलाल अंगरेजों के, कल पुर्जे नौकरशाही के ।
घर फोड़ूपन का पंथ नया, चलवा दिया पदवी वालों ने ।।

वेशी बाना देशी कपड़े, देशी बातें जलसे देशी ।
इनसे नफरत करना सीखा, इन पापी पदवी वालों ने ।।

यती यतनलाल द्वारा संग्रहीत तथा केसरी प्रेस, आगरा से मुद्रित, "राष्ट्रीय शंखनाद" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 681—683 ।

रणभेरी

प्रिय आजादी के मतवाले, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ।
बलि वेदी पर चढ़ने वाले, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

आजादी ध्येय हमारा है, सत्याग्रह शस्त्र सम्हारा है ।
अमरत्व कवच दृढ़ धारा है, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

हम नित्य सत्य का मान करें, जीवन अपना बलिदान करें ।
भारत पर सब कुरबान करें, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

दुनियां से नाता तोड़ दिया, ममता माया को छोड़ दिया ।
मन रण-क्षेत्र से जोड़ लिया, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

भारत पर वारे जायेंगे, हम सूखे चने चबायेंगे ।
पीछे नहिं पैर हटायेंगे, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

खादी का केसरिया बाना, पहना मरदाना प्रण-ठाना ।
आजाद रहें या मर जाना, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

तैयार जेल में जाने को, धुनि जंजीरों में गाने को ।
भारत स्वाधीन बनाने को, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

घातक ले लोपें खड़े रहें, हम छाती खोले अड़े रहें ।
फांसी के तख्ते चढ़े रहे, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

हंसते-हंसते मर जायेंगे, मर जायेंगे फिर आयेंगे ।
आकर फिर युद्ध मचायेंगे, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

गिर्राज किशोर अग्रवाल द्वारा प्रकाशित तथा केसरी प्रेस, आगरा से मुद्रित, "महात्मा गांधी का चक्र" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 930 ।

हुंकार

जवानों उठो उठो तत्काल,
न झुकने देना भारत भाल । टेर ।।

देश में इतनी है हलचल,
पहनते फिर भी तुम मल मल ।।

कहा तुम्हें अमूल्य पल पल,
कहो तुम खोद रहे दल दल ।।

पहनना मत परदेशी माल,
न झुकने देना भारत भाल ।।

गुलामी आजादी को तोल,
बताओ किस को लोगे मोल ।।

देखना अपना हृदय टटोल,
न जाना अपने व्रत से डोल ।।

बोलना अपने होश संभाल,
न झुकने देना भारत भाल ।। 2 ।।

हमारा शान्त सत्य संग्राम,
न इस में हिंसा का कुछ काम ।

यदि चाहते हो तुम अपना नाम,
तो चलो, न बस अबलो विश्राम ।।

खड़ा है सिर पर काल कराल,
न झुकने देना भारत भाल ।। 3 ।।

जहां पर चले तीर तलवार,
वहां चुप सहते जाना वार ॥
न हटना पीछे हिम्मत हार,
वहीं देना तन, मन, धन वार ॥
जीत कर लाना विजय विशाल,
न झुकने देना भारत भाल ॥ 4 ॥

(र० श्री कण्टक)

मंत्री, नगर लोक परिषद् फलोदी द्वारा प्रकाशित तथा राजस्थान प्रेस, अजमेर से मुद्रित, "प्रभात फेरी गायन व नारे" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 607 ।

उठो जवानो

उठो नौजवानो न रहने कसर दो,
विदेशी का अब तो बहिष्कार कर दो ॥

मुअस्सर जहां नहीं पेट भर है दाना,
गुलामी में मुश्किल हुआ सर उठाना ॥

मंगा कर विदेशी वहां धन लुटाना,
तुम्हें चाहिये दिल में कुछ शर्म खाना ॥

मिटा देश जाता है इसकी खबर लो,
विदेशी का अब तो बहिष्कार कर दो (1)

बहुत सो चुके और लम्बी न तानों,
न यों देश के खूं में हाथ अपने सानो ॥

बहुत कर लिये पाप अब मानो,
चलो देश का उत्थान आप ठानो ॥

स्वदेशी से भारत का भण्डार भर दो,
विदेशी का अब तो बहिष्कार कर दो (2)

मंत्री, नगर लोक परिषद् फलोदी द्वारा प्रकाशित तथा राजस्थान प्रेस, अजमेर से मुद्रित, "प्रभात फेरी गायन व नारे" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 607 ।

छोड़ दे

ऐ मेरी सरकार अब तू जुल्म ढाना छोड़ दे ।
हम सबों के देश भारत का खजाना छोड़ दे ॥

क्या किया हमने खता जो दे रहा हमको सजा ।
इन दीन दुखियों बेकसों का आशियाना छोड़ दे ॥

बादशाही काम तो हरगिज़ नहीं व्यौपार का ।
हम सबों के देश को दुखिया बनाना छोड़ दे ॥

दुनिया में तो यह मुल्क भारत सुख का घर जन्नत सा था ।
दावा नहीं इसमें तेरा यह है बिराना छोड़ दे ॥

बहुत भारी नींद से भारत निवासी है जगे ।
जग गये तो जग गये इनको सुलाना छोड़ दे ॥

हिन्दू मुसलमां दो बिरादर हैं निवासी हिन्द के ।
हम सबों को पालसी बुद्धू दिखाना छोड़ दे ॥

बुद्धू राम द्वारा लिखित तथा शिशु प्रेस, इलाहाबाद से मुद्रित, "राष्ट्रीय तरंग" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 690-691, 983 ।

लायेगा रंग यह दिन, खूने रवां हमारा

मकतल बना हुआ है हिन्दोस्तां हमारा ;
सड़कों पे बह रहा है, खूने रवां हमारा ।

किस नींद में हो जागो, किस ख्वाब में हो चौंको ?
आलस से मिट रहा है नामों निशां हमारा ।

तुम तो चलाओ खंजर, शिकवों से भी गये हम ;
मुंह तक न खुलने पाये क्यों मेहर्बां हमारा ?

पहिले ही कर चुके हो, कल्बो जिगर को छलनी ;
ले आओ क्या करेंगे, तीरों कमां हमारा ।

हिन्दोस्तां में कैसी यह आग लग रही है ;
दोजख बना हुआ है जन्नत-निशां हमारा ।

माना कि जानो दिल पर, है आपकी हुकूमत ;
पर तुम से भी क़वी है एक हुक्मरां हमारा ।

नामुन्सफी तो देखो, वह इसलिए है दुश्मन ;
क्यों उनको चाहता है पीरो जवां हमारा ।

फाकों से मर रहे हैं, जेलों में भेज भी दो,
वां पेट तो भरेगा जाने - जहां हमारा ।

बस हो चुकीं जफायें, बेहतर है कत्ल कर दो ;
है तंग जिन्दगी से, तिफलो जवां हमारा ।

आंखें चढ़ा चढ़ा कर, नजरों से गिर गये तुम ;
दिल फिर गया है तुम से, अब तो मियां हमारा ।

आले हसन न घबरा नैरंगिये फलक से ;
लायेगा रंग एक दिन खूने-रवां हमारा ।

मतवाला मण्डल द्वारा प्रकाशित, 20वीं सदी प्रिंटिंग प्रेस, मिर्जापुर से मुद्रित, "राष्ट्रीय गीत" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 661—663 ।

प्रतिज्ञा

ऐ जन्म भूमि भारत, तेरे लिये मरूंगा ।
तेरे लिये जिऊंगा, सुख सम्पदा तजूंगा ॥

आवे विपद अनेकों, दुख झंझटें कठिन भी ।
दुर्दिन घटा भी लख कर, विचलित कभी न हूंगा ॥

सत्पथ कठोर यद्यपि, बांधा वो विघ्न भय है ।
लालच हवाके झोंके, तो भी अटल रहूंगा ॥

निःसीम है विपद निधि, केवट रहित, नैया ।
जननी ! मैं निज भरोसे, पतवार धर चलूंगा ॥

साहस कवच को धर कर, असि धर्म का पकड़कर ।
मन न्याय पूर्ण दृढ़ कर, आगे सदा रहूंगा ॥

जननी ! यही प्रतिज्ञा, है प्रेम से हृदय की ।
प्यारी स्वतन्त्रता का, सेवक सदा रहूंगा ॥

या मृत्युकाल माता, तेरा सुनाम जप कर ।
तेरी सुगोद ही में, यह देह भी तजूंगा ॥

मतवाला मण्डल द्वारा प्रकाशित, 20वीं सदी प्रिंटिंग प्रेस, मिर्जापुर से मुद्रित, "राष्ट्रीय गीत" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 661—663 ।

वतन के वास्ते

क्या हुआ गर मर गये अपने वतन के वास्ते ।
बुलबुलें कुर्बान होती है चमन के वास्ते ॥

तर्स आता है तुम्हारे हाल पै ऐ हिन्दियों ।
गैर के मौहताज हो अपने कफन के वास्ते ॥

देखते हैं आज जिसको शाद है, आजाद है ।
क्या तुम्हीं पैदा हुये रंजो मेहन के वास्ते ॥

दर्द से अब बिलबिलाने का जमाना हो चुका ।
फिक्र करनी चाहिये मर्जे कुहन के वास्ते ॥

हिन्दुओं को चाहिए अब कस्द काबे का करें ।
और फिर मुस्लिम बढ़ें गंगो जमन के वास्ते ॥

अवस्थी ब्रादर्स द्वारा प्रकाशित तथा नारायण प्रेस, प्रयाग से मुद्रित, "राष्ट्रीय गीत" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 664–665 ।

भारत के रहने वालो

क्यों सो रहे हो अब तक, भारत के रहने वालो ?
अपनी पुरानी हालत, पर भी नजर तो डालो ।

अर्जुन व राम ने था, क्या क्या सितम उठाया ?
उनका सुयश बढ़ाओ, हिन्दोस्तान वालो ।

रावण ने निज प्रजा पर, क्या क्या थे जुल्म ढाये ?
पर नाम भी नहीं है, ऐ याद रखने वालो ।

वो ही रहीम अब भी, दरम्यान में है देखो ।
लेगा खबर तुम्हारी, दुख के उठाने वालो ।।

हर्गिज न खौफ खाना, गन औ मशीनगन का ?
करने दो जुल्म उनको, ऐ आत्म शक्ति वालो ।

चुपचाप सहलो वीरो, सीने पै गन की गोली ?
हो "आह" भी न मुख से, ऐ खून रखने वालो ।

बहनें भी पिट रही है, डंडो औ लाठियों से ?
इज्जत हो क्यों गंवाते, इज्जत पै मरने वालो ।

कितने ही मर मिटे हैं, कितने पड़े हैं घायल ।
उन पर निगाह डालो, आजाद रहने वालो ?

इतने सितम पै क्यों तुम, बे होश से पड़े हो ?
क्यों मौत से हो डरते, ऐ जुल्म सहने वालो ?

मरने के बाद भी तो, होगा यहीं पै आना ।
फिर क्यों हो हिचकिचाते गीता के पढ़ने वालो ?

बलभद्र प्रसाद गुप्ता, विशारद (रसिक) द्वारा लिखित तथा मिश्रा प्रिंटिंग वर्क्स, प्रयाग से मुद्रित, "बम के गोले" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 951-952 ।

बेकशों का ईश्वर

कौन कहता है मुसीबत में कोई यार नहीं ।
उसका हामी है खुदा जिसका मददगार नहीं ।।

हमसे मिलने के लिये आप जो तय्यार नहीं ।
हम भी खाते हैं कसम तुम से सरोकार नहीं ।।

हमसे जब तक थी गरज और थे अब हैं कुछ और ।
कल वफादार थे हम आज वफदार नहीं ।।

जिस्म फानी को अगर कैद भी किया तो क्या ।
रूह कहते हैं जिसे वह तो गिरिफ्तार नहीं ।।

जेल तो चीज ही क्या अपने वतन के खातिर ।
सर भी दे दूंगा खुशी से मुझे इन्कार नहीं ।।

आदि में मुल्क हैं खादमियत है पेशा उनका ।
हम गुलामी की वजारत के तलबगार नहीं ।।

तुमने रक्खा है कदम जंग में आगे "मन्ना" ।
कमर में तीर नहीं हाथ में तलवार नहीं ।।

"मन्नालाल" ढिढोरिया लखनऊ

अवधविहारी लाल शर्मा द्वारा संपादित तथा भारतभूषण प्रेस, लखनऊ से मुद्रित,
"स्वतन्त्र भारत का शंखनाद" नामक पुस्तक से
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।
अवाप्ति संख्या 926 ।

भगत सिंह

फांसी का झूला झूल गया मर्दाना भगत सिंह ।
दुनियां को सबक दे गया मस्ताना भगत सिंह ॥

राजगुरु से शिक्षा लो दुनिया के नवयुवको ।
सुखदेव को पूछो कहां मस्ताना भगत सिंह ॥ फांसी ॥

रोशन कहां अशफाक और लहरी कहां बिसमिल ।
आजाद से था सच्चा दोस्ताना भगत सिंह ॥ फांसी ॥

स्वागत को वहां देवगण में इन्द्र के होंगे ।
परियां भी गाती होंगी यह तराना भगत सिंह ॥ फांसी ॥

दुनियां को हरएक चीज को हम भूल क्यूं न जायें ।
भूले न मगर दिल से मुस्कराना भगत सिंह ॥ फांसी ॥

भारत के पत्ते पत्ते में सोने से लिखेगा ।
राजगुरु, सुखदेव और मस्ताना भगत सिंह ॥ फांसी ॥

ऐ हिन्दियों सुनलो जरा हिम्मत करो दिल में।
बनना पड़ेगा सबको अब दीवाना भगत सिंह ॥ फांसी ॥

सत्यनारायण धौरिया द्वारा प्रकाशित तथा अभ्युदय प्रेस, प्रयाग से मुद्रित, "शहीदों की यादगारी भाग II" नामक पुस्तक से।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 935—937 ।

काकोरी के शहीद

थे जंगे आजादी में काकोरी के शहीद ।
फांसी पै गये झूल वो काकोरी के शहीद ।।

चलती वो ट्रेन में था सरकार का खजाना ।
वीरों में दिलावर थे वो काकोरी के शहीद ।।

नाना धू धू पंथ का खाका लिया था खीज ।
देते थे डांका ट्रेन में काकोरी के शहीद ।।

शहे जहां पुर रहते थे असफाक उल्ला खां ।
विशमील राम प्रसाद थे काकोरी के शहीद ।।

काशी के जीतेन्द्र लाडिले और बक्शोजो भी आये थे ।
धोके से पकड़े गये वो काकोरी के शहीद ।।

आजादी के दीवाने से वो शेरे दिल मजबूत ।
करते थे काम जोरों में काकोरी के शहीद ।।

वतन के नवयुवकों से करते थे वे अपील ।
होते हैं रुकस्त वतन से काकोरी के शहीद ।।

उमाशंकर दीक्षित द्वारा प्रकाशित तथा सरजू लाल राजा प्रेस, इलाहाबाद से मुद्रित "तौरंग गर्जना" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति, संख्या 938--940 ।

जेल यात्रा

खुद जेल में जाकर बता दिया स्वराज्य का मन्दिर जेल में है ।
सिवा जेल के रस्ते कौन से हैं, जब कौम का रहबर जेल में है ॥

सब मुल्क के आदिल औ दिमाग, हिन्दोस्तां के चश्म चिराग।
हर एक खिरद वर जेल में है, यानी हर लीडर जेल में है ॥

हर रिश्वत खोर व चुगुल खोर हर जालिम ऐश उड़ाता है ।
बदतर से बदतर मौज में हैं, बेहतर से बेहतर जेल में है ॥

जिस दिल में थी बैराग्य निहां, थी हुब्बे वतन की आग जहां ।
जो शख्श भी थे बेजाग यहां, उस शख्श का बिस्तर जेल में है ॥

खुद काम हो तुम बदनाम हो तुम, नाकाम हो तुम वो गुलाम हो तुम।
हैं गुलाम ही रहते कालिज (बंगलों) में, आजाद का घर तो जेल में है ॥

सुख भोग तजो भाई अब तो, संग्राम छिड़ा आजादी का ।
हैं गुलाम ही सोते गद्दों में, जब देश की नेता जेल में है ॥

क्या उलटे तरीके निकले हैं, इन्सानों के एजाज के अब ।
सब कंकड़ पत्थर सड़कों पर, भाई (लाल) जवाहर जेल में हैं ॥

हैं शेर बबर भारत का अब, जिन्दाने फरंग के पिंजड़े में ।
लो लाठी गोली सीने में, जब गांधी महात्मा जेल में है ॥

उमाशंकर दीक्षित द्वारा प्रकाशित तथा सरजू लाल राजा प्रेस, इलाहाबाद से मुद्रित, "नौरंग गर्जना" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 938—940 ।

डूबती है चन्द दिनों में आबरू बेहवार की

डूबती है चन्द दिनों में आबरू बेहवार की ।
जै मची चहूं ओर भारत गान्धी और सरदार की ।।

बेगुनाहों पर बमों की बेखतर बौछार की ।
अब दे रहे हैं धमकियां, बन्दूक और तलवार की ।।

बाग जलियां में निहत्थों पर चलाई गोलियां ।
पेट के बल था रेंगाया जुल्म को हत्यार को ।।

हम गरीबों पर किये जितने सितम बेइमतहां ।
याद भूलेंगे नहीं उस भाई बदकार की ।।

या तो हमहीं मर मिटेंगे या तो लेंगे स्वराज ।
होती है इस बार हुज्जत खतम अब हरबार की ।।

शोर आलम में मचा है लाजपत के नाम का ।
ख्वार करना उनको चाहा अपनी मिट्टी खारकी ।।

जिस जगह पर बन्द होगा शेर नर पंजाब का ।
आबरू बढ़ जायगी उस जेल के दीवार की ।।

जेल में भेजा हमारे लीडरों को बेकसूर ।
भाई हमारे ने अच्छी न्याय की भरमार की ।।

खून मचलूम की सरयुग अब तो गहरी धार ले ।
डूबती है चन्द दिनों में आबरू बेहवार की ।।

कालीप्रसाद महादेव लाल द्वारा प्रकाशित तथा सेन्ट्रल प्रिंटिंग प्रेस, मुरादपुर, पटना से मुद्रित
"स्वराज्य गीत गुनगान" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 851 ।

बांध ले बिस्तर फिरंगया राज अब जाने को है

बांध ले बिस्तर फिरंगया राज अब जाने को है ।
जुल्म काफी कर चुके पबलिक बिगड़ जाने को है ॥

गोलियां तो खा चुके अब तोप भी हम देख लें ।
मर मिटेंगे देश पर फिर इन्कलाब आने को है ॥

वीर नवाहर जी हैं जेल में कौम के वह ना खुदा ।
जेल खाना तोड़ देंगे यह हवा चलने को है ॥

कह रहे हैं बाबा गांधी मान लो शर्तें तमाम ।
वरना फिर नक्शा हुकूमत का पलट जाने को है ॥

आ गये हैं अब पिटेल भी कारजारे हिन्द में ।
देखना राज शाही बे नकाब होने को है ॥

लिखदई गांधी ने चिट्ठी आखिरी इरबन के नाम ।
अब संभल जा तू फिरंगी बरना निशां मिटने को है ॥

नालची ने वार अपना कर दिया इंग्लैण्ड पर ।
देखना अब मानचेस्टर भी उजड़ जाने को है ॥

कुंवर प्रताप चंद (आजाद) द्वारा सम्पादित तथा आनन्द प्रेस, बरेली से मुद्रित, "तराना-ए-आजाद" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 874 ।

नमक मुल्क का अदा कर दे

नौजवां तू है वतन को भी नौजवां कर दे ।
जिंदगी तुझमें है सरसब्ज गुलिस्तां कर दे ।।

दिखादे जौहरे अजमत अजीब आलम को ।
बिना हथियार के तोपों को नातवां कर दे ।।

पयामे जंगे अहिंसा का सुना दे घर घर ।
जोशे मरदानगी रग रग में खूं रवां कर दे ।।

खाक से हिन्द के पैदा हों बहादुर वो दिलेर ।
ताकते रूह फिर प्रहलाद की अयां कर दे ।।

खुद फना होके फना कर दे सितम जोरो जफा ।
सरकटा करके सर आजादी का मैदां कर दे ।।

मारदे खौफे खतर मार न किसी को कभी ।
इश्क आजादी में तन जान को कुरबां कर दे ।।

नमक हराम है जो मुल्क के हमराह न हो ।
नमक बनाके नमक मुल्क का अदा कर दे ।।

(चकोर) हजरते गांधी के कौल पर डट कर ।
हिन्द आजाद कर दुनिया को शादमां कर दे ।।

रामदास जायसवाल द्वारा प्रकाशित तथा कुमार प्रेस, गोरखपुर से मुद्रित, "बिजली" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 316 ।

भारत के लाल दोनों

बे खुद फना पै आशिक, भारत के लाल दोनों ।
हैं धर्म के बहाने, होते हलाल दोनों ॥

गो एक ही है ईश्वर, सारे जहां का पालक ।
दीनो धरम का मालिक नाशक-दयाल दोनों ॥

मस्जिद में वह खुदा है, मन्दिर का राम वह है ।
मक्का वो काशी उस क, घर हैं विशाल दोनों ॥

मन्दिर में गर अजां हो, मस्जिद में आरती हो ।
उस को नहीं करेंगी, सूरत मलाल दोनों ॥

यह मजहबी लड़ाई, अय्यामें-अबतरी में ।
हाथों पे देखना है, आंखें निकाल दोनों ॥

मुल्ला वो पंडितों की, जब तक बनी रहेगी ।
तब तक रहेंगे फुटते, लड़ कर कपाल दोनों ॥

अन्धी-यकीनी अपनी, रक्खो कबर चिता में ।
सुन लो ऐ हिन्दु-मुस्लिम, के नौनिहाल दोनों ॥

क्यों धर्म वो खुदा को, बदनाम कर रहे हो ।
करो ऐ (चकोर) मिल कर, भारत निहाल दोनों ॥

"चकोर"

रामदास जायसवाल द्वारा प्रकाशित तथा कुमार प्रेस, गोरखपुर से मुद्रित, "बिजली " नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 316 ।

तुम राम कहो वो रहीम कहें दोनों की गरज अल्लाह से है

तुम राम कहो वो रहीम कहें दोनों की गरज अल्ला से है ।
तुम दीन कहो वो धर्म कहें मन्शा तो उसी की राह से है ॥

तुम इश्क कहो वो प्रेम कहें, मतलब तो उसी की चाह से है ।
वह जोगी हो तुम सालिक हो मकसूद दिले आगाह से है ॥

क्या लगता है मूरख बन्दे यह तेरी खाम खयाली है ।
है पेड़ की जड़ तो एक वही, हर मजहब एक एक डाली है ॥

बनवाओ शिवाला या मसजिद है ईंट वही चूना है वही ।
मेमार वही मजदूर वही मिट्टी है वही चूना है वही ॥

तकबीर का जो कुछ मतलब है, नाकूस का भी मन्शा है वही ।
तुम जिनको नमाजे कहते हो, हिन्दू के लिये पूजा है वही ॥

फिर लड़ने से क्या हासिल है, जीफहम हो तुम नादान नहीं ।
भाई प दौड़े गुर्रा कर वो हो सकते इनसान नहीं ॥

क्या कत्ल वो गारत खूंरेजी तारीफ यही ईमान की है ।
क्या आपस में लड़कर मरना, तालीम यही कुरआन की है ॥

इन्साफ़ करो तफ़सीर यही क्या वेदों के फ़रमान की है ।
क्या सचमुच यह खूं खारी की आला खसलत इनसान की है ॥

तुम ऐसे बुरे आमालों पर कुछ भी तो खुदा से शर्म करो ।
पत्थर जो बना रखा है शहीद इस दिल को जरा तो नर्म करो ॥

चिरंजी लाल वर्मा द्वारा संग्रहीत तथा श्री यंत्रालय, काशी से प्रकाशित, "आजादी की आग" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 204 ।

इन शेरों के ख़ूं का असर देख लेना

किया जुल्म तुमने बहुत देख लेना ।
हमारा भी कलवो जिगर देख लेना ।

ये हैं वे वफा या फिदाये वतन है ।।
अभी क्या है तुम वक्त पर देख लेना ।

मुबारक़ हो शमशेर तुमको उठाना ।।
तो हमको भी सोना सिपुर देख लेना ।

हरा होगा जालिम न किश्ते तमन्ना ।।
तशद्दुद का अपने असर देख लेना ।

बिगड़ जाएगा बागे आलम में एक दिन ।।
निज़ाम अपना ओ बे खबर देख लेना ।

डुबा देगी एक दिन किश्ती तुम्हारी ।।
मेरी चश्मे तर की लहर देख लेना ।

तेरी शाख़ सर सब्ज होगी न क़ातिल ।।
इन शेरों के ख़ूं का असर देख लेना ।

उसे बे खता हुस्ने कातिल ने मारा ।।
कोई जुर्म था आंख भर देख लेना ।

उसे तुम वतन का फिदाई समझना ।।
जिसे खुश्क लव चश्म तर देख लेना ।

जो तक़लीफ मगरिब किया तुमने शर्मा ।।
तो मिट्टी में अपने ही ज़र देख लेना ।

पं० विश्वनाथ शर्मा द्वारा संग्रहीत तथा श्री प्रेस बनारस से मुद्रित, "बलिदान की चिंगारी" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 262--264 ।

स्वाधीनता की पुकार

न लेंगे चैन दमभर हम बिना स्वाधीनता पाये ।
खुशी से दिल कड़ा करके सताओ जितना जी चाहे ।।

अभी लायक नहीं हो तुम न देने की ये बातें हैं ।
मगर हम लेके छोड़ेंगे बताओ जितना जी चाहे ।।

चलाओ डन्डे बन्दूकें निकालो तुम हवस दिल की ।
हमारे भाई से हमको पिटाओ जितना ी च ।।

हमारी जान जाये देशहित गौरव समझते हैं ।
खरा सोना कसौटी पर कसाओ जितना जो चाहे ।।

हमारी गूंजती है जय तुम्हारी जय कहां है अब ।
तसल्ली के लिये डंडे बजाओ जितना जी चाहे ।।

अब हम कर्तव्य पथ से एक तिल भी टल नहीं सकते ।
ये घुड़की बन्दरों की सी दिखाओ जितना जी चाहे ।।

पं० कन्हैया लाल दीक्षित "इन्द्र" द्वारा संग्रहीत तथा भारतभूषण प्रेस लखनऊ से मुद्रित, "आजादी की उमंग" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 213—215 ।

मेरी आरजू

जिन्दगी की गर मुझे दुनियां में यह तावीर हो ।
हाथ में हो हथकड़ी और पांव में जंजीर हो ॥ 1 ॥

मौत की रक्खी हुई आगे मेरी तस्वीर हो ।
और गर्दन पर धरी जल्लाद ने शमशीर हो ॥ 2 ॥

हां भयानक से भयानक भी मेरा आख़ीर हो ।
पेट में खंजर दुधारा औ जिगर में तीर हो ॥ 3 ॥

अलग़रज जो कुछ भी मुमकिन हो मेरी तहक़ीर हो ।
मुल्क मेरा आज़ाद हो लेकिन मेरी तक़सीर हो ॥ 4 ॥

मैं कहूंगा फिर भी आजादी का शैदा हूं मैं ।
फिर करूंगा काम दुनियां में अगर पैदा हूं मैं ॥ 5 ॥

रनछोड़ दास खत्री द्वारा संग्रहीत तथा गोकुल प्रेस, बनारस से मुद्रित, "चमकता स्वराज्य" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 333—335 ।

दमन का दिवाला

दिवाला शीघ्र निकलेगा अरे थोथे दमन तेरा ।
खिजां से खूब उजड़ेगा अरे जालिम चमन तेरा ।।

सताले और थोड़े दिन से बेदिल बे गुनाहों को ।
यहां से शीघ्र ही होगा अरे गर्वी गमन तेरा ।।

हमें लाचार कर तूने झुकाया खूब चरणों में ।
हमीं विपरीत अब इसके विलोकेंगे नमन तेरा ।।

अरे कायर निहत्थों को रेंगाया पेट के बल क्यों ।
लखेंगे शीघ्र ही हम भी अरे पापी पतन तेरा ।।

बहुत अब कर चुका शासन यहां से अब उठा आसन ।
हमारा देश है भारत नहीं है यह वतन तेरा ।।

दबाले और थोड़े दिन दमनकारी तू दुखियों को ।
निहत्थे निर्बलों की आह से होगा निधन तेरा ।।

दमन से रह नहीं सकता कभी भी यह अमन कायम ।
करेगा यह दमन ही अन्त में निश्चय शमन तेरा ।।

मिलेगी आत्मबल को जय दमन तेरे पशु बल पर ।
चकित संसार देखेगा मिटेगा जब वतन तेरा ।।

रमछोड़ दास खत्री द्वारा संग्रहीत तथा गोकुल प्रेस, बनारस से मुद्रित, "चमकता स्वराज्य" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 333—335 ।

जै जै प्यारी भारत माता जननी नाम तुम्हारा है

जै जै प्यारी भारत माता जननी नाम तुम्हारा है ।
अपनी गोद बिठाके तू पालन करे हमारा है ॥

तेरे पवित्र चरणों में माता अपना शीश झुकाऊं मैं ।
कौन से गुणों को तेरे माता यहां गवाऊं मैं ॥

सर्व सुखों की दाता तू है नाम तेरा क्या प्यारा है ।
अपनी गोद बिठा कर के तू पालन करे हमारा है ॥

रंग बिरंगे फूल खिले हैं फलों का कोई शुमार नहीं ।
मोर पपीहा खुशी से नाचें कोइल कूके डार कहीं ॥

शिरपर सोहे छतर हिमालय नहीं जिसका पारावार है ।
अपनी गोद बिठाकर पालन करे हमारा है ॥

हुए यहां पर वेद पाठी और ऋषि ब्रह्मचारी ।
प्रण को पालने वाले धर्म धर निडर धनुषधारी ॥

निरमल सुन्दर प्यारी हां अमृत की गंगा धारा है ।
अपनी गोद बिठाकरके तू पालन करे हमारा है ॥

तुझ से ही हम बने माता तुझमें ही मिल जाना है ।
अदना आला जो भी हैं सबने हां तुझ में मिल जाना है ॥

"द्वारा" का सर कदम तेरे पै झुकता बारम बारा है ।
अपनी गोद बिठा कर के तू पालन करे हमारा है ॥

गोविन्द राम गुप्त द्वारा संग्रहीत तथा मार्तण्ड प्रेस दिल्ली से मुद्रित, "इन्कलाब की लहर" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 766-767 ।

विदेशी वस्त्रों की विदा

टलो यहां से विदेशी वस्त्रो न अब तुम्हारी है चाह हमको ।
तुम्हीं से भारत हुआ है गारत किया है तुमने तबाह हमको ॥

उद्योग धन्धे सभी हमारे किये हैं आकर विनष्ट तुमने ।
मिटा के चर्खे हमारे कर्घे है दी मुसीबत अथाह हमको ॥

कहां यहां की महीन मलमल पड़ा है ढाके में आज फाका ।
बने निकम्मे जुलाह कोरी मिला ये तुमसे गुनाह हमको ॥

तजेंगे तुमको सजेंगे तन पर पवित्र प्यारा स्वदेशी खद्दर ।
हमारे गांधी महात्मा ने ये दी है कामिल सलाह हमको ॥

रुई हमारी खरीद सस्ती उसी के कपड़े मढ़े हैं हम पर ।
हुये धनी तुम गरीब भारत दिखाई गारत की राह हमको ॥

बढ़ाई तुमने बेरोजगारी बनाया तुमने बेहाल भारत ।
पड़े हैं पेटों के आज लाले दिखाता मुश्किल निबाह हमको ॥

कहां है भारत की वह तिजारत रही दलाली ही देशभर में ।
जहां दिवाली है अब वहां पर दिखाती होली की दाह हमको ॥

हो धन्य गांधी महात्मा तुम चलाया चर्खे का चक्र फिर से ।
मिली तुम्ही से स्वदेश हितकी नवीन निर्मल निगाह हमको ॥

करोड़ों चर्खे चलाके कातेंगे सूत सुन्दर पवित्र अपना ।
स्वयं बुनेंगे उसी के कपड़े न अब तुम्हारी चाह हमको ॥

पं० कन्हैया लाल दीक्षित "इन्द्र" द्वारा संग्रहीत तथा भारतभूषण प्रेस, लखनऊ से मुद्रित, "आजादी की उमंग" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 213—215 ।

बहिष्कार कर दो

उठो हिन्द वालो न रहने कसर दो ।
विदेशी का अब तो बहिष्कार कर दो ॥

मयस्सर जहां पेट भर है न दाना ।
गुलामी में मुश्किल हुआ सर उठाना ॥

मंगा कर विदेशी वहां धन लुटाना ।
तुम्हें चाहिये दिल में कुछ शर्म खाना ॥

मिटा देश जाता है इसकी खबर लो ।
विदेशी का अब तो बहिष्कार कर दो ॥

संगाते विदेशी न अब भी हया है ।
कहो देश में शेष रह क्या गया है ॥

गरीबों को चूसा न दिल में दया है ।
तुम्हें तो यही काशी है या गया है ॥

कहीं देश द्रोही उन्हें यों नजर दो ।
विदेशी का अब तो बहिष्कार कर दो ॥

बहुत सो चुके और लम्बी न तानों ।
न यों देश के खून में हाथ सानों ॥

बहुत कर लिये पाप अब आप मानो ।
चलो देश उत्थान का ठान ठानो ॥

स्वदेशी से भारत का भंडार भर दो ।
बहिष्कार कर दो बहिष्कार कर दो ॥

पं० कन्हैयालाल दीक्षित "इन्द्र" द्वारा संग्रहीत तथा भारतभूषण प्रेस, लखनऊ से मुद्रित, "आजादी की उमंग" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 213—216 ।

देश भक्त वीर की गर्जना

तेरी इस जुल्म की हस्ती को ऐ जालिम मिटा देंगे ।
जबां से जो निकालेंगे वह हम करके दिखा देंगे ॥

भड़क उठेगी जब सीनये सोजा की दबू आतिश ।
तो हम इक सर्द आह भरकर तुझे जालिम जलादेंगे ॥

हमारे आहो नालों को तुम बेसूद मत समझ ।
जो हम रोने पर आयेंगे तो इक दरबा बहा देंगे ॥

हमारे सामने शक्ति है क्या इन जेल खानों की ।
वतन के वास्ते हम दार पर चढ़ कर दिखा देंगे ॥

हमारी फाका मस्ती कुछ न कुछ रंग लाके छोड़ेगी ।
निशां तेरा मिटा देंगे तुझे जब बददुआ देंगे ॥

हजारों देशभक्त अब कोमी परवाने हैं जिन्दा में ।
हम उनके वास्ते सब मालो जर अपना लुटा देंगे ॥

कुछ इस में राज था मुद्दत से जो खामोश बैठे थे ।
हम अब करने पे आये हैं तो कुछ करके दिखा देंगे ॥

अगर कुछ भेंट आजादी की देवी हमसे मांगेगी ।
समझ कर हम जहे किस्मत सब अपने सर चढ़ादेंगे ॥

नहीं मनजूर अब इज्जत हमें सरमायादारों की ।
बनाकर शाह नेहरू को सिंहासन पर बिठा देंगे ॥

"चिरंजी" लाल विद्यार्थी द्वारा संग्रहीत तथा पाठक एण्ड कम्पनी, दिल्ली से प्रकाशित, 'देश का राग" नामक पुस्तक से ।"

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 365—367 ।

भारत का बैज

बरदान यही दो हे भगवन, भारत मां का दुख दूर करें
बलवान बनें गुणवान बनें, सब विधि उसका भंडार भरें

गर दुख शोक कुछ आ जायें, सानंद उन्हें स्वीकार करें
विचलित होबें पग एक नहीं, विघनों का चकना चूर करें

बस विनय यही है हे भगवन, भारत मां का कल्याण करें
हंस हंस कर उसके चरणों पर न्यौछावर अपने प्राण करें । वरदान ।

कामीराम तिवारी द्वारा संग्रहीत तथा यूनियन जॉब प्रेस, इलाहाबाद से मुद्रित, "युवक गर्जना" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अभाप्रि संख्या 913 ।

मर जायेंगे

देश हित पैदा हुए हैं देश हित मर जायेंगे ।
मरते मरते देश को जिन्दा मगर कर जायेंगे ।

हमको पीसेगा फलक चक्की में अपनी कब तलक ।
खाक बनकर आंख में उसकी बशर कर जायेंगे ।

कर रही बादे-ए खिजां को बादे सर सर दूर क्यों ।
पेशवाए फसले गुल हैं खुद समर कर जायेंगे ।

खाक में हमको मिलाने का तमाशा देखना ।
तु मरेजी से नये पैदा शजर हो जायेंगे ।

नौ नौ आंसू जो रूलाते हैं हमें उनके लिये ।
अश्क के सैलाब से बर पा हशर हो जायेंगे ।

गरदिशे गरदाब में डूबें तो कुछ परवा नहीं ।
बहरे हस्ती में नई पैदा लहर कर जायेंगे ।

क्या कुचलते हैं समझ कर वह हमें बर्गे हिना ।
अपने खूं से हाथ उनके तर बतर कर जायेंगे ।

नक्शे पा हैं क्या मिटाता तू हमें जौरे फलक ।
रहबरी का काम देंगे जो गुजर कर जायेंगे ।

आर० एन० शर्मा द्वारा संग्रहीत तथा मार्तण्ड प्रेस दिल्ली से मुद्रित, "भारतमाता के जख्मी लाल" पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 288—293 ।

ख्याल

निकल पड़े मैदान जंग में गर कोई अभिमानी है ।
आज देखना है किसमें कितना दम कितना पानी है ॥
उठ बैठो सब काम छोड़ कर आज देश हित नारी नर ।
बलिदानों का ढेर लगा दो स्वतंत्रता की वेदी पर ॥
दहला दो दिल्ली दीवारें ओ भारत के बांके वीर ।
चूर-चूर कर दो सदियों की पराधीनता की जंजीर ॥
आज हिन्द में फिर से मर कर नई जान पहिचानी है ।
आज देखना है किस में कितना०

ताल जवाहिर लूट लिये हमने भी कुछ परवाह न की ।
वीर जवाहिर लेने पर हमने मुख से कुछ आह न की ॥
प्राण जवाहिर आज छिन गया क्या चुपके रह जावोगे ।
शर्मावोगे जरा नहीं क्या कुल में दाग लगाओगे ॥
ब्याज सहित इन बनियों से हमको सब रकम चुकानी है ।
आज देखना है किस में कितना०

रण दुंदुभी बजी गांधी की सहज कोई कप्तान नहीं ।
या होंगे आजाद नहीं तो तन में होगी जान नहीं ॥
किन्तु न कल से रहने देंगे अकल ठिकाने कर देंगे ।
हम भारतीय आज मर कर माता की झोली भर देंगे ॥
"माधव" आज लाज गांधी की मर कर उसे बचानी है ।
आज देखना है किस में कितना०

सरयू लाल द्वारा प्रकाशित तथा राजा प्रेस प्रयाग से मुद्रित, "अटलराज की कुंजी" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 251 ।

निहत्थों पर

चलने दो हाथ निहत्थों पर,
जत्थों पर जत्थे आवेंगे ।

गांधी के एक इशारे पर,
लाखों मत्थे चढ़ जावेंगे ।।

तोड़े, कानून किताबों का,
छापेखाने--अखबारों का ।

इस अनाचार के शासन को,
हाथी-हाथों चर जावेंगे ।।

मरते हैं बीर समर में ही,
कायर सौ बार मरा करते ।।

यह जीवन जाल ज्वाल हुआ,
मर कर भी अमर कहावेंगे ।।

भागों से स्वर्ण सुयोग मिला,
सेनापति गांधी सा पाया ।।

इस लिये "दास" रण-गंगा में,
खुल करके खूब नहावेंगे ।।

सरयूलाल द्वारा प्रकाशित तथा राजा प्रेस प्रयाग से मुद्रित, 'अटलराज की कुंजी" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 251 ।

आज़ादी का दौर

ऐ फिरंगी ! हिंद में आया है आजादी का दौर ।
खत्म होने को है अब भारत में बरबादी का दौर ॥

हो गए हैं कान, बातों में न आएंगे तेरी ।
चल चुका था, जब तक तेरी उस्तादी का दौर ॥

हिन्द में आसार पैदा हो चले हैं अम्न के ।
मिट गया मशरिक से तेरी फितना ईजादी का दौर ॥

देख, क्या कुछ कर रहा है, बेनवा "बागी फकीर" ।
इसकी हर जुंबिश से पैदा है इक आजादी का दौर ॥

पंजसाला अहद था इरविन का कैसा जांगुदाज़ ।
आर्डीनेंसों के जाल और उनकी सैयादी का दौर ॥

ऐ विलिंग्डन ! सोच लो पहला-सा भारत अब नहीं ।
इस वतन में अब है कौमीयत की शहजादी का दौर ॥

आओ मैदाने-अमल में बांधकर "हिन्दी" कमर ।
हो चुका नगमा-सुराई नुकता-ईज़ादी का दौर ॥

पं० रामविलास अवस्थी द्वारा संग्रहीत तथा दयाल प्रिंटिंग वर्क्स, हज़रतगंज लखनऊ, से मुद्रित, "सुलह और राष्ट्र-पुकार" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबन्धित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 779 ।

रक्षा बन्धन

प्राण वीरों भले ही गंवाना, पर न राखी की इज्जत घटाना ।
यह जो राखी तिरंगी हमारी, करती इज्जत इसे हिन्द सारी ।।
भाई इसको न हरगिज लजाना, चाहे .जाना पड़े जेलखाना ।
प्राण.....

हम न भूलें हैं जलियान वाला, जहां पे डायर से आया पाला ।
पेट के बल था उसने रेंगाया, देश की लाज में बहा आया ।।
अब की ऐसा न आये जमाना, चाहे जाना पड़े जेलखाना ।।
प्राण.....

है वह स्वराज्य मंदिर हमारा, जहां पै बैठा है गांधी सितारा ।
वहां पर पहूंचे हैं हजारों भाई, और बहिनों की भी मांग आई ।।
अब तो वहीं है सब का ठिकाना, आओ सारे चले जेलखाना ।
प्राण.....

याद रखना पेशावर की गोली, खेलना हिन्द में वही ही होली ।।
जिससे माथा हो ऊंचा हमारा, और आजाद हो हिन्द हमारा ।
बात अपनी न नीची कराना, चाहे जाना पड़े जेलखाना ।।
प्राण.....

दक्षिणा बस यही है तुम्हारी, लाज राखी की रखना हमारी ।
चाहे डन्डे पड़ें तुमको खाना, पैर हरगिज न पीछे हटाना ।।
या तो गोली को सीने पै खाना, या कि सीधे चलो जेलखाना ।।
प्राण.....
(विश्वमित्र)

बेनीमाधो गुप्त द्वारा प्रकाशित तथा यूनियन जाब प्रेस, प्रयाग से मुद्रित, "शहीद गर्जना" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 762 ।

वीर बालिकायें

हम देख चुकी हैं सब कुछ पर, अब करके कुछ दिखला देंगी
निज धर्म-कर्म पर दृढ़ होकर, कुछ दुनिया को सिखला देंगी ।

है क्या कर्तव्य हमारा अब, पहचान लिया हमने उसको
अरमान यही अब दिल में है, लंदन का तख्त हिला देंगी ।

समझो न हमें कन्याएं हैं, हम दुष्ट नाशिनी दुर्गा हैं
कर सिंहनाद आज़ादी का, दुष्टों का दिल दहला देंगी ।

राष्ट्रीय ध्वजा लेकर कर में, गावेंगी राष्ट्र-गीत प्यारे
दौड़ा कर बिजली भारत में, मुर्दे भी तुरत जिला देंगी ।

बेड़ियां गुलामी काटेंगी, आजाद करेंगी भारत को
उजड़े उपवन में भारत के, अब प्रेम-प्रसून खिला देंगी ।

कंपित होगी धरती ही क्यों, हां आसमान हिल जावेगा
"कविरत्न" वज्र की भांति तड़प, रिपुदल का दिल दहला देंगी ।

—श्री रामरत्न वर्मा "रत्न"

चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु द्वारा सम्पादित तथा अर्जुन प्रेस, काशी से मुद्रित, "स्वतन्त्र भारत का सिंहनाद" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 837–838 ।

वतन पर मर मिटें शादां बशर गर हो तो ऐसा हो

वतन पर मर मिटें शादां बशर गर हो तो ऐसा हो ।
न सहमें जेल सूली से दिलावर हो तो ऐसा हो ।।

रहे वह जेल में पहने जो पेरिस का धुला कपड़ा ।
दिखाया त्याग का रस्ता, जो रहबर हो तो ऐसा हो ।।

तपी त्यागी यती योगी नियम का पालने वाला ।
हुआ है कौन गांधी सा मुकद्दर हो तो ऐसा हो ।।

निहत्थे बेगुनाहों पर मदन से प्यारे बच्चों पर ।
चलाये गोलियां जालिम सितमगर हो तो ऐसा हो ।।

गये फांसी पर कितने चढ़ नहीं प्राणों का भय माना ।
शिवा प्रताप से गर वीर पैदा हो तो ऐसा हो ।।

जो तज शृंगार की बातें रचें निज देश पर कविता ।
वही कवि हैं जो पूछो तो सखुन वर हो तो ऐसा हो ।।

बहादुर के हों पावों बेड़ियां और हाथ हथकड़ियां ।
गले में तौक हों पहने जो जेवर हो तो ऐसा हो ।।

त्रिभुवन नाथ "आजाद" द्वारा संपादित तथा लक्ष्मी प्रेस, बनारस से मुद्रित, "बेकसों के आंसू" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 271–273 ।

स्वराज्य लेंगे

कहते है ताल देकर लेंगे स्वराज्य लेंगे ।
बैठे न चुप रहेंगे लेंगे स्वराज्य लेंगे ।।

अब यह गुलामियत की जंजीर तोड़ करके ।
स्वच्छन्द हो रहेंगे लेंगे स्वराज्य लेंगे ।।

मुद्दत के बाद गफलत से जाग हम गये हैं ।
सबसे यही कहेंगे लेंगे स्वराज्य लेंगे ।।

भारत हुआ है गारत उसका सुधार करके ।
माता का दुःख हरेंगे लेंगे स्वराज्य लेंगे ।।

यह देश है हमारा ऊंचा इसे उठाकर ।
स्वतंत्रता लहेंगे लेंगे स्वराज्य लेंगे ।।

यह आत्मा अमर है मारे न मर सकेंगे ।
क्या मौत से डरेंगे लेंगे स्वराज्य लेंगे ।।

स्वर्गीय देशभक्तों फिर नन्दन बिपिन बनाकर ।
तब मौत व्रत गहेंगे लेंगे स्वराज्य लेंगे ।।

त्रिभुवन नाथ "आजाद" द्वारा संपादित तथा लक्ष्मी प्रेस, बनारस से मुद्रित, "बेकसों के आंसू" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 271—273 ।

आज़ादी के दीवानों ने

सहते हैं अत्याचारों को आज़ादी के दीवानों ने ।
नित जाते कारागारों को आज़ादी के दीवानों ने ॥

ऐ भारत के सन्तानों उठों नहीं समय रहा अब सोने का ।
जब जगा दिया भारत को ये आज़ादी के दीवानों ने ॥1॥

ऐ वीर सपूतों भारत के उठ बैठो आंखें अब खोलो ।
हथियार शान्ति की कर में ली आज़ादी के दीवानों ने ॥

श्रीराम कृष्ण अर्जुन भीष्म को व्यर्थ न अब बदनाम करो ।
उनके ऐसा तुम कार्य करो आज़ादी के दीवानों ने ॥2॥

घुस गये विदेशी भारत में सब माल लूट ले जाते हैं ।
ठगियों को मजा चखा डाला आज़ादी के दीवानों ने ॥

उड़ गये होश उन ठगियों के नये आर्डिनेन्स किये जारी ।
इन शस्त्रों की परवाह न की आज़ादी के दीवानों ने ॥3॥

चलवा दी डण्डे गोरों ने कहीं गोली भी चलवाई है ।
पर सीने पर गोली सहते, आज़ादी के दीवानों ने ॥

खूनों से अपने वीरों ने है सिंचते भारत का गुलसन ।
"शिवनन्दन" कुछ परवाह न की आज़ादी के दीवानों ने ॥4॥

त्रिभुवन नाथ "आजाद" द्वारा संपादित तथा लक्ष्मी प्रेस, बनारस से मुद्रित, "बेकसों के आंसू" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 271—273 ।

देशभक्त की आरजू

कुछ आरजू नहीं है, है आरजू तो यह है ।
रख दे कोई ज़रा सी, ख़ाके वतन कफ़न में ।।

ऐ पुख्ताकार उल्फत ! हुशियार, डिग न जाना ।
मा राज़ आशकारा है दार और रसन में ।।

मौत और जिन्दगी है, दुनिया का सब तमाशा ।
फ़र्मान कृष्ण का था, अर्जुन को बीच रन में ।।

अफसोस ! क्यों नहीं है, वह रूह अब वतन में ।
जिसने जिला दिया था, दुनिया को एक छन में ।।

सैयाद जुल्म-पेशा, आया है जबसे "हसरत" ।
हैं बुलबुलें कफ़स में, घुग्घू फिरें चमन में ।।

श्रीयुत प्रकाश द्वारा संग्रहीत तथा सरस्वती प्रेस, काशी से मुद्रित, "आजाद भारत के गाने" नामक पुस्तक से ।
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।
अवाप्ति संख्या 189–190 ।

जेल भर दो

भारत के नौजवानों ! अब जाके जेल भर दो ।
आजादी के समर में आ आके जेल भर दो ।।

परतंत्रता की बेड़ी, माता की आके काटो ।
जालिम के गोली-डंडे खा-खाके जेल भर दो ।।

सूस्ती में पड़ के सोने का यह समय नहीं है ।
गाने स्वतंत्रता के गा-गाके जेल भर दो ।।

माताएं और बहनें जब जेल जा रही हैं ।
गर मर्द हो, तो कुछ भी शरमा के जेल भर दो ।।

बातें बनाने का यह बिलकुल समय नहीं है ।
सत्याग्रह का अवसर शुभ पाके जेल भर दो ।।

अब तो समय नहीं है पढ़ने का छात्र वीरो ।
निज पूर्वजों के खूं को दिखला के जेल भर दो ।।

सैयाद को दिखा दो तप, तेज, त्याग अपना ।
माता के पुत्र सच्चे कहला के जेल भर दो ।।

लखकर तुम्हारा साहस "त्रिभुवन" करे प्रशंसा ।
दुश्मन के दिल को प्यारो, दहला के जेल भर दो ।।

श्रीयुत प्रकाश द्वारा संग्रहीत तथा सरस्वती प्रेस, काशी से मुद्रित, "आजाद भारत के गाने" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 189–190 ।

देख लेना

उठाएंगे जब वह तबर देख लेना ।
तो लाखों उड़ाएंगे सर देख लेना ॥

चलाएंगे जिस दम वो तीरे सितम को ।
तो हम होंगे सिना-सिपर देख लेना ॥

जो कल खुश्क शाखें-तमन्ना थी अपनी ।
उगा आएंगे उसमें समर देख लेना ॥

फ़लक के भी दिल में चुभेगा ये जाकर ।
जो उठता है दर्दे जिगर देख लेना ॥

हिला देंगे पाया जमीं-आसमां के ।
करेंगे जो दिल से क़हर देख लेना ॥

जो भारत की वेदी पै सर दे चुके हैं ।
वो होंगे जहां में अमर देख लेना ॥

खुलेंगी जुबाने जो अहले दहां से ।
तो आहों में क्या है असर देख लेना ॥

जो "गांधी" "जवाहर" हैं नेता हमारे ।
वहीं होंगे शमशो-कमर देख लेना ॥

जहां में जो रोशन हैं "शायक" के हासिद ।
वे होंगे चिराग़े-सहर देख लेना ॥

श्रीयुत प्रकाश द्वारा संग्रहीत तथा सरस्वती प्रेस, काशी से मुद्रित, "आजाद भारत के गाने" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 189–190 ।

चेतावनी

अगर स्वराज्य भारत में तुम्हें इस साल में लाना ।
तो हर्गिज़ चालबाजों के न अब तुम चाल में आना ।।

विदेशी वस्तु को दिल से करो अब दूर ऐ मित्रो ।
तुम अपने देश का धन अब विदेशों में न भिजवाना ।।

अगर आपस के झगड़े हों तो उनको तै करो घर में ।
कचहरी फौजदारी में न हरगिज़ माल में जाना ।।

अगर यह वक्त हाथों से गवाया तो समझ लेना ।
तो पशुओं की तरह सदहा तुम्हें है ठोकरें खाना ।।

सदा जकड़े रहोगे फिर गुलामी की जंजीरों में ।
जो छोड़ा ध्येय अपना तो है मुश्किल पार हो पाना ।।

परिश्रम हम करें डटकर मजे लूटें वो लन्दन में ।
तुम्हें अब ऐसी शैतानी हुकूमत को है मिटवाना ।।

मनाने को हमें करते हैं बैठक गोल टेबुल की ।
न हरगिज़ ऐसे मक्कारों पै अब इतबार तुम लाना ।।

ये कहते "इन्द्र" हैं तुम से सुनों भारत के ऐ वीरों ।
वतन आजाद अब करलो न गैरों के सहो ताना ।।

पंडित अवध बिहारी लाल शर्मा (बिमल) द्वारा सम्पादित तथा शुक्ल प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ से मुद्रित, "स्वदेश का सन्देश" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 795–796 ।

स्वराज्य का अर्थ

बिटिश छत्र की छाया में हम, करें देश का स्वयम् प्रबन्ध ।
है स्वराज्य का अर्थ यही बस, समझें कुछ न और मतिग्रन्ध ।।

दिन दिन दशा देश अपने की, बिगड़त जात न देते ध्यान ।
हंसत दुसरे देश देखकर, कहत यही है हिन्दुस्तान ।।

काले कुत्ते कुली आदि कह, जब वह करते हैं अपमान ।
डुबो मरो चुल्लू भर जल में, तोभी लगती नहीं गलानि ।।

गर्भ न खसो वृथा तुम्हें जायो, हौ केवल पृथ्वी के भार ।
भारत माता जो दुख भोगे, तौ जीवे को है धिक्कार ।।

अन्न खाय जल पीकर जाको, इतने भारी भये जवान ।
ताके दुखकी तुम्हें न सुध है, चेतो अब भारत सन्तान ।।

अरे बहादुरों सिंह सपूतो, निजस्वरूप क्या दियाविसार ।
कर स्मरण पूर्वजों के गुण, करो हिन्द का बेड़ा पार ।।

उन्नति करो रहौ मत पीछे, दिखलादो यह बीच जहान ।
सम्पतिशाली स्वराज्य भोगी, यह वह ही है हिन्दुस्तान ।।

होवै नाश कलह का जिसने, हिन्द कर दिया तेरह तीन ।
हाय तुम्हें तबहूं नहिं सूझत, क्या आंखिन से भये विहीन ।।

कारीगरी मिटी भारत की, और व्योपार गयो परदेश ।
भई गुलामी हार गले की, पास रहे अधिकार न लेश ।।

लाला भगवान दास द्वारा संग्रहीत तथा हिन्दु प्रेस, इटावा से मुद्रित, "स्वराज्य आल्हा" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 803-804 ।

विजय होगी

उठो अब सत्य पर भाई विजय होगी विजय होगी ।
कटा दो अपना सर भाई विजय होगी विजय होगी ।।

अगर वह गनमशीनों की धमकियां तुम को देते हैं ।
बढ़ादो बढ़के निज छाती विजय होगी विजय होगी ।।

अगर वह हथकड़ी बेड़ी दिखायें तो दिखाने दो ।
करो कर्तव्य सुखदाई विजय होगी विजय होगी ।।

मेरे प्यारे शहीदों अब नहीं है काम देरी का ।
दिखा दो चाल रौताई विजय होगी विजय होगी ।।

अगर इस जंग में चूके समझ लेना बुरा होगा ।
न पिछड़ो देख कर खाई विजय होगी विजय होगी ।।

इधर है शेर गांधी जी उधर है शासको का दल ।
बनो मोहन के अनुयाई विजय होगी विजय होगी ।।

मोहरचन्द्र (मस्त) द्वारा प्रकाशित तथा द्वादश श्रेणी प्रेस, दिल्ली से मुद्रित, "शहीदों का सन्देश" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 763–765 ।

नारियों का प्रोत्साहन

आर्य नारियों ने भी जग को अपने जौहर दिये दिखाय ।
शूरवीरता की बातों से कायर दीने वीर बनाय ॥

बेटे के मस्तक पर माँने हंसकर रोली दई लगाय ।
हाथ फेर कर शिर के ऊपर इस प्रकार बोली हरषाय ॥

निर्भय हो रण में जा बेटा विजय करें तेरी जगदीश ।
पीठ ठोंक करके मैं तेरी देती हूं दिल से आशीष ॥

विजयी होकर ही घर आना चाहे जान रहे या जाय ।
पीठ दिखा देना न कहीं तू अपने कुल को दाग लगाय ॥

दूध पिया है तूने मेरा, उसका जौहर दे दिखलाय ।
आवश्यकता हो तो हंस करके शिर तक भी देना कटवाय ॥

आर्य नारियां जिस शुभ दिन को पैदा करती है संतान ।
देश धर्म पर मर मिटने का वो शुभ दिन अब पहुंचा आन ॥

सत्याग्रही वीर की पत्नी इतने में फिर पहुंची आय ।
फूलों की माला हंस करके अपने पति को दी पहिनाय ॥

भुजा पूज कोमल हाथों से बोली मंद मंद मुसकाय ।
ममता मोह छोड़ कर सारी जाओ प्राणेश्वर हरषाय ॥

आज तुम्हारे कंधों पर है धर्म और जाती का भार ।
धर्म सभ्यता है बंधन में करना है उसका उद्धार ॥

आर्य वीर होते आए हैं सदैव गौरव पर बलिदान ।
जान गंवा करके भी अपनी वो कायम रखते हैं शान ॥

मुंह देखूं न दिखाऊंगी मैं आये जो पाकर के हार ।
विजयी हो आये जाऊंगी तो फिर बार बार बलिहार ॥

प्यार उमड़ आया भगिनी का पहुंची आ लेकर में थाल ।
करी आरती निज भैया की अक्षत दिये कुशल के डाल ॥

माता पत्नी और बहन का देखा जब ऐसा उत्साह ।
फिर न रही उस वीर युवक के जोश और साहस की थाह ।।

धन्य धन्य है वे महिलाएं है जिनका ऐसा आदर्श ।
गर्व उन्हीं पर कर सकता आज हमारा भारत वर्ष ।।

वीर लड़कियां चूड़ी लेकर पहुंची नवयुवकों पर जाय ।
भाई साहब ! सत्याग्रह में दो तुम अपना नाम लिखाय ।।

जो मरने से डर लगता हो तो हम देंय उपाय बताय ।
चूड़ी तुम पहनों हाथों में झंडा हमको देउ गहाय ।।

सुंदर साड़ी पहन हमारी करो रोटियां घर में जाय ।
नारी समझ न बोले कोई ऐसे जान सहज बच जाय ।।

ये बातें सुन महिलाओं की बढ़ा नौजवानों में जोश ।
करी तयारी सत्याग्रह की बैठे रह न सके खामोश ।।

झोली ले लेकर नारी दल जब पहुंचा जनता में जाय ।
दान दिया दोनों हाथों से बित समान सबने हर्षाय ।।

सेठ और साहुकारों ने दिये थैलियों के मुंह खोल ।
बड़े बड़े कंजूसों के भी आसन गये एक दम डोल ।।

मतलब यह है जली देश में जो यह सत्याग्रह की आग ।
इसे प्रज्वलित करने में था सब हिन्दु जनता का भाग ।।

जोरावर सिंह (सिंह कवि) द्वारा लिखित तथा आर्य प्रिंटिंग एण्ड पब्लिसिंग हाऊस लखनऊ से मुद्रित, "सिंहनाद भाग-7" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 777 ।

विनय

भगवान दो सहारा भारत की नारियों को ।
हे नाथ भूल बैठे यों इन बिचारियों को ।।

शिक्षित व सभ्य बन के निज जाति को उठाएं ।
बल और बुद्धि दीजै ऐसी कुमारियों को ।।

कर्तव्य क्या है मां का ? समझें इसे भली विध ।
दें जन्म भीष्म लक्ष्मण से ब्रह्मचारियों को ।।

अबला बनी हुई हैं बन जायं सिंहनी सब ।
दहलायँ दुष्ट लखिकर इनकी कटारियों को ।।

संकट हो देश पर जब तब वीर वेश धारें ।
बन जायँ वीर, रखदें तह करके सारियों को ।।

खल शत्रुओं के दल में मच जाय खलबलाहट ।
रणभूमि में बढ़ें जब लेकर दुधारियों को ।।

चमके प्रभा जगत में जिनकी सदृश प्रभाकर ।
"कविसिंह" पति बनाएं उन क्रान्तिकारियों को ।।

जोरावर सिंह (सिंह कवि) द्वारा लिखित तथा आर्य प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, लखनऊ से मुद्रित, "सिंहनाद भाग-7" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 777 ।

वीर गर्जना

भारत के शेर जागो, बदला है अब जमाना ।
प्यारे वतन को इसदम, आजाद है बनाना ।।

मत बुजदिली को हरगिज, तुम पास दो फटकने ।
आखिर तो दम अदम को, होगा कभी रवाना ।।

देवी स्वतंत्रता के, जल्दी बनो उपासक ।
निज पूर्वजों का तुमको, गर नाम है चलाना ।

परदेशियों का इस दम, जो साथ दे रहे हैं ।
उनको हराम है अब, भारत का अन्न खाना ।।

दृढ़ सत्य पर रहो तुम, धारण करो अहिंसा ।
आ करके जोश में तुम, हुल्लड़ नहीं मचाना ।।

माता की कोख नाहक, करते हो तुम कलंकित ।
वालेंटियर बनो तुम, सब छोड़ दो बहाना ।।

दिल में झिझक न लाओ, आगे कदम बढ़ाओ ।
है स्वर्ग के बराबर, इस वक्त सूली खाना ।।

"सरजू" समय यही है, कुछ कर लो देश सेवा ।
दो दिन की जिंदगी है, इसका नहीं ठिकाना ।।

पं० कन्हैया लाल दीक्षित (इन्द्र) द्वारा सम्पादित तथा भारतभूषण प्रेस, लखनऊ से मुद्रित, "स्वराज्य पुकार" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 820--822 ।

गुलामी से जकड़ा हमारा वतन है

अनोखा निराला हमारा वतन है ।
हमें जानो दिल से प्यारा वतन है ।।

मुसीबत भी, आफत भी, जुलमों सितम भी ।
तेरे वास्ते सब गवारा वतन है ।।

हमें हों तमन्नायें जन्नत की क्यों कर ।
कि जन्नत से बढ़ कर हमारा वतन है ।।

निगाहों में रहता है मंजर वतन का ।
सफर में भी हमराह प्यारा वतन है ।।

करो पहिले आजाद अपने वतन को ।
गुलामी से जकड़ा हमारा वतन है ।।

न आलम से मतलब, न दुनिया से मतलब ।
हमारे लिये बस हमारा वतन है ।।

अक्सीर सियालकोटी द्वारा संग्रहीत, ऐंग्लो ओरियन्टल प्रेस, लाहौर से मुद्रित, "स्वराज्य की गूंज" पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 829–830 ।

हो गये तैयार अब कुछ कर दिखाने के लिए

हो गये तैयार अब कुछ कर दिखाने के लिये ।
अब न फुर्सत है हमें बातें बनाने के लिये ।।

कर चुके हैं हम प्रतिज्ञा देश के उद्धार की ।
बांधे बैठे हैं कमर हम जेल जाने के लिये ।।

हथकड़ी बेड़ी हैं गहना वीरता का दोस्तों ।
हम सदा तैयार हैं तन पर सजाने के लिये ।।

थे हुए पैदा हमारे पूर्वज जिसमें कभी ।
जाते हैं उस जेल का कोना बसाने के लिये ।।

देश के नेताओं ने रह कर किया जिसको है पाक ।
फिर न कोई सबब पग पीछे हटाने के लिये ।।

मुहम्मद शौकत अली गांधी की तकलीफों को सुन ।
आता है घर हमको अब तो काट खाने के लिये ।।

देश के हित वे मरें हम घर में तोड़े रोटियां ।
लानत हमें सौ बार ऐसा खाना खाने के लिये ।।

हैं वे अब नामर्द हिजड़े जेल से डरते हैं जो ।
व्यर्थ जोते हैं जगत में मुंह दिखाने के लिये ।।

हैं बड़े बेशर्म जो खाते हैं टुकड़े हिन्द के ।
गैरों के तलवों को चाटें पदवी पाने के लिये ।।

राय साहिब खां बहादुर बन दिखाते हैं अकड़ ।
भाइयों की अपने गर्दन के फंसाने के लिये ।।

है मजा तिस पर न पूछें उनको कुते की तरह ।
तो भी जाते हैं घुसे फटकार खाने के लिये ।।

देश वासिन को दे ताकत है मेरे जगदीश अब ।
एकदम तैयार हो सब सर कटाने के लिये ।।

हाथ में हो हथकड़ी बेड़ी हो पग "अज्ञान" के ।
देश हित का गान मुख तसला बजाने के लिये ।।

ठा० ज्ञानसिंह वर्मा द्वारा लिखित तथा जगदीश प्रेस, अलीगढ़ से मुद्रित, "स्वराज्य की बंशी" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 811—813 ।

जगदीश ! यह विनय है जब प्राण तन से निकले

जगदीश ! यह विनय है जब प्राण तन से निकले ।
प्रिय देश देश रटते यह प्राण तन से निकले ।।

भारत-वसुन्धरा पर सुख-शान्ति-संयुता पर ।
शुचि-शस्य-श्यामला पर यह प्राण तन से निकले ।।

देशाभिमान धरते जातीय-गान करते ।
निज देश व्याधि हरते यह प्राण तन से निकले ।।

भारत का चित्रपट हो युग नेत्र के निकट हो ।
श्री जाह्नवी का तट हो तब प्राण तन से निकले ।।

दुख-दैत्य पर विजय हो अज्ञान-रात्रि क्षय हो ।
भारत समृद्धि-मय हो तब प्राण तन से निकले ।।

उद्योग, शान्ति, सुख हो आलस्य हो न दुख हो ।
सबका प्रसन्न मुख हो तब प्राण तन से निकले ।।

संकट न दुःख भय हो, सर्वत्र ही विजय हो ।
ऐसा सुकाल जब हो तब प्राण तन से निकले ।।

सब ही सतत सबल हों विद्या कला कुशल हों ।
कर्तव्य पर अटल हों तब प्राण तन से निकले ।।

देशोपकार करते मन मातृ-भक्ति भरते ।
जय जय स्वदेश रटते यह प्राण तन से निकले ।।

विश्वनाथ लाल श्रीवास्तव (विशारद) द्वारा संकलित तथा सरस्वती प्रेस, काशी से मुद्रित, "संगीत सरोवर" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 731--733 ।

खादी का बाना पहन लिया

खादी का बाना पहन लिया,
आजादी ध्येय हमारा है ।
आजादी पर मर मिटना है ।
हमने अब यही विचारा है ॥
प्राणों की भेंट चढ़ायेंगे,
हम बलिवेदी पर जायेंगे ॥
हम अमर, नहीं मरने का डर,
यह तो जीने की राह भली ॥
हैं "शिवा" "प्रताप" गये जिससे,
हैं वीरों की यह वही गली ॥
जननी की जय-जय गायेंगे,
हम बलिवेदी पर जायेंगे ॥
हम बड़े शौक से पहनेंगे,
पहनायेंगे जो हथकड़ियां ॥
जेलों में अलख जगा करके,
तोड़ेंगे माता की कड़ियां ॥
अन्याय अनीति मिटायेंगे ।
हम बलिवेदी पर जायेंगे ॥
भालों, तलवारों, तोपों से,
हम कभी नहीं घबरायेंगे ।
वह देश-प्रेम-मतवाले हैं,
जो शूली पर चढ़ जायेंगे ।
निज देश स्वतंत्र बनायेंगे,
हम बलिवेदी पर जायेंगे ॥

विश्वनाथ लाल श्रीवास्तव (विशारद) द्वारा संकलित तथा सरस्वती प्रेस, काशी से मुद्रित, "संगीत सरोवर" नामक पुस्तिका से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 731—733 ।

करो कुछ देश-हित भ्राता

करो कुछ देश-हित भ्राता,
अगर आए हो दुनिया में ।

निछावर देश पर सर कर,
निशां रखने को दुनियां में ॥

भलाई कर चलो सबकी,
तुम्हारा भी भला होगा ।

भलाई के लिए सर दे,
दिये लाखों ने दुनिया में ॥

अगर इच्छा तुम्हारी है,
तरक्की हिन्द कर जावे ।

हटाओ मत कदम पीछे,
बढ़ाए जाओ दुनियां में ॥

जरूरत है कि हों
कुरबानियां भारत पै लाखों की ।

फ़कीरी धार लो भारत का,
यश रखने को दुनियां में ॥

जो करना चाहो कर लो आज,
फिर कल का भरोसा क्या ।

समय गुजरा कहीं आता,
सुना हमने न दुनियां में ॥

ये तोड़ो दासता की बेड़ियां
स्वाधीनता ले लो ।

वतन का राग घर घर को
सुनाओ सारी दुनियां में ॥

विश्वनाथ लाल श्रीवास्तव ("विशारद") द्वारा संकलित तथा सरस्वती प्रेस, काशी से मुद्रित "संगीत सरोवर" नामक पुस्तिका से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 731—733 ।

काम करने का समय है काम करना चाहिए

काम करने का समय है काम करना चाहिए ।
हार कर रंजो मसायब से न डरना चाहिए ॥

ख़ूं रगों में गर है कुछ क़ौमी हमैयत का रवां ।
मर्द मैदां बनके मां का दुःख हरना चाहिए ॥

गर्दनों पर गर है ख़ंजर क़त्ल का इरशाद हो ।
मरते मरते दम सदाक़त का ही भरना चाहिए ।

कष्ट आवें, सामने डर जाओ सीना खोलकर ।
हर बशर को मुल्क की ख़िदमत में मरना चाहिए ॥

सब्रो इस्तक़बाल पर क़ायम रहो हरदम सभी ।
बढ़ गया है जो क़दम, पीछे न धरना चाहिए ॥

विश्वनाथ लाल श्रीवास्तव ("विशारद") द्वारा संकलित तथा सरस्वती प्रेस, काशी से मुद्रित, "संगीत सरोवर" नामक पुस्तिका से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 731—733 ।

जियें तो बदन पर स्वदेशी वसन हों

जियें तो बदन पर स्वदेशी वसन हो ।
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो ॥ टेक ॥

पराया सहारा है अपमान होना,
जरूरी है निज शान का ध्यान होना,

है वाजिब स्वदेशी पै कुर्बान होना,
इसी से है सम्भव समुत्थान होना ।

लगन में स्वदेशी की हर मर्दोज़न हो ।
निछावर स्वदेशी पै कर मालोज़र दो,

स्वदेशी से भारत का भण्डार भर दो,
रहें चिह्न-से वह चकाचौंध कर दो,

दिखा पूर्वजों के लहू का असर दो,
स्वदेशी हो सज-धज स्वदेशी चलन हो ।

उठो कर्मवीरो, तुम्हें कौन भय है ?
स्वदेशी का संग्राम भी शांतिमय है ;

प्रथा पाप की पाप में आप लय है,
विजय है, विजय है, तुम्हारी विजय है,

स्वदेशी हो पूजन, स्वदेशी भजन हो ।
करो प्रण कि आज़ाद होकर रहेंगे,

जहां में कि बरबाद होकर रहेंगे,
सितमगर ही या शांद होकर रहेंगे,

कि हम शाहो आबाद होकर रहेंगे,
स्वदेशी हो "अख्तर" स्वदेशी कथन हो ।

जिएं तो बदन पर स्वदेशी बसन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो ॥

विश्वनाथ लाल श्रीवास्तव ("विशारद") द्वारा संकलित तथा सरस्वती प्रेस, काशी से मुद्रित, "संगीत सरोवर" नामक पुस्तिका से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 731—733 ।

हिमादि तुंग श्रृंग से

हिमादि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती...

स्वयं प्रभा समुज्वला
स्वतंत्रता पुकारती...

"अमर्त्य वीर-पुत्र हो
दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो।

प्रशस्त पुण्य पंथ है
बढ़े चलो बढ़े चलो॥"

असंख्य-कीर्ति रश्मियां
विकीर्ण दिव्य दाह सी

सपूत मातृभूमि के
रुको न शूर साहसी

अराति-सैन्य-सिन्धु में
सुबाड़वाग्नि से जलो

प्रवीर हो जयो बनो
बढ़े चलो बढ़े चलो॥

विश्वनाथ लाल श्रीवास्तव ("विशारद") द्वारा संकलित तथा सरस्वती प्रेस, काशी से मुद्रित, "संगीत सरोवर" नामक पुस्तिका से।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य।

अवाप्ति संख्या 731—733।

हिंदियों को संदेश

न हिंदियो, बेकरार हो तुम कि नेक अय्याम आ रहे हैं।
वह जल्द मिट जायेंगे जहां से, हमें जो जालिम सता रहे हैं।।

न समझो रस्सी या बान उनको, जो जेल में बट रहे हैं कैदी।
वह आहनी नोक पापियों के गले की खातिर बना रहे हैं।।

उधर से सगीनें तन रही हैं, इधर से सीने खुले हुए हैं।
इधर है चेहरों पे मुस्कराहट, उधर वह गोली चला रहे हैं।।

इधर इरादा ये कर चुके हैं, कदम न पीछे हटाएंगे हम।
उधर वह लालच से धमकियों से, हमारे दिल आज़मा रहे हैं।।

खुदा को मंजूर अब यही है कि हिंद में इनक़लाब होगा।
तभी तो भारत के लाल खुश होके जेलखाने को जा रहे हैं।।

थी जिनके क़दमों पै सारी दुनिया की न्यामतें दस्तबस्ता हाज़िर।
खुदा की कुदरत वह आज हंस-हंस के खुश्क रोटी चबा रहे हैं।।

अब वक्ते स्वराज आ रहा है, सदा ये हरस से आ रही है।
मगर "मुसाफिर" को धोखा दे करके और मुद्दत बता रहे हैं।।

रामविलास अवस्थी द्वारा संग्रहीत तथा दयाल प्रिंटिंग वर्क्स, लखनऊ से प्रकाशित, "सुलह और राष्ट्र पुकार" नामक पुस्तक से।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य।

अवाप्ति संख्या 778—780।

झण्डा झुकने न दो

फूंक ही दिया है जब शंख महाभारत का,
जौलौं न सुराज मिले युद्ध रुकने न दो ।

देश के दिवानो मरदानो नौजवानों सुनो,
देशी बीच दासता की कील ठुकने न दो ।।

डायर ओडायर की पेंनशिनें बंद करो,
भारत की द्रव्य अब व्यर्थ फुंकने न दो ।

देश का सहारा है करारा क्रांतिकारियों का,
हिंद का तिरंगा प्यारा झंडा झुकने न दो ।।

डा० सुवर्ण सिंह वर्मा (आनन्द) द्वारा लिखित तथा केसरी प्रेस, आगरा से मुद्रित, "सत्याग्रह गीतावली" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 744-745 ।

देश की लाज

गोखले तिलक लाला जो जती जतीनदास,
तात ही की भांति मात आपको निहारे है ।

बैरियों के हाथ कलपाती बिलखाती हाय,
नैन सों बहाती नीर आस के सहारे है ॥

रक्षक भयो है आज भक्षक अनीति देखो,
शासक दुधारी असि हाथ में सम्हारे है ।

देश के दिवानो नौजवानो सरदानो सुनो,
भारत की लाज हाथ केवल तुम्हारे है ॥

डा० सुवर्ण सिंह वर्मा (आनन्द) द्वारा लिखित तथा केसरी प्रेस, आगरा से मुद्रित, "सत्याग्रह गीतावली" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 744-745 ।

मेल करना सीख लो

दूध पानी की तरह आपस में मिलना सीख लो ।
दूर करके दुरदुराना मेल करना सीख लो ॥

दूध में पानी मिले तो भेद कुछ रखता नहीं ।
देके अपना रंग छाती से लगाना सीख लो ॥

दूध बिकता जिस तरह उस भाव ही पानी बिके ।
देकर के हक बराबरी ताक़त बढ़ाना सीख लो ॥

जब कि हलवाई के हाथों आग पर चढ़ते हैं वह ।
वक्त पर खुद को जला बदला चुकाना सीख लो ॥

देख कर पानी जला आपे में नहीं रहता है दूध ।
मित्र के बिछुरन पै जी का होम करना सीख लो ॥

देखा हलवाई ने उबला डाल चुल्लू जल दिया ।
मित्र मिलने पर पुनः रो रो के मिलना सीख लो ॥

नीचों को ऊंचा चढ़ा अपनी बराबर कीजिये ।
छोड़ कर "अज्ञात" अब तो प्रेम करना सीख लो ॥

ठा० ज्ञान सिंह वर्मा द्वारा लिखित तथा जगदीश प्रेस, अलीगढ़ से मुद्रित, "स्वराज्य की बंशी" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 811 ।

प्रतिज्ञा

जब तक रहेंगे ज़िंदा भारत का दम भरेंगे ।
निज देश-भाइयों का, ता उम्र दुख हरेंगे ।।

यह हमको बे वजह जो तकलीफ दे रहे हैं ।
खालिक के रूबरू हम कहते नहीं डरेंगे ।।

है अख्तियार उनको, सर तक क़लम करा दें ।
पर हम भी धर्म-पथ से, हर्गिज नहीं टरेंगे ।।

यह हिन्द है हमारा, हम हिन्द के निवासी ।
इसमें हुए हैं पैदा, इसमें ही हम मरेंगे ।।

देकर के दम दिलासा दिल को दुखा रहे हैं ।
"सरयू" ये जुल्म जाने कब तक किया करेंगे ।।

मुंशी सिंह (रत्न) द्वारा संग्रहीत तथा शुल्क प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ से मुद्रित, "स्वदेशी गायन रत्न" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 788—790।

अहिंस आतमिक असहयोग कर दुनियां को दिखला देंगे ॥
स्वतंत्रता के पद पंकज पर हम प्रिय प्राण गवां देंगे ॥ टेक ॥

नम्र भाव से शत्रु हृदय पर अपनी धाक जमा देंगे ।
रख मान भारत माता का सब अर्मान मिटा देंगे ॥

स्वतंत्रता देवी के कारण हम सर्वस्व लुटा देंगे ।
बुज़दिल अरू खुद गर्ज़-निकम्मे हो सो दांत दिखा देंग ॥

डायर ! ने जो लिखी डायरी उसको खोल सुना देंगे ।
स्वतंत्रता के पद पंकज पर हम प्रिय प्राण गंवा देंगे ॥ 1 ॥

अमृतसर जलियान बाग का कैसे दृश्य भुला देंगे ।
दाग खिलाफ़त का जो दिल पर क्यों कर उसे मिटा देंगे ॥

क्या मुक़ाम हम मुक़द्दिसा की बेहुर्मती करा देंगे ।
झंडा उठा ख़िलाफ़त का इज्जत इसलाम बढ़ा देंगे ॥

मुसलमान कहला कर क्या जीते जी नाक कटा देंगे ।
स्वतंत्रता के पद पंकज पर हम प्रिय प्राण गंवा देंगे ॥ 2 ॥

करें बात अन्याय युक्त बस उनको झींक झिखा देंगे ।
कूट नीति का भंडा फोरे आखिर नाच नचा देंगे ॥

आज हंसे जो अपने ऊपर आखिर उन्हें रूला देंगे ।
उलझन में जो हमें डालते उनको भी उलझा देंगे ॥

लगा चुके गुरगांठ अधर्मी उसको हम सुलझा देंगे ।
स्वतंत्रता के पद पंकज पर हम प्रिय प्राण गंवा देंगे ॥ 3 ॥

दीन-हीन गमगीन-भारतीय नाक चने बिनवा देंगे ।
मारेंगे दम नहीं तुम्हें पर अपने प्राण नशा देंगे ।।

सब्रो सकू की करामात हक रोज तुम्हें दिखला देंगे ।
भर 2 ठन्डी स्वास सदन तेरे में आग लगा देंगे ।।

"शर्म्मा जलेसरी" झंडे को हो आजाद घुमा देंगे ।
स्वतन्त्रता के पद पंकज पर हम प्रिय प्राण गंवा देंगे ।।

पं० रामस्वरूप शर्मा द्वारा संकलित तथा सुदर्शन प्रेस, हाथरस से मुद्रित, "स्वदेश मंगलाचार" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 797--799 ।

वतन एक ही है

हिन्दू मुसलिम हों चाहे दो पै वतन एक ही है।
दोनों के वास्ते डायर की भी गन एक ही है॥

एक ही मांके हैं आगोश में बैठे दोनों।
सरपै दोनों के मियां चर्ख़े कुहन एक ही है॥

एक ही ख़ाक से पैदा हुवे हिन्दू मुसलिम।
एक है सबकी खुशी रन्जो महन एक ही है।

लुत्फ दिखलाया है आपस की मोहब्बत ने ये क्या।
शेर दो रहते हैं मिल जुल के गो बन एक ही हैं॥

गान्धी, वारी, अली भाई, लाल, मालविया।
लाल सदहा हैं मगर मुल्के अमन एक ही हैं॥

कोई, कुमरी कोई बुल बुल कोई कोयल हो भले।
मरने जीने को चले सबके चमन एक ही हैं॥

दम घुटा जाता है फरियाद भी कर सकते नहीं।
लाख शिकवे हैं मगर आह दहन एक ही हैं॥

मुख्तलिफ़ रंगो मजामी हों मुसाफ़िर चाहे।
तेरा हर हाल में पर तर्जेसखुन एक ही है॥

श्री चतुर्वेदी शैलेन्द्र जी गायन भूषण द्वारा रचित तथा लहरी प्रेस, काशी में मुद्रित, "स्वराज्य-गीतांजलि (दूसरा भाग)" नामक पुस्तक से।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य।

अवाप्ति संख्या 807।

एक शैदाये वतन के आदर्श विचार

मेरी नजरों में तो राजा न नवाब अच्छा है।
मुझको जो क़ौम दे ख़ादिम का ख़िताब अच्छा है॥

टम्सराइन की नहीं भाती हैं लहरें मुझको।
मुझको मिल जाय जो गंगा का हुबाब अच्छा है॥

वायदे देने के कर कर के मुकरते रहना।
कह दो कि देंगे नहीं बस ये जवाब अच्छा है॥

दिन ब दिन ही क्यों कसे जाते हो मजलूमों को।
करना तुमको नहीं यह जुल्मोताब अच्छा है॥

फौजी कानून कहीं और कहीं रौलटबिल।
इस तरह करना नहीं हमको ख़राब अच्छा है॥

उम्र खोता है क्यों गप्पों से भरे पोथों में।
पढ़ले सत्यार्थ का जो एक भी बाब अच्छा है॥

ले ग़रीबों की खबर मुल्क की ख़िदमत कुछकर।
इससे बढ़कर न कोई और सबाब अच्छा है॥

खोके आज़ादी को आराम न हमको मतलूब।
इससे तो सर ही ये उड़जाय शिताब अच्छा है॥

बढ़ते "शैलेन्द्र" चलो दूर अभी मंज़िल है।
जानते हो कि मुसाफिर को न ख्वाब अच्छा है॥

श्री चतुर्वेदी शैलेन्द्र जी गायन भूषण द्वारा रचित तथा लहरी प्रेस, काशी में मुद्रित, "स्वराज्य-गीतांजलि (दूसरा भाग)" नामक पुस्तक से।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य।

अवाप्ति संख्या 807।

नौजवानों को उपदेश

डंका बजादो दोस्तो गान्धी के नामका ।
जीवन बनालो अपना कहीं अबतो कामका ।।

अय नौजवानों आओ तो बलिदान के लिये ।
सीना सिपर बनो कि है यह वक्त काम का ।।

पुखा ख्याल अपने मिशन के लिये रहो ।
शिकवा न करो दुश्मनों की अक्ले खाम का ।।

तुम जान देदो देश की रक्षा के वास्ते ।
अब नाम मिटनेवाला है रामो रहीम का ।।

ढेले तुम्हें जो मारें उन्हें फल दिया करो ।
अपना बनाओ तर्ज असल नखले आमका ।।

तामील तुम किया करो राष्ट्रीय समाज की ।
खादिम तुम्हें बनाया है हर खासो आमका ।।

बत्तीस करोड़ हिन्दिओ बतलाओ तो सही ।
फिर क्या बनेगा इतने बड़े अज दहाम का ।।

जिसकी फना के डर से दुबकते हो फिर रहे ।
ये जिस्म क्या है एक खिलोना है चामका ।।

श्री चतुर्वेदी शैलेन्द्र जी गायन भूषण द्वारा रचित तथा लहरी प्रेस काशी में मुद्रित, "स्वराज्य-गीतांजलि (दूसरा भाग)" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 807 ।

बन्देमातरम्

छीन सकती है नहीं सरकार वन्देमातरम ।
हम गरीबों के गले का हार वन्देमातरम् ॥

जेल में चक्की घसीटें भूख से हों मर रहे ।
उस समय भी कह रहे बेजार वन्देमातरम् ॥

सर चढ़ो के सर में चक्कर उस समय आता जरूर ।
कान में पहुंची जहां झनकार वन्देमातरम् ॥

चारपाई पर पड़ा हो कह रहा जल्लाद से ।
भोक दे सीने में वह तलवार वन्देमातरम् ॥

डाक्टरों ने नबज देखी सिर हिला कर कह दिया ।
हो गया उसको तो है आजार वन्देमातरम् ॥

जालिमों का जुल्म भी काफूर से उड़ जायगा ।
फैसला होगा सरे दरबार वन्देमातरम् ॥

रघुवर दयाल विद्यार्थी द्वारा संग्रहीत तथा आदर्श प्रेस, आगरा से मुद्रित, "सत्याग्रह का बिगुल" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 757—759 ।

वीर बन कर के झंडा उठा लो,
लाज भारत की मिल कर बचा लो ।

वीर बन करके झंडा उठा लो, लाज भारत की मिल कर बचा लो ।
जेल जाने से हम न डरेंगे, अपने हक के लिए हम मरेंगे ॥

प्राण अपने निछावर करेंगे, अपना वार तुम हम पर आजमालो ।
हम अहिंसा अत धारण करेंगे, क्रोध को अपने दिल से हरेंगे ॥

शान्ति से प्रचार हम करेंगे, चाहे जितना हमें तुम सतालो ।
भारत माता के प्यारे दुलारो, वस्त्र तन से विदेशी उतारो ॥

बिगड़ी हाल तुम अपनी सुधारो, तुम जरा सोचो ए देश वालो ।
रोज पकड़े वह नेता हमारे, चाहे जितने करें जुल्म भारो ॥

फिर भी बनते हैं हाकिम हमारे, अपने जुल्मों का कर खातमा लो ।
चन्द्र अब तो गुलामी को छोड़ो जेल जाने से तुम मुंह न मोड़ो ॥

देश आजाद तुम करके छोड़ो, अब आजाद हो हिन्द वालो ।

रघुबर दयाल विद्यार्थी द्वारा संग्रहीत तथा आदर्श प्रेस, आगरा से मुद्रित, "सत्याग्रह का बिगुल" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 757—759 ।

बन्देमातरम्

कौम के खादिम की है, जागीर बन्देमातरम् ।
है वतन के वास्ते, अक्सीर बन्देमातरम् ॥

जालिमों को है उधर, बन्दूक पर अपनी गरूर ।
है इधर हम बेकसों का, तीर बन्देमातरम् ॥

कत्ल की हमको न दें, धमकी हमारे सब्र से ।
तेग पर हो जायगा, तहरीर बन्देमातरम् ॥

किस तरह भूलूं इसे मैं, जबकि किस्मत में मेरी ।
लिख चुका है राकिमें, तहरीर बन्देमातरम् ॥

फिक्र क्या जल्लाद ने गर, कत्ल पर बांधी कमर ।
रोक देगा दूर से, शमशीर बन्देमातरम् ॥

जुल्म से गर कर दिया, खामोश मुझ को देखना ।
बोल उट्ठेगी मेरी, तस्वीर बन्देमातरम् ॥

सर जमीं इंगलैण्ड की, हिल जायगी दो रोज में ।
गर दिखायेगी कभी, तासीर बन्देमातरम् ॥

सन्तरी भी मुजतरिब थे, जब कि हर झंकार पर ।
बोलती थी जेल में, जंजीर बन्देमातरम् ॥

हुलास वर्मा "प्रेमी" द्वारा संपादित तथा भास्कर प्रेस, देहरादून से मुद्रित, "क्रान्ति गीतांजलि" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 487—489 ।

देशभक्त वीर की गर्जना

तेरी इस जुल्म की हस्ती को ऐ जालिम मिटा देंगे ।
जुबां से जो निकालेंगे वह हम करके दिखा देंगे ॥

भड़क उठ्ठेगी जब सीनए सोजां की दृढ़ आतिश ।
तो हम यक सर्द आह भरकर तुझे जालिम जला देंगे ॥

हमारे आह व नाले को तुम बे सूद मत समझो ।
जो हम रोने पै आएंगे तो एक दरया बहा देंगे ॥

हमारे सामने सख्ती है क्या इन जेलखानों की ।
वतन के वास्ते हम दारपर चढ़कर दिखा देंगे ॥

हमारे फाके मस्ती कुछ न कुछ रंग लाके छोड़ेगी ।
निशां तेरा मिटा देंगे तुझे जब बद्दुआ देंगे ॥

हजारों देश भक्त अब कौमी परवाने हैं जिन्दा में ।
हम उनके वास्ते सब माल जर अपना लुटा देंगे ॥

कुछ इस में राज था मुद्दत से जो खामोश बैठे थे ।
हम अब करने पै आये हैं तो कुछ करके दिखा देंगे ॥

अगर कुछ भेंट आजादी की देवी हमसे मांगेगी ।
समझ कर हम जहे किस्मत सब अपने सर चढ़ा देंगे ॥

नहीं मंजूर अब इज्जत हमें सरमायेदारों की ।
बनाकर शाह कृति को सिंहासन पर बिठा देंगे ॥

हुलास वर्मा "प्रेमी" द्वारा संपादित तथा भास्कर प्रेस, देहरादून से मुद्रित, "क्रान्ति गीतांजलि" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 487—489 ।

सफल जीवन

जननी जन्म भूमि वेदी पर जो सर्वस्व चढ़ाते हैं ।
धन्य धन्य जीवन है उनका, वही जन्म फल पाते हैं ।।

अत्याचार अनीति दबाते, दीन दुखी का हाथ बटाते ।
स्वतंत्रता का श्रोत बहाते, मातृ भूमि की लाज बचाते ।।

जो बन्दी जाते हैं ।

धन्य धन्य जीवन है उनका वही जन्म फल पाते हैं ।
निर्वासन है चन्दन बनसा, कटि कोपीन विचित्र वरूण सा,

है जंजीर सुमन-बंधन सा, कारागृह है देव सदन सा,

वही स्वर्ग-सुख पाते हैं ।

धन्य धन्य जीवन है उनका वही जन्म फल पाते हैं ।

हुलास वर्मा "प्रेमी" द्वारा संपादित तथा भास्कर प्रेस, देहरादून से मुद्रित, "क्रान्ति गीतांजलि" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 487—489 ।

राष्ट्रपताका

यह राष्ट्र ध्वजा धन मेरा, जीवन बलिदान करेंगे ।
झंडा है प्राण हमारा, प्राणों से बढ़ कर है प्यारा,

तन मन धन इस पै वारा, जीवन कुरबान करेंगे ॥1॥
शूली पर उछल चढ़ेंगे, बन्धन से नहीं डरेंगे,

सब कुछ सानन्द सहेंगे, पर झंडा नहीं तजेंगे ॥2॥

आओ झंडा फहरावें, शुचि राष्ट्र भाव दर्शावें,
सत्याग्रह समर दिखावें, पर हिंसा नहीं करेंगे ॥3॥

उच्च हिमालय की चोटी पर जाकर इसे उड़ायेंगे
विश्व विजयनी राष्ट्रपताका का गौरव फहरायेंगे

सबसे ऊंची रहे न इसको नीचे कभी झुकायेंगे
समरांगण में लाललाडिले लाखों बलि बलि जायेंगे

गूंजे स्वर संसार-सिन्धु में स्वतन्त्रता का नमोनमो
राष्ट्र-गगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमोनमो

हुलास वर्मा "प्रेमी" द्वारा संपादित तथा भास्कर प्रेस, देहरादून से मुद्रित, "क्रांति गीतांजलि" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 487—489 ।

बलिदान

चाहती है माता बलिदान, जवानों उठो हिन्दू संतान ॥

चाहती है माता ०

हंसते हुये फूल से आकर, शीश झुका दो मां के पग पर ।
कटता हो कट जाने दो सर, तनिक न हो हैरान ॥

जवानो उठो ०

सोनेवालो ! उठो कड़क कर, जागे हुये बढ़ो वेदी पर ।
बूढ़ा हो नारी हो या नर, सबको है आह्वान ॥

जवानों उठो ०

हो चमार भंगी या पासी विप्र पुजारी या सन्यासी ।
धनी दरिद्री हो उपवासी, सबका भाग समान ॥

जवानों उठो ०

उठो अपढ़ मूरख विद्वानों, हिन्दू मुस्लिम और किरस्तानों ।
जैन, पारसी, सिक्ख, महानों, प्यारी मां के प्रान ॥

जवानों उठो ०

ओ छात्रो ! भावी अधिकारी, उठो-2 निद्रित व्यापारी ।
उठो मजूरो दीन भिखारी, दुखी दरिद्र किसान ॥

जवानों उठो ०

हो गुलाम कैसा ही दागी, वर्तमान शासन अनुरागी ।
नरम गरम वैरागी त्यागी, उठो सभी मतिमान ॥

जवानों उठो ०

स्वार्थ और मतभेद मिटाओ, बैर फूट को दूर भगाओ ।
फहराओ तुम आज हिन्द में, इक जातीय निशान ॥

जवानों उठो ०

फांसी चढ़ो जेल में जाओ, भयवस कभी न देश भुलाओ ।
हथकड़ियों पर मिल कर गाओ, स्वतन्त्रता का गान ।।

जवानों उठो०

पूरन करो यज्ञ माता का, ज्यो प्रताप अभिमानी बांका ।
ज्यों शिव सूर्य हिन्द गुरुता का, जैसे तिलक महान ।।

जवानों उठो०

मीठी गगन झंकार सुखारी गांधी वीणा की अतिप्यारी ।
"माधव" मस्त उठो दिखलादो, कालों में है जान ।।

जवानों उठो०

हुलास वर्मा "प्रेमी" द्वारा संपादित तथा भास्कर प्रेस, देहरादून से मुद्रित, "क्रांति गीतांजलि" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 487--489 ।

हुब्बे वतन

हर एक दिल में खुदाया जिस घड़ी दर्दे-वतन होगा ।
हमीं फिर बागवां होंगे हमारा ही चमन होगा ।।

न यां लन्दन न अमरीका न होंगी चीन की चीजें ।
यहीं की सारी चीजें हमको करना जेबतन होगा ।।

यह कह दो रिस्तेदारों से कि लाशा तब उठावेंगे ।
स्वदेशी जिस्म पर जब यह स्वदेशी ही कफन होगा ।।

तो फिर हो जायगा इक साल में हमको स्वराज्य हासिल ।
कि दावेदार आजादी का हर तारे कफन होगा ।।

तिजारत की हिना जब हाथ में होगी हमारे फिर ।
हो हर एक कारखाना यां का मशहूरे जमन होगा ।।

कभी फिर हिन्द का नामे मुकद्दस चर्ख पर होगा ।
कभी ढाके की मलमल फिर से मशहूरे जमन होगा ।।

कभी तो हिन्द वालों की जहां में कद्र फिर होगी ।
यहां का इक पड़ा ढेला कभी लाले यमन होगा ।।

यह सब फरहत तभी होगी कि जब आंखों से देखेंगे ।
कि बाहम इत्तफाको मेल और हुब्बे वतन होगा ।।

—गंगाधरनाथ

श्री सिद्धगोपाल शुक्ल द्वारा संग्रहीत तथा रामा प्रेस, कानपुर से मुद्रित, "खूनी गजलें" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 477 ।

हमारा उद्देश्य

करेंगे देश की सेवा यही दिल में समाई है ।
भलाई देश की ही में हमारी भी भलाई है ॥

यतन से देश को उन्नत करेंगे भाई सब मिल कर ।
फतह होगी हमें इसमें वही देता दिखाई है ॥

मुसलमां, आर्य, जैनी, पारसी, बुध, सिक्ख, ईसाई ।
हुआ जो हिन्द में पैदा, हमारा देश भाई है ॥

वतन है हिन्द हम सबका, भला इसका ही चाहेंगे ।
सभी ने मुल्की खिदमत के लिए यह देह पाई है ॥

मुहब्बत यह न टूटेगी, न हम में फूट फूटेगी ।
दिखा देंगे यह दुनियां को न हम में अब जुदाई है ॥

हमारा ध्येय निर्मल है हमारा लक्ष्य है निश्चल ।
स्वदेशी देश-हित व्रत की लगन हमने लगाई है ॥

करेंगे प्राप्त अपने स्वत्व विघ्नों से न बिचलेंगे ।
युगों के बाद फिर स्वाधीनता मिलने को आई है ॥

गहनें अस्त्र सत्याग्रह निरंकुशता नशाने को ।
सचाई है जहां, ईश्वर वहीं होता सहाई है ॥

श्री सिद्धगोपाल शुक्ल द्वारा संग्रहीत तथा रामा प्रेस, कानपुर से मद्रित, "खूनी गजलें" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 477 ।

भगत सिंह किधर गया

मुद्दत से एक नाम जो सबकी जुबां पे था ।
जिसके लिये कि तीर "उर्दू" की कमां पै था ॥
कब्जा न जिसका खुद भी अपने जिस्मों जां पै था ।
मिटना जिसे जरूर ही हिन्दोंस्तां पै था ॥
आखिर वो वीर-वीर की करतूत कर गया ।
आया था जिसके लिये वह करके गुजर गया ॥

(2)

कानून के उन्हीं के वह मुजरिम जरूर था ।
तर्जे अमल अहिंसा से गो उसका दूर था ॥
यह भी सही कि नादां जवानी में चूर था ।
और मेटने वाला भी कोई भी शरूर था ॥
लेकिन यही न कहना कि वह क्यों मर गया ।
आया था जिसके लिये वह करके गुजर गया ॥

(3)

फांसी का हुक्म भी था, वो कैदी असीर था ।
इस पर वजन का बढ़ना बहुत बे नजीर था ॥
बलिदान त्याग कि वो मुजरिम जरूर था ।
कुछ मांगता किसी से न ऐसा फकीर था ॥
सौदा था जिसका "सर" पै उसी पर तो सर गया ।
आया था जिसके लिये वह करके गुजर गया ॥

(4)

इन तीनों में से एक भी बाकी नहीं रहा ।
कैसे कहें वतन के लिये किसने क्या कहा ॥
भारत तमाम चीख के बिलखा के रो रहा ।
प्यारा भगत हमारा दुलारा किधर गया ॥
आया था जिसके लिये वह करके गुजर गया ॥

(5)

कल तक जो सूरतें थीं गिरफ्तार जेल में ।
तकलीफ थी जरूर उन्हें इस झमेल में ॥
पूरे हुए और पास हुए अपने खेल में ।
बतलाये कोई आज हैं वह किसकी जेल में ॥
दोनों के साथ शेर "भगत" कूच कर गया ।
आया था जिसके लिये वह करके गुजर गया ॥

(6)

कुछ भी हो अब फिजूल है अपने लिये सभी ।
सूरत तो एकतरफ रही उनकी धूल भी ॥
नाहक न खून इनका समझ बैठना कभी ।
लायेगी रंग शहादत इनकी अभी-अभी ॥
मरना है उसका जीना, जो कुछ करके मर गया ।
आया था जिसके लिये वह करके गुजर गया ॥

श्री एन० एल० ए० "अमलद" द्वारा संग्रहीत तथा रंगमंच प्रेस किंग्स सर्किल माटुंगा से मुद्रित ।

"लाहौर की फांसी" उर्फ भगतसिंह का तराना" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 531 ।

कौमी दर्द का बीमार

मुझ को कौमी दर्द का बीमार रहने दीजिये ।
मुल्क की खातिर मुझ बेजार रहने दीजिये ॥

एहरिफों खूब ही खुदगर्ज चालें चल चुके ।
अब यह टेढ़ी आपकी रफ्तार रहने दीजिये ॥

मैं खिताब को करूं क्या मुझ को तो अब मेहरबां ।
मुल्क का अदना सा खिदमतगार रहने दीजिये ॥

वक्त जाया आप क्यों करते हैं अपना ऐ हजूर ।
गैर की फिक्रों को अब सरकार रहने दीजिये ॥

मरतबाल इकबाल की ख्वाहिश नहीं गुलजार की ।
उसको अपने आप का मुख्तार रहने दीजिये ॥

--एक दुखित आत्मा

श्री एन० एल० ए० "बमलट" द्वारा संग्रहीत तथा रंगमंच प्रेस किंग्स सर्किल मांटुगा से मुद्रित ।
"लाहौर की फांसी उर्फ भगतसिंह का तराना" नामक पुस्तक से ।
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।
अवाप्ति संख्या 531 ।

सत्याग्रह का बिगुल

बिगुल बजा है सत्याग्रह रण थल में अड़ जाना होगा ।
हसते बलि वेदी पर गौरव से चढ़ जाना होगा ।।

जीवन की है ज्योति अनुपम इसको आज बुझाना होगा ।
रणचण्डी को युद्ध भूमि में भर कर तुम्हें रिझाना होगा ।।

ऐ जीवन मद के मतवाले नींद त्याग कर शस्त्र उठाले ।
उठ पड़ ऐ मद होश युद्ध में सोना और सुलाना होगा ।।

शत्रु कोप की प्रबल प्रचंड ज्वाल में आहुति देनी है ।
उफ़ तक मुंह से बिना निकाले हंस हंस कर जल जाना होगा ।।

मातृभूमि के दर्द भरे करुणा क्रंदन को सुन कर के ।
रक्त ऋणी सैनिकगण मां आज स्वतन्त्र कराना होगा ।।

धर्म अहिंसा पर दृढ़ रह कर जीवन की बलि दे दो वीर ।
जती जतीन दास सम भूखों तड़प तड़प मर जाना होगा ।।

प्राणों की बाज़ी का सौदा प्रेम से करलो ऐ वीरो ।
जीवन और मृत्यु का पल पल पर इस खेल खिलाना होगा ।।

प्रेम धर्म के प्रेम विश्व में सदा प्रेम जय पाता है ।
इसी तत्व को सन्मुख रख कर प्रेम भाव दरसाना होगा ।।

सोमेन्द्र मुकर्जी देहरादून द्वारा सम्पादित तथा शर्मा मशीन प्रिंटिंग प्रेस, मुरादाबाद से मुद्रित ।
"क्रांति पुष्पांजलि" नामक पुस्तक से ।
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।
अवाप्ति संख्या 524 ।

मोहन और मोहन दास

उठी लेखनी आज फिर लेकर यह अभिमान ।
मोहन मोहन दास का करना है गुण गान ।।

इसी देश की मेटने आये दोनों त्रास ।
वह केवल मोहन रहे यह हैं मोहनदास ।।

वह विख्यात बृज बिहारी थे तो यह गुजरात बिहारी हैं ।
वह चक्र सुदर्शन धारी थे, तो यह भी तकलीधारी हैं ।

वह काली कमली वाले थे यह खादी मय दिखलाते हैं ।
वह वंशी मधुर बजाते थे, यह चरखा खूब चलाते हैं ।

वह प्रगटे कारागार में थे, यह कारागार के वासी हैं ।
वह सूत्र महाभारत के थे यह नेता सत्याग्रह के हैं ।

वह दूध गाय का पीते थे, इनको बकरी का भाया है ।
गोवरधन उधर उठाया था, भारत को इधर जगाया है ।

वह मथुरा से द्वारिका आये थे, यह अफ्रीका रह आये हैं ।
वह माखन चोर कहाते हैं, यह नमक चोर कहलाये हैं ।

उनका भी भक्त जमाना था, इनका भी भक्त जमाना है ।
उन मोहन का बरसाना था इन मोहन का धरसाना है ।

तब भी यह भारत निर्भय था अब भी यह भारत निर्भय है ।
इस कारण राधेश्याम कहो, सब मिल कर मोहनदास की जै ।

सोमेन्द्र मुकर्जी देहरादून द्वारा सम्पादित तथा शर्मा मशीन प्रिंटिंग प्रेस, मुरादाबाद से मुद्रित ।
"क्रांति पुष्पांजलि" नामक पुस्तक से ।
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।
अवाप्ति संख्या 524 ।

हिन्दू-मुस्लिम एकता

क्या हुआ गर मर गये अपने वतन के वास्ते ?
बुलबुलें कुर्बान होती है चमन के वास्ते ।

तर्स आता है तुम्हारे हाल पै ऐ हिन्दियो !
गैर के मोहताज हो अपने कफन के वास्ते ।

देखते हैं आज जिसको शाद है, आजाद है;
क्या तुम्हीं पैदा हुए रंजोअलम के वास्ते ?

दर्द से अब बिलबिलाने का जमाना हो चुका।
फिक्र करनी चाहिये मर्जे कुहन के वास्ते ।

हिन्दुओं को चाहिये अब कस्द काबे का करें ।
और फिर मुसलिम बढ़ें गंगोजमन के वास्ते ।

सत्येन्द्र नाथ द्वारा रचित तथा फाइन आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स, अनारकली, लाहौर से मुद्रित। "देशभक्तों के गीत" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति सख्या 385—386 ।

फांसी के तख्ते पर देशभक्तों के मनोभाव

कहते हैं अलविदा अब हम इस जहान को ।
जाकर खुदा के घर फिर आया न जायगा ।।

अहले वतन अगरचे हमें भूल जायेंगे ।
अहले वतन को हमसे भुलाया न जायेगा ।।

जुल्मों सितम से तंग न आयेंगे हम कभी ।
हमसे सरे नियाज झुकाया न जायगा ।।

इस से ज्यादा और सितम क्या करेंगे वह ।
इस से ज्यादा उन से सताया न जायगा ।।

हम जिन्दगी से रूठ कर बठे हैं जेल में ।
अब जिन्दगी हमको मनाया न जायगा ।।

यह सच है मौत हमको मिटा देगी दुहरे से ।
लेकिन हमारा नाम मिटाया न जायगा ।।

हमने लगाई आग है जो इन्कलाब की ।
इस आग को किसी से बुझाया न जायेगा ।।

यारो है अब भी वक्त हमें देख भाल लो ।
फिर कुछ पता हमारा लगाया न जायगा ।।

आजाद हम कर न सके अपने मुल्क को ।
खंजर वह मुंह खुदा को दिखाया न जायगा ।।

मोहर चन्द (मस्त) संग्रहीत तथा द्वादश श्रेणी प्रेस, दिल्ली से मुद्रित, "शहीदों का सन्देश" अर्थात् "गांधी का जंग" नामक पुस्तक से ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 763, 764, 765 ।

झंडा महिमा

जनता का चित्त चुराय लिया, राष्ट्रीय तिरंगे झंडे ने ।
निज सैनिक दल हरषाय दिया राष्ट्रीय तिरंगे झंडे ने ।

भारत अज्ञान भगाया, फिर संघ शक्ति सिखलाया,
आपस की फूट मिटाय दिया राष्ट्रीय तिरंगे झंडे ने ।

जो इसके नीचे आया, तो बदली उसकी काया,
सांसारिक मोह हटाय दिया, राष्ट्रीय तिरंगे झंडे ने ।

यह सहन शक्ति सिखलाता, कायर को बीर बनाता,
हिय स्वाभिमान उपजाय दिया, राष्ट्रीय तिरंगे झंडे ने ।

मत समझो यह निर्बल है, साहस मय अटल प्रबल है,
अरि दल का मान घटाय दिया, राष्ट्रीय तिरंगे झंडे ने ।

यह युवक वृद्ध अरु बालक अबलाओं का प्रतिपालक,
"जीवन" शुभ मार्ग बताय दिया, राष्ट्रीय तिरंगे झंडे ने ।

पं० गोकर्ण नाथ शुक्ल द्वारा रचित तथा नेशनल प्रेस, कानपुर से मुद्रित, "सत्याग्रह की लहर" नामक पुस्तक में ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य ।

अवाप्ति संख्या 752—754 ।

प्रभात प्रिंटिंग रोड माया पुरी 1 डी आफ ए/85—पृ—1,4000 7-8-85